गुलबिया

गुलबिया

डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका संसद
सराय भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.९६१४४६.४.७

प्रथम संस्करण
२००८

द्वितीय संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखिकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

आवरण-चित्र
www.wallpaperflare.com से साभार

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ पचास रूपये मात्र

Gulabiya (Angika Novel)
By Dr.Abha Purbey Rs.150/-

गुरूवर

डॉ. शरतचंद

कें

सादर आरो श्रद्धा साथें

समर्पित

—आभा

पहलों संस्करण सें

दू बात

'गुलबिया' रों धारावाहिक प्रकाशन भागलपुर सें प्रकाशित नई बात में होलो छेलै। अभी एकरों अंतिम दू-तीन खंड छपवो बाकिये छेलै कि हमरों व्यस्तता के कारणें, ऊ खंड नहिये छपे पारलै।

दुर्भाग्य कि जीवन में पी-एच.डी., नौकरी लैकें हेनों भाग-दौड़ ऐलै कि छपवाय दिश फेनू ध्याने नै गेलै।

हों, एतना होलै कि भागलपुर आकाशवाणी सें एकरों रेडियो नाटक 'गुलबिया' नामो सें जरूर प्रसारित होलै। ई प्रसारण नें एक दाफी फेनू हमरा 'गुलबिया' के प्रति सतर्क करलकै।

ओकरे परिणाम छेकै कि प्रकाशन लेली पड़लों 'गुलबिया' प्रकाशित होय रहलों छै। केन्हों बनलो छै ई उपन्यास—आपनें सिनी के प्रतिक्रिया के प्रतीक्षा रहतै।

—आभा पूर्वे

मकर संक्रान्ति
१५ जनवरी २००८

शरतचंद पथ
मशाकचक, भागलपुर
८१२००१ बिहार

दोसरों संस्करण लेली

'गुलबिया' के दोसरों संस्करण लेली विशेष की लिखना छै। जखनी हम्में गुलबिया के कथा उपन्यास में बांधी रहलों छेलियै, तखनी हमरा की मालूम छेलै कि एक दिन यही आकाशवाणी भागलपुर सें भी नाटक रूपों में प्रसारित होतै। ओकरों बाद तें गुलबिया के लोकप्रियता आरो बढ़ी गेलै। ई उपन्यास स्त्री-विमर्ष के केन्द्रों में रहलै, ई सब बात हमरा बार-बार एकरो लें उत्साहित करतें रहलै कि एकरों दोसरों संस्करण आना चाही, होन्हौ कें आबें हमरो लुग ई उपन्यास के एकाध प्रति ही बचलों होलों छै। कोय आपनों आदमी माँगै छै, तें नै दिए पारै छी। आबें ई संकट नै रहतै। सच कहै छियौं, गुलबिया के दोसरों संस्करण सें हमरौ कम खुशी नै होय रहलों छै। हुएँ सकै छै कि एकरों हिन्दियो संस्करण आवें।

—आभा पूर्वे

१ मई २०२३

गुलबिया

गर्मी आवी गेलो॑ छै, ऐन्हो॑-तैन्हो॑ नै। तभियो हेनो॑ नै छै कि धूपो॑ में बैठला सें चमड़ी उधड़ी के॑ रही जाय। मजदूर सिनी खेतो॑ पर काम करै छै, ई बात अलग छै कि ओकरो॑ सिनी के देह घाम सें घमजोर होय जाय छै। वहीं मजदूर सिनी सें थोड़ो॑ हटी के॑ गुलबियो हाथो॑ में खुरपी लै के॑ माटी कोड़ी रहलो॑ छै। माटी कोड़ाय रहलो॑ छै कि नै कोड़ाय रहलो॑ छै, गुलबिया के॑ ई बातो॑ के तनियो होश नै छै।

गुलबिया खेतो॑ में काम ते॑ करी रहलो॑ छै, मतरकि मन में एकटा अजीब चिन्ता भी होय रहलो॑ छै, कैन्हें कि अभी तक बलेसर नै ऐलो॑ छै। बलेसर ई बात के॑ अच्छा सें जानै छै कि हम्में ओकरो॑ ई खेतो॑ में इंतजार करी रहलो॑ छी। आरो बलेसर के॑ ते॑ आने छै । कैन्हें कि कल्हे बलेसर बोली के॑ गेलो॑ छै कि ऊ हमरा सें मिलै वास्तें यहाँ जरूरे ऐतै। मतरकि जेना-जेना सुरुज के किरिण आपना आप के॑ समेटी रहलो॑ छै, गुलबिया के मनो॑ में एगो आशंका उठी रहलो॑ छै। रही-रही गुलबिया केरो॑ हाथ कली जाय छै, जेना कि ओकरो॑ हाथो॑ में कोय दम नै रहे॑। कभी-कभी ते॑ ओकरो॑ देहो सिहरी जाय छै।

गुलबिया रो॑ मो॑न आबे॑ कामो॑ में नै लगी रहलो॑ छै, रही-रही ओकरो॑ मनो॑ में एक्केटा भाव आवै छै कि आखिर बलेसर आभी तांय कैन्हें नी ऐलो॑ छै। बलेसर के मालिक जानी-बुझी के॑ कहीं ओकरा कोय दूसरो॑ काम में ते॑ नै भिड़ाय देले॑ छै। हुवे॑ सकै छै कि मालिक हमरो॑ आरो बलेसर के बीच के परेम के॑ जानी गेलो॑ रहै। कैन्हें

कि ऊ दिन मालिक पटेल सिंह हमरा बड़ी ध्यान सें देखी रहलोॅ छेलै। ओकरोॅ ई रङ देखै के मतलब ऊ समय हमरा समझ में नै ऐलोॅ छेलै। हुवेॅ सकै छै कि ई खेत के मजदूर सिनी मालिक सें कुच्छु बोली देलेॅ रहै, कैन्हें कि आदमी आरो साँप के पलटतें देर थोड़े लगै छै। अभी मुँहोॅ पर मीट्ठोॅ-मीट्ठोॅ बोलतै आरो पीछू सें शिकायत करतै ।

मन में उठी रहलोॅ शंका के कोय मतलब नै निकली रहलोॅ छेलै। जब तांय बलेसर आपने आवी केॅ कोय बात नै बोलै छै, तब तक कुच्छु नै सोचलोॅ जावेॅ सकै छै। बलेसर एत्तेॅ देरी कभियो नै करै छै। जबेॅ बोली केॅ जाय छेलै, समय रहतें आवी जाय छेलै। आय तेॅ ऐन्होॅ देर करी रहलोॅ छै कि मनोॅ में अजबे रङ के निराशा भरी जाय छै। तभियो गुलबिया बलेसर केॅ याद करी-करी केॅ आपनोॅ समय बिताय रहलोॅ छै। समय कि बिताय रहलोॅ छै, खून जराय रहलोॅ छै। आपनोॅ मन के विश्वास केॅ आरो बढ़ाय रहलोॅ छै कि जब तक बलेसर नै आवी जाय छै, ऊ ई खेतोॅ में काम करथैं रहतै। चाहे रातो कैन्हें नी होय जाय। आय ऊ घोॅर जैतै तेॅ बलेसर साथें जैतै। एकरोॅ वास्तें जत्तेॅ देर ठहरै लेॅ पड़तै, ऊ ठहरतै।

धीरें-धीरें कुछ मजदूर सिनी आपनोॅ समान समेटी केॅ जाय लेॅ तैयार होय जाय छै। मतरकि गुलबिया आपने चिन्ता में एत्तेॅ डूबलोॅ होलोॅ छै कि ओकरा आपनोॅ अगल-बगल होय वाला कोनो बात के खयाल नै छै कि के ओकरा देखी रहलोॅ छै आरो के की ओकरोॅ बारे में की बोली रहलोॅ छै। ई बात के ध्यान गुलबिया केॅ रहै, चाहेॅ नै रहेॅ, मतरकि ओकरोॅ सुख-दुख के सखी पारो केॅ ई बात के खूब ख्याल छै। पारो जेन्हैं मजदूर सिनी के आँखी में अचरज के चढ़ते-उतरतें भाव केॅ देखलकै, तैन्हें बात केॅ उड़ाय वास्तें मजदूर केॅ टोकी देलकै।

‘‘की देखी रहलोॅ छोॅ तों सिनी गुलबिया केॅ। रोजे तेॅ आवै छै ई खेतोॅ पर काम करै लेली। रोजे तेॅ देखवे-सुनवे करै छोॅ, आय कोय नया बात होय गेलोॅ छै, जे तोरा सिनी गुलबिया केॅ ऐन्होॅ करी केॅ देखी रहलोॅ छोॅ। जा, जा आपनोॅ घर। बाजार दिस’’ ई बात

कहतें-कहतें पारो के चेहरा पर एक गुस्सा के भाव उठी गेलोॅ छेलै।

आबैं है बात कि कोय जर-जनानी मर-मरदाना पर गोस्साय केॅ बोलै आरो मर-मरदाना सुनी केॅ चुप रही जाय। ई पर वही मरदाना सुनी केॅ रही जैतै, जे जर-जनानी सें डरै हुवै या जर-जनानी के बातोॅ के कोय माने नै लगातेॅ हुवै। दू-एक मजदूर जेकरा ई सब सें कोय मतलब नै छेलै, ऊ तेॅ आपनोॅ समान उठाय केॅ चललोॅ गेलै, मतरकि एगो मजदूर जेकरोॅ नाम सोमन छेलै आरो गुलबिया केॅ खूब बढ़िया सें जानै छेलै, हट्ठा-कट्ठा बदनवाला, समता रंग पर गोल-गोल बड़ोॅ-बड़ोॅ आंख सें गुर्राय केॅ पारो केॅ देखतें हुवेॅ आपनोॅ अंगुली मूँछ पर ताव देतें थोड़ा जोर सें बोललै,

''कैन्हें, हमरा सिनी केॅ भगवानोॅ रोॅ देलोॅ आंख सें देखै के हक नै बनै छै ? आरो फिरू हम्में सिनी कोय गंदा बात तेॅ नै बोललेॅ छियै। खाली आँखोॅ सें तनी टा गुलबिया केॅ ताकलेॅ छेलियै। हेकरा में तोरा एत्तेॅ गोस्सा कथी लेॅ लगी गेलौ। मर-मरदाना के तेॅ कामे छै जर-जनानी केॅ देखना। साथे काम करतै तेॅ देखना-सुनना तेॅ होवे करतै। कहिया तक आँख मुनी केॅ रहतै। तोरोॅ सखी पानी एत्तेॅ कैन्हें पैलेॅ छौ। केकरो भी नजर पड़ी जैतै। फेनु गुलबिया कहिया केरोॅ ठकुराइन, कि आम आदमी आँखो उठाय केॅ नै देखेॅ पारेॅ।'' एतना कही केॅ सोमन चुपचाप उठी केॅ चल्लोॅ नै जैतियै, जे आय पारो सें सब सुनी लेतियै, जे सोमन आपनोॅ जिनगी में आपनोॅ मालिको सें नै सुनलेॅ होतियै।

पारो केॅ सोमन सें जे जवाब मिललोॅ छेलै, वै सें ओकरोॅ मन झनझनाय उठलै। मतरकि पारो सोचै छै—करलो की जाय। आखिर ई मजदूर सिनी सें लड़ी केॅ की मिलतै। फिरू तेॅ यहेॅ खेतोॅ में काम करना छै ओकरा आरो गुलबिया केॅ।

पारो केॅ आबेॅ गुलबिया पर बहुत गुस्सा आवी रहलोॅ छेलै । है गुलबिया के ॅ की होय गेलो ॅ छै। ऊ गोस्सा सें गुलबिया दिश ताकलकै। गुलबिया आभियो खुरपी हाथ में लै केॅ वैन्हें बैठली होली छै।

ओकरा आपनों देहो के ख्याल नै छै कि साड़ी के अँचरा गिरी गेलों छै। काम करतें-करतें समूचा बाल हिन्नें-हुन्नें बिखरी गेलों छै । ओकरों ई हालत देखी पारो के सब गोस्सा ठंडाय गेलै।

अनचोके पारो कें फेनू सोमन के बात के ख्याल आवी जाय छै, 'तोरों सखी हेनों पानी कैन्हें पैलें छौ। केकरो नजर पड़ी जैतै' आरो पारो के अनचोके नजर आपनों सखी गुलबिया पर पड़ी जाय छै। एकदम चकोर चनरमा कें देखै छै। आरो चकोर चनरमा कें की देखतै होतै, जेना कि गुलबिया। पारो गौर सें गुलबिया के मुँह देखै छै । सच्चे, आय गुलबिया बड़ी सुन्दर लगी रहलों छेलै। गुलाबी रंग के साड़ी पर बुलु रंग के चोली में आय गुलबिया सच्चे में सभै के ध्यान खींचै छेलै। लगै छै, आय गुलाबो मिलै वास्तें एत्ता सजी-धजी के खेतों में काम करैलें ऐलों छै।

गुलबिया नहियों सजै छै, तहियो एत्ते सुन्दर लगै छै। सहिये में गुलबिया सुन्दरता के एक प्रतीक छेकै। दूधो रंग, सफेद रंग भरलों-भरलों देहों पर गोल-गोल भरलों-भरलों चेहरा। आंख बड़ों-बड़ों, नाक एकदम खड़ा नै तें खड़े छै। आबें ई रंग, सुन्दरता पर हम्में रीझें सकै छियै तें कोय मर-मरदाना आपना सें बाहर होय जाय तें आचरज की। हेकरा में हैरानी के कोय बात नै छै।

मतरकि पारो कें आबें गुलबिया पर बहुत गुस्सा आवी रहलों छेलै। ई गुलबिया कें की होय गेलों छै कि कोय बात के होश नै छै, आरो नै कोय बात के चिन्ता। नै घर जाय के ठिकाना छै, नै कोय सर-समान के चिन्ता, एकरों ई हालत होय गेलों छै कि छोड़ियो कें जाना मुश्किले होय छै। पारो गुलबिया के ई हालत देखी कें ओकरा होश में लाबै लें खूब जोर सें झकझोरै छै,

''ऐ गुलाबो, गुलाबो........।'' मतरकि गुलाबो कोय जवाब नै दै छै। है बात नै छेलै कि गुलाबो बेहोश रहै, मतरकि होशो में बेहोशे रहै। पारो ओकरा एक बार फिरू झकझोरलकै, ''गुलाबो।''

गुलबिया के बदन में कोय हरकत नै होय छै। हेनों लगै छै,

जेना सौंसे बदन एकटा पत्थर के मूरत रहै।

पारो गुलबिया के मुँह कें आपनों दोनों हथेली सें पकड़ी कें आपनों आँखी के एकदम नगीच लै आनै छै। मुँह कें आपनों दिश घुमाय कें बोललकै, "गुलाबो, गुलाबो, देखैं केत्ता सांझ घिरी गेलों छै। तों आरो हम्में ई खेतों में अकेला बची गेलों छियै। घर चल गुलाबो। कि है परेम-वरेम के चक्कर में फंसी गेलैं। कैन्हें आपनों देहों कें ई परेमों में हिलाय रहलों छैं। जानै छैं नी ई परेम सभैं करै लें जानै छै। निभायवाला एके-दू टा होय छै। वही में मरदो में।"

गुलबिया अभियो वैन्हें बैठलों छै। ओकरों चेहरा पर आभियो एगो विश्वास के चमक छै। जब पारो बार-बार झोलै छै, तबें गुलबिया कहै छै। गुलबिया पारो के हाथ पकड़ी कें बोललै, "हमरों बलेसर ऐन्हों नै छै। हमरा सें ऊ बहुत परेम करै छै।"

पारो कें गुलबिया के ई बात पर जरियो टा भरोसा नै छै। सखी के ई हालत देखी कें ओकरों मन नै मानै छै। मतरकि गुलाबो कें भी समझैलों जाय। पारो गुलबिया कें समझावै लेली कहै छै, "गुलाबो, तों है कौन रोग लगाय लेलें।"

गुलबिया के आँख में लोर डबडबाय गेलै। ऊ पारो के हाथ आपनों हाथों में लै कें बोललै, "तों नै बुझवैं पारो। हम्में तें परेम करी कें जीवन भर रोग लगाय लेलियै। तों जानै छैं राधा कें, जे किशन कें परेम करै छेलै। ऊ तनीटा प्यार पैलकै आरो जीवन भर किशन के परेम में आपनों जीवन गुजारी लेलकै। वैं की जानै छेलै कि ओकरों है परेम एक दिन ऐन्हों रूप धरतै। आय हर परेम करै वाला आदमी के मुँहों पर एके नाम आवै छै—राधे किशन।"

"गुलाबो, अब तों है परेम-तरेम के बात भुलाय कें घर दिस चल। कैन्हें कि अब सुरुज के किरिण भी आपनों मुँह छिपाय रहलों छै।" पारो गुलबिया के हाथ पकड़ी कें खीचीं कें उठाय रों कोशिश करै छै।

मतरकि गुलबिया आरो ठसकी कें भुइयां पर आपनों देह कें

गोती लै छै। ऊ पारो के हाथ सें आपनों ँ हाथ छोड़ाय कें ँ बोलें ँ लागलै, ''जाने छैं पारो, हमरो ँ बलेसर कें ँ हम्में मीरा जकां भजै छियै । ऊ हमरों ँ आँखी के सामना में मूर्ति रं हमेशा ठारों ँ रहै छै। हम्में ओकरा इहां असकल्ले छोड़ी कें ँ केना जैबै। मीरा के किशन तें ँ पत्थर के छेलै, मतरकि हमरों ँ किशन तें ँ पत्थर के नै छै। जीता-जागता एगो इंसान छै। तोंही सोचैं ऊ हमरों ँ बिना केत्ता उदास होय जैतै'' गुलबिया फेनू ऊ सड़क दिश ताकें ँ लागै छै, जौन रास्ता सें बलेसर आवै-जाय छै।

पारो गुलबिया के पागलों ँ रंग हरकत सें बहुत गुस्साय जाय छै । ऊ गुलबिया के हाथ पकड़ी कें ँ जोर सें खींचै छै, आरो ओकरा उठाय छै। पारो आपनों ँ चेहरा पर राग के भाव लानी कें ँ, मतरकि गुलाबों ँ लेली मने-मन प्रेम के भाव राखतें हुवें ँ थोड़ा समझैइयो कें ँ बोललै, ''गुलाबो, आय तों घर जैवें की नै। आबें ँ हम्में तोरों ँ है परेम के गप्प नै सुनभौ। सांझ उतरी गेलों ँ छै। आबें ँ घरों ँ में संझवाती भकभकावें ँ लगलों ँ होतै। माय हमरों ँ आसरा देखतें होतै। आय खाली हमरों ँ बात मानी ले गुलाबो। तोरा हमरे किरिया छौ।

गुलबिया रों ँ मन अखिनियो भारी छै। ऊ जाय लें ँ नै चाही रहलों ँ छै। ई बात पारो खूब जानै छै। मतरकि आबें ँ नै ठहरबै। आरो ई मतैलों ँ गुलाबो कें ँ भी नै रहै देवै। आय चाहे जे होय जाय । आबें ँ हम्में गुलबिया कें ँ ई घनों ँ जंगल रङ खेतों ँ में नै रहै देवै। जेना-जेना पारो आपनों ँ मन कें ँ कड़ा करै छै, ओकरों ँ हाथ के पकड़ गुलाबो पर जोर पकड़तें जाय छै।

मतरकि है कि, गुलाबो तें ँ शिवजी रङ जमीन में धंसलों ँ जाय रहलों ँ छै। नै, नै, आय जेना भी होतै, ऊ शिवजी रङ धंसलों ँ गुलाबो कें ँ आय यहाँ जमै लें ँ नै देतै। आबें ँ पारो गुलाबो के भर पंजा पकड़ी लै छै। आरो है की, पारो अचरज में डूबी जाय छै। गुलबिया के पत्थर रङ भारी शरीर रुइया रङ हौलों ँ होय गेलों ँ लगै छै। पारो गुलाबो के सौंसे बदन कें ँ आपनों ँ बाहीं में लै कें ँ खेत सें बाहर होय जाय छै। अब घिरलों ँ सांझ में खाली दू परछाईं जैतें ँ दिखाय दै रहलों ँ छै।

ऐन्होॅ लगै छै जेना गुलाबो बलेसर के बांही में बंधलोॅ दूर, बहुत दूर जाय रहलोॅ छै।

[२]

आय चौथोॅ दिन छै, जबेॅकि बलेसर के मालिक पटेल सिंह नें ओकरा चार बजे शाम तक नै छोड़लेॅ छै। ओकरोॅ चेहरा पर के सबटा हंसी अना बिलाय गेलोॅ छै। ऊ नै तेॅ केकरो सें बोली-बतियाय रहलोॅ छै, नै तेॅ खेते में काम करै में ओकरोॅ मन लगी रहलोॅ छै। मतरकि खड़ा-खड़ा शून्य में ताकी रहलोॅ छै।

सबसें बड़का बात ई छै कि आय बलेसर कोय मन पाट केॅ डांटी नै रहलोॅ छै। जबकि आन दिन मजदूर काम करै छेलै, ओकरो पर डांट पड़ी जाय छेलै। आय मजदूर सिनी मौका के फायदा उठैलकै । कामो बेसी नै करलकै आरो समय सें पहिलें जाय लेॅ हल्ला करेॅ लागलै। एक-दू मजदूर केॅ हल्ला करतें देखी सबनें वहेॅ रं करेॅ लागलै। आरो दिन वें चार बजे के बाद जाय छेलै, कैन्हें कि बलेसर छोड़तें-छोड़तें साढ़े चार बजाय दे देलै।

ई बात तहिया सें शुरू होलोॅ छै, जहिया सें बलेसर मजदूर सिनी के नेता बनी गेलोॅ छै। मालिक पटेल सिंह नें ओकरा खेतोॅ के मैनेजर बनाय देलेॅ छै। सब मजदूर सें काम कराय के ठीका ओकरे हाथोॅ में छै। बलेसर खूब रोब-दाब सें काम कराय छै। ऊ खूब बढ़िया सें जानै छै कि मजदूर सें केना काम लेलोॅ जाय छै। केत्तो कुछ होय जाय, ऊ मजदूर केॅ बेसी बैठे लेॅ नै दै छै। खूब मेहनत करवावै छै, यही बेरी बलेसर रोॅ मालिक पटेल सिंह ओकरा सें काम लै छै। आय भोर सें बलेसर केॅ ढेरे काम सौंपी देलेॅ छै। काम के भार देखी केॅ

बलेसर ओकरा खूब जल्दी निवटाय लें चाहै छै। निबटी जैतै तें ऊ घड़ी भर गुलबिया के मुंह देखै लें ऐतै, माफी मांगतै, सबटा शिकवा-शिकायत खतम होय जैतै। मतरकि काम छै कि निवटिये नै रहलों छै। जे मजदूर जाय के इजाजत मांगै छै, बलेसर आय ओकरा हाथो सें जाय के ईशारा करी दै छै। कुछ नै बोलै छै ऊ। ई देखी कें चमरू कें अचरज होय छै आरो दूर बैठलों टुकुर-टुकुर सब देखतें रही जाय छै। चमरू मोटों आरो करिया छेलै। उपरलका होंठ मोटा रों साथ-साथ कुछ ऊँचा भी छेलै। ओकरों मुँह देखी कें हेने बुझाय छेलै, जेना कोय बाघ रों मुँह रहै। नाको बेसी ठड़ा नै रहै। आरो नाको हमेशा ऊपर-नीचें होतें रहै छेलै। ऊ आपनों नाक कें ऊपर-नीचें कुत्ता रं करतें हुवें आपनों हाथ कें कमर के पास लै जाय छै। कमर के लुंगी में खोसलों कंघी निकाली कें बलेसर दिश ताकै छै। मतरकि बलेसर चमरू के ई व्यवहार सें एकदम अनजान छै । चमरू कंघी सें आपनो बाल झाड़ै लेली आपनों हाथ ऊपर उठाय छै। ई रोजकों बात छेकै, जबें चमरू कें खेत सें जाय के होय छै, ऊ हेने करतैं बलेसर के नगीच सें निकली जाय छै। काफी दबंग छै चमरू, शायद यही कारणें बलेसर नै टोकै छै। मतरकि आय सीधे निकलै के बदला चमरू बलेसर के नगीच आवी कें खड़ा होय जाय छै आरो पूछै छै। ओकरों बोली में साफ-साफ कटाक्ष छै। चमरू नें बलेसर सें पूछै छै, ''बलेसर, आय तोरों मुँहों के सबटा पानी कैन्हें सुखी गेलों छौं। घरों में कोय बात होय गेलों छै।''

आय बलेसर के ई हालत देखी कें सबटा मजदूर सिनी टक-टक ओकरे ताकी रहलों छै। मतरकि बलेसर के मन के भीतर होय वाला तूफान कें कोय नै समझी रहलों छै। बलेसर केकरो बात के कोय जवाब नै दै छै, मतरकि मन सें बस इतने टा कहै छै, ''तों सिनी आपनों पैसा मालिक पटेल सिंह सें लै लियौ।'' आरो झटकी कें आपनों घर दिस चललों जाय छै।

रास्ता में कत्ते लोग बलेसर कें टोकलकै, मतरकि बलेसर केकरो बात नै सुनै छै, आरो नै तें केकरो सें कुछ बोलै छै। सोहन

ओकरो॑ रूप देखी के॑ अचरज करै छै। अनदिना ओकरो॑ रूप कत्तें खिल्लो॑ रहै छेलै, आरो बलेसर काका के॑ टोकै छेलै, ''की काका, आय काकी नें बड़ी परेम सें मछरी खिलाय के॑ खेत पर भेजलौं रहौं। अभियो तांय मुँहो॑ पर वहे॑ चमक बिखरलो॑ छौं।'' आरो काका बलेसर के ई रं कुढ़ाय पर हंसी के॑ रही जाय छेलै। मतरकि आय बलेसर नें काका कें नै टोकलें छेलै, यहाँ तक कि टोकलौ पर ओकरो॑ कोय जवाब नै मिलै छै। काकी भी आचरज करी रहलो॑ छै कि आय बलेसर ओकरा सें कोय बात कैन्हें नी करलकै, आय ओकरा चिढ़ैलकै कैन्हें नी ?

हांलांकि सोहन काका के कनियैन गांव के रिश्ता सें बलेसर के काकी लगै छै, मतरकि उमर में बलेसर के बराबरे होला के कारण दोनों के बात-व्यवहार में खुलापन ज्यादा छै। काकी बलेसर के हाथ पकड़ी कें टोकलकै, जबकि अनदिना बलेसर ओकरे हाथ पकड़ी के॑ टोकै छेलै कि काकी, आय काका खूब मानलकौं की नैं ? जानै छियौं, रात कें तों आरो काका थियेटर देखै लें गेलो॑ छेलौ। बलेसर काकियो सें कुछ नै बोलै छै। आपनो॑ हाथ धीरें सें छोड़ाय के॑ ऊ आगू बढ़ी जाय छै। आय बलेसर कें नै काकी के॑ टोकना अच्छा लगी रहलो॑ छै आरो नै रास्ता-पैड़ा केकरो हाथ पकड़ना। बलेसर यहू नै चाहै छै कि कोय ओकरो॑ ई दशा देखी के॑ कुच्छु सोचै आरो बोलै।

बलेसर आपनो॑ घर पहुंची के॑ चुपचाप आपनो॑ कोठरी में आबी के॑ भुइयां पर बिछलो॑ चटाय पर बैठै छै, बैठै छै कि धम्म सें गिरी पड़ै छै। अनदिना नाँखी नै ते॑ ऊ दीया बारै छै आरो नै ऊ धुपकाठिये जलाय छै। ई बलेसर के रोजके नियम छेलै, जेन्हें ओकरों नजर धूपकाठी पर पड़ै छै, हठाते ओकरा याद आवे॑ लागै छै ऊ दिन, जो॑न दिन ऊ आपनो॑ मालिक पटेल सिंह सें यहे॑ रं देरी सें छोड़ै लेली झगड़ा करी के॑ घर चललो॑ ऐलो॑ छेलै। बलेसर के॑ ई बात एकदम अच्छा नै लगै छै कि वें सब मजदूर के गेला के बादो काम करै। ओकरो॑ मालिक पटेल सिंह बराबर बहाना बनाय के॑ ओकरा रोकी लै छै। यही वास्तें ऊ दिन बलेसर आपनो॑ खेत सें काम छोड़ी के॑ भागी गेलो॑ छेलै। मनेमन

सोची लेलें देलै कि अब ई खेतों में काम नै करतै । केत्ता समझेलें छेलै ओकरा मजदूर सिनी कि तों है काम छोड़ी कें अच्छा नै करी रहलों छैं, कैन्हें कि है काम छोड़ी कें आरो करभैं की ? मालिक जों हटाय देतौ तें आपनों पेट केना चलैभैं। मतरकि बलेसर के ऊपर ओकरों सिनी के समझावे के कोय असर नै होलों छेलै। कैन्हें कि बलेसर ई बात खूब अच्छा सें जानै छै कि दुनिया में मरद रों दुए हाथ बहुत होय छै।

वें खेत के काम छोड़ी घर पकड़ी लेलें छेलै, मजकि दोसरे दिन ओकरा मालिक खुशामद करी खेत पर लै गेलों छेलै। आरो तें आरो, ऊ दिन सें मालिक पटेल सिंह नें ओकरा खेत के मैनेजर बनाय देलें छेलै। ऊ दिन मालिकें ओकरा समझाय कें बोललें छेलै, ''तों तें जानभे करै छै कि तों ई खेत में सबसें बेसी काम करै वाला आरो ईमानदार मजदूर छैं। आरो यहू बात जानै छै कि हमरों सारा काम तोरे ऊपर छौ। आय सें हम्में तोरा ई खेत के मैनेजर बनाय दै छिहौ । आबें सें तों ई खेत के अच्छा-बुरा समझिहें।'' आरो वही दिन सें बलेसर खेत रों मैनेजर होय गेलों रहै।

यहू बात छेलै कि बलेसर मैनेजरी की, ऊ खेत के मालिकी भी नै स्वीकारतियै, स्वीकारी लेलकै तें कुच्छु बात रहै। जों खेत पर काम करबों छोड़ी देतियै तें गुलबिया के दर्शनो मुहाल। गुलबिया कें देखलें बिना बलेसर पर की बीतै छै, ई सिर्फ बलेसर जानै छै या जानै छै गुलबिया।

आरो ठीक वहें दिन कोय सपने नाँखी गुलबिया खपरैल घरों के टटिया हटाय बलेसर घरों में चललों ऐलों छेलै। बलेसर तें हतप्रभ छेलै। मिनिट भरी तांय ऊ यहें सोचतें रही गेलों छेलै कि ऊ सपना छोड़ी आरो कुच्छू नै देखी रहलों छै। सच पूछों तें गुलबिया ओकरों आंखी पर आपनों हाथ नै राखी देतियै तें बलेसर के आँख ओकरा देखतें रही जैतियै, नै जानौं कत्तें देर। पहलें गुलबिया नें सन्नाटा कें भंग करनें छेलै, आरो कहनें छेलै, ''हमरा सब मालूम होय गेलों छै, तोहें मैनेजर बाबू बनी गेलों छौ, मतरकि मैनेजर बाबू के ई हालत? चादर

अलगनी पर आरो मैनेजर बाबू चटाय पर। दूसरा गली के दुर्गन्ध आवी रहलोॅ छै आरो धूपकाठी कोन्टा में राखलोॅ छै।'' की-की नै गुलबिया बोलतें चललोॅ गेलोॅ छेलै आरो बोलथैं-बोलथैं एक धूपकाठी जलतें दिया सें सुगंधित करी मोखा में खोसी देलेॅ देलै। आरो फेरू ई कही कि 'हम्में पूबारी चाची साथें ऐलोॅ छियै, हुनी कमली माय सें मिलै लेॅ गेलोॅ छै, छुपाय केॅ ऐलोॅ छी, बस चलै छियौं' सपने नाँखी गुलबिया ऊ सांझे अलोपित होय गेलोॅ छेलै.........बलेसर के दिमाग में ऊ सब बात एक-एक करी चक्कर काटेॅ लागै छै।

भोरकोॅ लाली फूटथैं बलेसर के झपकलोॅ आँख अचकचाय केॅ खुली जाय छै। रात भर ऊ सुतेॅ नै पारलेॅ छेलै। पटेलसिंह के दबदबा के कारण मैनेजर नै, ऊ बंधुआ मजूर बनी केॅ रही गेलोॅ छेलै । ऊ मने मन सोचलेॅ छेलै। आबेॅ ऊ बंधुवा मजूर बनी केॅ नै रहतै।

बलेसर मने-मन फैसला करी लेलकै। आबेॅ ऊ खेत में काम नै करतै, कैन्हें कि पटेल सिंह के दवाब में ऊ ओझराय केॅ रही गेलोॅ छै। आरो ई फैसला करथैं ओकरोॅ चेहरा खिली गेलै। कै दिन सें माथा पर पहाड़ रङ एकठो बोझा छेले। अब माथा रुइया रङ हौलोॅ होय गेलोॅ छेलै। चार-पांच दिन सें जे घर बलेसर केॅ काटै लेॅ दौड़ै छेलै, आबेॅ वहेॅ घर चम्पा कटेली फूल नाँखी ही नै, मतरकि गुलाबो रङ नाँखी महकलोॅ-महकलोॅ लागी रहलोॅ छेलै। गुलाब के महक सें भींजलोॅ माहौल में ओकरा गुलाबो के ख्याल आवी जाय छै। ओकरोॅ हाथोॅ सें बिछैलोॅ चादर आय बड़ा सुख दै रहलोॅ छै। ऊ चादर केॅ धुवी-धुवी हेने महसूस करै छै कि गुलाबो ओकरे नगीच बैठलोॅ छै। आरो वें चादर पर ऊँगली नै फेरी रहलोॅ छै, फेरी रहलोॅ छै गुलाबो के मुलायम हाथोॅ पर, जे हाथोॅ सें गुलाबो चादर बिछाय गेलोॅ छेलै एक रात।

बाहर चिड़िया चुनमुन के चहचहैबोॅ तेज होय गेलोॅ छेलै। बलेसर बिछौना सें उठी केॅ बड़ा परेम सें चादर लपेटी केॅ उठाय दै छै । ऊ नै चाहै छै कि गुलाबो के हाथ सें बिछलोॅ चादर गंदा होय । गंदा केना नै होतै। दिन भर केत्तेॅ कोशी के बालू हवा संग उड़ी केॅ सीधे

घर ऐतें रहै छै। जरा-सा आरो बेर होना छै बस। घर तें जेना कोशी माय के बिछौना होय जाय छै। वें गंदा नै करै लें चाहै छै। हठाते ऊ एकटा पंक्ति गुनगुनाय उठै छै, ‘दास कबीर जतन सें ओढ़ी, जस की तस दीनी चदरिया।’ बलेसर ई चादर कें गंदा नै होय लें देतै। गंदा होय गेलै तें परेम की। पहलें वें चादर कें अलगनी पर रखै छै, मतरकि ओकरा वहाँ चादर रखवों अच्छा नै लगै छै। फिरू ओकरों मन में की होय छै कि ऊ चादर कें उठाय कें खूंटी पर रखी दै छै, वै खूंटी पर जेकरा पर ओकरों कमीज कुछ देर पहलें टंगलों रहै आरो अब वें उतारी कें आपनों देहों पर रखी लेलें छै आरो चुपचाप घरों सें निकली पड़लै—हवा आरो चिड़िया के चहचहैबों कें पीछू छोड़ी करी कें कोशी दिस।

घर सें बाहर निकली टटिया ओड़काय कें आय बलेसर के मन में की होय छै कि भोरकवा उगै के पहिलें करली कोशी दिस जाय छै । जब सें सेठ के मैनेजर बनलों छेलै, ओकरों जीवन बंधलों-बंधलों होय गेलों छेलै। उजास होलै तें आकाश में चिड़िया सिनी कें उड़तें देखी कें आय होकरा होने लागी रहलों छेलै, जेना ऊ एगो आजाद पंछी होय गेलों छै। सच, आजादी आजादी होय छै। सब तरह के बंधन सें मुक्त। केत्तों बढ़िया खाना मिलै आरो सोना के पिंजरा में बांधी कें राखलों जाय, मन पर एक बोझा रही जाय छै। चिड़िया कें घुमी-फिरी कें खैवों अच्छा लगै छै, कैन्हें कि आजाद होय कें रहना सब्भे चाहै छै। आय कै महीना सें बलेसर पर कटलों चिड़िया होय गेलों छेलै। सब तरह के शान-शौकत छेलै। मजदूर सिनी ओकरा सें थरथर कांपै छेलै। मतरकि ओकरे आजादी कहूँ कैद होय गेलों छेलै । आय केत्ता दिनां पर वें नदी दिस ऐलों छै। पहलें वें पटेल सिंह के खेते पर जाय कें खजूर के डंटी सें मुँह धोय छेलै। आय केत्ता दिना के बाद ऊ बांस के बेंत सें धोतै। बित्ता भर बांस हाथ में लै कें वें चारो दिश हेरै छै। सच्चे, आय सब चीज केत्ता बढ़िया लगी रहलों छै। चैत महीना में खुललों आरो साफ आकाश। ऐन्हों बुझाय छेलै, जेना आकाश भी निफिकर छै।

ओकरो कहीं जाय के धड़फड़ी नै छै । छिनमन बलेसर रं।

'गंगा स्नान करै लें चलली गगल है निया गंगा माय' के गीत गैतें चललों आबी रहलों छै। बलेसर कान लगाय कें सुनै छै। बचपने सें ओकरा गीत गैवों आरो सुनवों बढ़िया लगै छै। आरो यही कारण छै कि गंगन हैनिया के गीत सुनथैं वहू गुनगुनाय उठै छै, मतरकि गंगा माय के गीत नै, ऊ गीत जै में गुलबिया के मन बसै छै।

गीत गैतें ऊ पुबारी टोला दिस बढ़ी जाय छै। ओकरा देखी कें सबटा भौजाय रस्ता छोड़ी दै छै। पता नै बलेसर की कही बैठे। मतरकि ननकी भौजी कें रहलों नै जाय छै आरो आपनों ठोर दाबी कें मुस्काय कें पूछै छै, 'कि बलेसर दियोर, आय हिन्नें आवै के फुरसत मिली गेलौं। जब सें मैनेजर बनलों छो, भौजी सिनी कें तें भुलाय गेलों छौ। दियोर भुली जाय तें भुली जाय भौजी कें, मतरकि भौजी आपनों दियोर कें नै भुलाय छै। हम्में सिनी रोज तोरा याद करै छियौं। तोरा तें हमरा सिनी कें ताकै सें फुरसत नै मिलै छेलौं ।''

बलेसर ननकी भौजी के मजाक रों जवाबो मजाके में दै छै, 'भौजी, तोरा सिनी सें बात करै वास्तें हमरों मोंन छटपटाय गेलै। तोरा सिनी साथें ई गंगा नदी में नहाय के मजा कुछु आरो छै। तोरों दिल्लगी हमरा बहुत बढ़िया लगै छै। ई रं हंसी-मजाक हमरा खेत में कहां मिलतियै। पटेल सिंह के मैनेजरी करी कें हमरों सब चीज छुटी गेलों छेलै। चलों, आय गेठ जोड़ी कें गंगे नहाय लेलों जाय।' ननकियो कम नै छेलै। बलेसर के बात सुनी वहू टन सना बोली उठलै, ''गेंठ जोड़ै में हमरा कोय दिक्कत नै। मतरकि, जब गुलाबो खबर लेतै तखनी।'' सबटा भौजाय एक्के साथ ठिठियावें लागलें छेलै। गीत के सुर बदली गेलों छेलै, ई बात सुनी कें बलेसर अवाक रही जाय छै।

है की ? ननकी भौजी कें भीतरिया बात केना मालूम ? हठाते ओकरा लगै छै कि ओकरा पर बारिश होय गेलों छै। मतरकि तुरंते वें आपना पर काबू पावी लै छै। पता नै की सोची कें। हुवें नै हुवें, ननकी भौजी नें हेने मजाक करी देलें होतै आरो हमरों मन के चोर

सहमी गेलै। आरो जों जानिये गेलै तें ठीक, हाते बात खुलतियै, ओकरा सें यही अच्छा छै कि लोगें पहलें सें कुच्छु-कुच्छु जानै। आरू ऊ मुस्कुराय पड़लै अपने आप। एक बार सब्भे भौजी दिश आँख कोनियाय कें देखलकै आरो फिरू पटेल सिंह के खेत दिश मलकलों बढ़ी गेलै।

जखनी बलेसर खेत पहुंचलों छेलै, वहां खेत में आभियो तांय एकठो मजदूर नै ऐलों छेलै। बलेसर कें आचरज लागै छै कि आय तें वें घर सें नहाय-धोहाय के बाद रास्ता भर झूमतें-झूमतें ऐलों छै, तभियो खेत पर सवेरे पहुंची गेलों छै। अनदिना तें धड़फड़ैले आवै देलै, तभियो मजदूर सिनी खेत पर आवी जाय चुकै छेलै। कहीं ई ओकरों मन के भ्रम तें नै छै। ऊ मने मन सोचै छै। ई बात एकदम सच छै कि ऊ आय खेत पर सवेरे आवी गेलों छै। लागै छै, आय ऊ भिनसरे सें सब काम जल्दी-जल्दी करी लेलें छै। अनदिना नाँखी देर नै करलें छै। या यहू हुवें पारै कि आय ओकरा कोय काम नै छै खेतों में, यही लेली आय ओकरा सब चीजे इनठिकानों लगी रहलों छै। आबें धीरे-धीरे सब मजदूर आवी रहलों छै। आय मजदूर सिनी बलेसर कें खेत में बैठलों देखी कें भ्रम में पड़ी जाय छै। कोय सवेरें आरो कोय देरी सें ऐलै। मजदूर सिनी मने-मन सोचै छै कि बलेसर जरूर ई देखै लें ऐलों छै कि के की करी रहलों छै। के देरी सें आवै छै आरो के सवेर। सब बलेसर के नगीच आवी कें आपनों देरी सें आवै के कारण बतावें लागै छै। बलेसर सब कुछ समझी रहलों छै। यै लेली मने-मन मुस्कुराय रहलों छै, मतरकि बलेसर केकरो सें कुछ नै बोलै छै। आपनों-आपनों कारण बताय सब मजदूर आपनों-आपनों ढंग सें काम में भिड़ी जाय छै। कुछ देर पहलें जे भय छेलै, ऊ खतम होय गेलों छै आरो कामों में फेरू वहें ढीलाय-सीलाय। आय बलेसर खेत में काम करै लेली केकरो डाँटै-डपटै भी नै छै। जब सें मैनेजर बनलों छेलै, मजदूर पर बहुत गोस्सा आरू रोआब छेलै। चमरू, मंगरू, बसंता, मंदर, सीतबिया आरो सब मजदूर आपनों-आपनों काम करी रहलों छै। काम की करी रहलों छै, दिन काटी रहलों छै। बलेसर कें आय यहू बात के कटियो टा फिकिर नै

छै। बलेसर सब मजदूर कें काम करतें देखी-देखी मनेमन सोचै छै। इस सब मजदूर हमरे रं एगो मजदूरे छै, फेरू हममें एकरा सिनी कें कैन्हें डांटवै-फटकारवै। मंगरू कें जल्दी-जल्दी हाथ चलैतें देखी कें ओकरों नगीच आवै छै आरो ओकरों हाथ पकड़ी लै छै। ओकरों हाथ सें कोदार आपनों हाथ में लै कें बोलै छै, "की मंगरू, एत्तें जल्दी की छै काम के, होतै न। आरो एत्तें जल्दी काम खतम करी कें की होतै। हां, बेसी काम करै सें मालिक बेसी पैसा देतियै तें, ई एगो बात होतियै। बेसी पैसा के लोभ में देहो खटैलों जावें सकै छै। मतरकि काम के कानो कीमत दै। दिन भर खटियो कें वहें अजरे टका मिलतै। यहें लेली बेसी काम नै करों। समांग बचावों, समांग सें ई दुनिया-संसार छै, आरो जब तक ई समांग ठीक रहथौं, तबें तक घर-परिवार सें लै कें मालिक-मुख्तियार पूछथौं। ई बात बहुत पुराना बूढ़ों-बुजुर्ग कही गेलों छै आरो ई दुनियां के सबसें बड़का सच भी छेकै।

बलेसर हेनै करी-करी सब मजदूर सिनी कें बहलाय काम कराय रहलों छै। ऊ नै चाहै छै कि मजदूर सिनी बेसी खटै। आपनों मनों में केत्तें बात गुनी रहलों छै। मजकि मजदूर सिनी बलेसर के ई रूप देखी कें अचरज में छै। ओकरों सिनी रों समझ में नै आवी रहलों छै कि ई बलेसर कें आखिर होय कि गेलों छै। कभी गोस्सा देखाय छै तें कभी परेम-भाव। मतरकि कोय बोलै नै छै। चमरू बलेसर कें देखी कें आपनों आंख उठाय कें ओकरों मुँहों रों भाव पढ़ै रों कोशिश करै छै, मतरकि कोय भीतरिया बात पढ़ै नै सकै छै। आय बलेसर केकरो पर जरियो-टा मैनिजरियो नै छांटी रहलों छै। दिन चढ़थैं कि देर लागै छै। देखतें-देखतें सुरुज भगवान एकदम माथे पर आवी जाय छै। सब मजदूर सिनी आपनों-आपनों खाना निकाली कें खाय रों तैयारी करी रहलों छै। मतरकि बलेसर एक दिश खाड़ों रहै छै। जबें ऊ चमरू नांखी खाली एक मजदूर छेलै तें वहू साथें मिली कें खाय छेलै। आपनों साथ लानलों चूड़ा या सत्तू कोय चीजों के पोटली खोली दै, मतरकि कुछू दिनों सें बलेसर के खाना-पीना मजदूर सें हटिये कें होय

रहलोॅ छेलै। आय नै ऊ कन्हौं हटलोॅ छै, नै कुछु साथ लानलोॅ छै।

आपनोॅ मनोॅ में पता नै की-की सोचै छै मजदूरो सिनी आरो आपनोॅ-आपनोॅ पोटरी नै खोली रहलोॅ छै कि तखनिये बलेसर चमरू सें बोलै छै, "की चमरू दा, आय हमरा खाय पर नै बैठैभौ की ?" एतना कही बलेसर ऊ सबके बीच अनचोके आवी केॅ बैठी जाय छै। आरो चमरू के पोटरी खोली केॅ चौरो के भुंजा के एक फांक मारी केॅ कहै छै, "सब्भे आपनोॅ-आपनोॅ पोटरी निकालोॅ। मिली-जुली खैभै ।' मंगरू, बसंता, चमरू, मुंदर, सीतबिया सब्भे आपनोॅ सत्तू निकालै छै, आरो एके जगह नोन मिरचाय लगाय केॅ सानै छै। तबेॅ बलेसर फेरू कहै छै, 'आय हम्में तोरे सिनी के बीच बैठी केॅ खैभौं। बहुत दिन होय गेलौं, तोरोॅ सिनी रोॅ साथें खैलोॅ-पीलोॅ। चौरोॅ के भुंजा बलेसर दांतोॅ सें चबैलेॅ जाय छै आरो कहलेॅ जाय छै, "हम्में तों एक्के जाति के चिड़िया छियै न मंगरू। अब तोंही सोचैं कि मालिक पटेल सिंह नें शिकारी नाँखी केत्तेॅ चालाकी सें हमरा तोरा सिनी सें अलग करी देलकौं। हम्में तेॅ छेलियै तोरे सिनी के बीच के चिरैया। आरो बनाय देलकै हमरा बाज कि तोरे सिनी पर आक्रमण करेॅ सकौं । कैन्हें कि हम्में अपने चिड़िया जाति में फूट डालियै। अब तेॅ पटेल सिंह तभिये खुश होय छै, जबेॅकि लोग सिनी रोॅ खून-पसीना चूसी-चूसी केॅ आपनोॅ शिकारी केॅ देतेॅ रहियै। तभे ऊ हमरो सें खुश रहै छै।"

बलेसर जखनी ई बात कही रहलोॅ छेल्है, तखनी चमरू आंख गड़ाय-गड़ाय केॅ बलेसर के बात सुनी रहलोॅ छेलै। बलेसर आपनोॅ मनोॅ रोॅ बात कही केॅ हौला होय लेॅ चाहै छेलै। केत्ता दिनोॅ सें ओकरोॅ मनोॅ में एकटा बोझ छेलै। अपने भाय आरो बंधु-बांधव सें दूर होय गेलोॅ छेलै। केत्ता अच्छा लगी रहलोॅ छै। मन में एकटा उमग उठी रहलोॅ छेलै। पटेल सिंह ओकरा मैनेजर बनाय केॅ कत्तेॅ सजा देलेॅ छै। आपने सब सें दूर करी देलेॅ छेलै। आय ओकरोॅ आरो मजदूर के बीच के सबटा बंधन टूटी गेलोॅ छै। चमरू बलेसर के बात सुनी केॅ बड़्डी खुश होय छै। बलेसर के बात खतम नै हुवेॅ पारै छै कि ओकरोॅ

बात लोकतै मंगरू आपनोॅ अनुभव सुनावेॅ लागै छै।

मंगरू गेहुंआ रंग के नाटा कद के मजदूर छै। बदन भरलोॅ आरो माथा ठो चौड़ा रं छै। माथा पर कारोॅ-कारोॅ घनोॅ बाल। नाक चौड़ा आरो मोटा। ठोर थोड़ोॅ चौड़ा, मतर पतरा। आंख खूब बड़ा नै, मतरकि छोटो नै। हरदम चेहरा पर एगो हंसी बिखरलोॅ रहै छै। आरो मन में एकटा दंभ भी रहै छै कि ऊ कलकत्ता शहर सें घूमी केॅ ऐलोॅ छै। ओकरोॅ किस्मत साथ देतियै तेॅ ऊ मजदूरी नै खटतियै। जानै छै कि मजदूर सिनी रोॅ हैसियत की होय छै। चाहै तेॅ बहुत बड़ोॅ काम करेॅ सकै छै ई बिना पढ़लोॅ-लिखलोॅ, अनपढ़ गंवार। खाली होकरोॅ मन में एकटा संकल्प होना चाहियोॅ। मंगरू आपनोॅ पुड़िया सें खैनी निकाली निचलका ठोरोॅ के जड़ी में राखतें कहै छै, ''एकदम ठीक कहै छैं बलेसर। तोरा सिनी जानबे करै छैं कि हम्में दस बरस तक कलकत्ता में मजदूरी करलियै। तोरा सिनी नै जानै छै वहां कुमनिष्ट शासन करै छै। हमरोॅ सिनी नाँखी मजदूरोॅ के हिमायती मंत्री सिनी वहां रहै छै। सांझे जखनी हमरा सिनी खोली में लौटियै तेॅ एक बड़का कामरेड हमरा सिनी के ढेर सिनी बात सुनलै। वही बात सिनी में एक कहानी कहलेॅ छेलै, जे कहानी हमरा हठाते याद आवी गेलोॅ छै, बलेसर तोरोॅ बात सुनी केॅ। जानै छैं, ई किस्सा हमरोॅ देश के नै छै। ई किस्सा छै बहुत दूर देश के। कही छै कि सात समुन्दर पार एकटा देश छै, की तेॅ ओकरोॅ नाम बतैनें छेलै। देखैं भुतलाय गेलियै।' आरो मंगरू आपनोॅ माथा पर जोर डालतें हुवेॅ याद करै के कोशिश करै छै। थोड़ा देर बाद बोलै छै, ''की बतैय्यौ, ई खैनी तेॅ हमरोॅ माथा के सबटा बुद्धिये भुतलाय दै छै।'' याद ऐथैं माथा झकझोरी केॅ बोलै छै, ''हां, याद ऐलौ, ऊ देश के नाम छै रोमान। तखनी वहां आदमी खरीदलोॅ जाय छेलै, जेना कि हम्में सिनी भेड़ो-बकरी किनै छियै।

वहां केरोॅ राजा-महाराजा आदमी सिनी किनी केॅ ओकरा सें गुलामी करवावै छेलै। बिकलोॅ आदमी वहां केरोॅ राजा के ताकत आरो पैसा के आधार छेलै। की जिनगी होय छेलै ऊ आदमी के, जे बाजार में

ककड़ी-खीरा रं बिकै छेलै आरो खरीदैवाला के मन मोताबिक कटी-मरी जाय छेलै।''

मंगरू के कहानी सुनै में बसंता हेने मगन होय गेलै कि ओकरों हाथों रों कौर हाथे में रही गेलै। यहू होश नै छै कि ऊ खाना खाय रहलों छै। सीतबिया, जे तनी दूर बैठलों छेलै आरो नगीच आवी जाय छै। ओकरों उत्सुकता एत्तें बढ़ी जाय छै कि दांतों के बीच के भुंजा अभियो तांय वहीं फंसलों छै। मुंदर मंगरू के मुंहों कें बड़ा गौर सें देखी रहलों छेलै। जेन्हैं मंगरू तनियो टा चुप होय, ओकरों उत्सुकता आरो बढ़ी जाय। मुंदर नें पूछलकै, ''फेनू की होलै ?'' ''ई रं के जीवन में जेकरा सें आपनों मनों के कुछ नै करै सकौं, भीतरे-भीतर एक आग सुलगाय रहलों छेलै। मतरकि कोय गुलाम कुच्छु बोलें नै सकै छेलै। हां, वहां केरों गुलाम कें मालिक तरफ सें बहुत तरह के सुविधा मिलै छेलै। छिनमान बलेसरे रं। जेना कि मालिक पटेल सिंह ने हेकरा मैनेजर बनाय कें कत्तें सुविधा देलें छेलै। आपनों रं खाना-पीना खिलैबों, कखनियो बोरा-बखत कुछु जरूरत-दरकार पड़लौं, तें तुरंते सब चीज जुटाय कें देना। देखैं छेलै, जखनी बलेसर कें मैनेजर बनैलकै, तखनिये सें हमरासिनी सें बेसी सुविधा हेकरा मिलें लागलै। हम्में सिनी कभियो पटेल सिंह के घर दिश जाय छियै। मतरकि बलेसर बिना कोय रोक-टोक होकरों घर जावें पारें।''

मंगरू जखनी कहानी सुनाय रहलों छेलै, ओकरों आँखी में एगो चमक उभरै छै। ''मतरकि हेत्तें सुविधा मिलला के बादो एक चीज बहुत अखरै छेलै कि ऊ आपनों मन के कभियो कुछ नै बोलें सकै छै, आरो नै तें करें सकै छै। जे मालिक चाहतै, वहें गुलाम कें करै लें पड़तै। गुलाम के शरीर खूब मस्त आरो मजबूत बनाय लेली ओकरा बढ़िया सें बढ़िया खाना मिलै छेलै। कसरत करवैलों जाय छेलै। ओकरा सिखाय-पढ़ाय लेली एगो मास्टर देलों जाय छेलै, जेकरा कि नानिस्ता कहलों जाय छेलै।''

चमरू जे थोड़ों ज्यादा होशियार छै, मंगरू के बात पर बेसी

विश्वास नै करै छै। वें पूछै छै कि तबे॑ वहां खाली यहे॑ करवावै छेलै वहां के राजा। तबे॑ मंगरू फेरू आपनो॑ बात के॑ सच्चा साबित करै लेली बोलै छै, ''नै चमरू, जब गुलाम तैयार होय जाय छेलै, ते॑ ओकरा आपस में लड़ाय छेलै। खाली लड़ाय देखै वास्तें वहाँ अखाड़ा तैयार करलो॑ जाय छेलै। वहां केरो॑ राजा-महराजा आरो बड़का-बड़का लोग ई लड़ाय देखै वास्तें दूर-दूर सें आवै छेलै। ई लड़ाय देखै लेली वहां के राजा के॑ गुलाम के मालिक के॑ ढेरी पैसा दै ले॑ पड़ै छेलै। थीरिस देश के गुलाम एगो छोटो॑ ऐसनो॑ छुरा चलाय में बहुत होशियार होय छेलै । एगो देश अफरीका के गुलाम मछरी पकड़ै के जाल आरो त्रिशूल चलाय में बहुत तेज होय छेलै। दोनों देशो॑ के ई तरह के लड़ाय देखै लेली खूब लोग जमा होय छेलै। ई तरह के लड़ाय में जे गुलाम जीतै छेलै, ओकरा थोड़ो॑ देर वास्तें आजाद छोड़ी देलो॑ जाय छेलै। मतरकि आखिर ई सब केत्ता दिन चलतियै। आपने समान बंधु-बांधव के॑ मारी के॑ कोय केत्ते॑ दिन रहतियै। एक समय हेनो॑ ऐलै कि ई तरह के काम करै लेली ओकरो॑ मन तैयार नै होय छेलै। हेने एकठो गुलाम छेलै, जेकरो॑ नाम छेलै—इसपाटाकस। होकरा जबे॑ अखाड़ा में उतारलो॑ गेलै ते॑ अपने रं गुलाम के॑ मरतें देखी के॑ ओकरो॑ मनो॑ में एकटा बदला के भाव जगी उठलै। वें देखलकै कि ओकरे समान गुलाम के॑ वहां लड़वैलो॑ जाय रहलो॑ छै। ओकरो॑ अंदर एक आग सुलगे॑ लागलै।'' ई बात कहतें-कहतें मंगरू रो॑ चेहरा भी लाल भभूका रं होय गेलै। सौंसे बदन एकदम फड़फड़ाय उठलै। जेना कि पटेल सिंह के ओकरा सिनी सें गुलामी कराय छै। ई तरह के गुलामी में मालिक के॑ केत्ते॑ सुख मिलै छै, मतरकि गुलाम के ते॑ देहो॑ के खूने बहै छै आरो ओकरो॑ जानो जाय छै।

फिरू आपनो॑ कहानी के॑ आगू बढ़ैतें हुवे॑ बोलै छै कि जानै छैं चमरू, इसपाटाकस नें की करलकै। ते॑ चमरू अचकचाय के॑ पूछै छै, ''की करलकै मंगरू ऊ गुलाम नें।'' तबे॑ मंगरू आपनो॑ मन के अंदर उठी रहलो॑ एक ज्वार के॑ दबैतें हुवे॑ बोललै, जेना कि ओकरा ई बात

बोलै लेली कत्ते॑ मेहनत करै ले॑ पड़ी रहलो॑ छै, छिनमन इसपाटाकस नाँखी, ''केत्ता मन बनाय ले॑ पड़लो॑ छेलै ओकरा ई रं सोचै आरो करै में। जहां गुलाम सिनी के॑ बेदर्दी सें काटी-मारी देलो॑ जाय छेलै आरो वहीं अखाड़ा में लटकाय देलो॑ जाय छेलै। मतरकि इसपाटाकस के मनो॑ पर एकरो॑ उल्टा प्रभाव पड़लै, हेनै कि वें ई बात के॑ मानै लेली तैयार होय गेलै। जब मरने छै ते॑ कैन्हें नी आपनो॑ अंदर के आग बाहर निकाली के॑ मरौं। जे होतै, देखलो॑ जैतै। आरो इसपाटाकस के॑ जेन्हैं मैदान में उतारलो॑ गेलै, ऊ आपनो॑ मालिके पर हमला करी देलकै।'' मंगरू के कहानी खतम होय जाय छै, मतरकि सबटा जन-पाट के कहानी खतम होय के होशे नै रही छै, सब टुकुर-टुकुर मुँह ताकते रही जाय छै। ओकरा सिनी के॑ देखी के॑ हेने बुझाय छै जेना कि वें संझली चौपाल में बैठलो॑ छै। खेतो॑ में काम करै लेली नै ऐलो॑ छै। मंगरू आपनो॑ खिस्सा खतम करथैं बलेसर सें पूछै छै कि बलेसर, कहानी जे सुनैलियौ, हमरे सिनी रं मजदूर के खिस्सा छेलै नी। अब तों की सोचलैं ? तबे॑ बलेसर जे कहीं आपनो॑ दुनिया में कहीं भुतलैलो॑ छेलै, अकचकाय के॑ पूछै छै, ''तों कुछू बोललै मंगरू ?''

मंगरू बलेसर के मुँह देखी के॑ अचरज करै छै, कैन्हें कि बलेसर के मुँहो॑ पर एक विचित्र मुस्कान आवी गेलो॑ छै। हांलांकि हेना के॑ बलेसर मंगरू के कहानी नै सुनले॑ रहै, मतरकि ओकरो॑ उत्तर मंगरुये के जवाब नाँखी छेलै। बलेसर ओकरा सें कहै छै, ''हां मंगरू, तों ठीके कहै छैं, आखिर गुलामी के करै ले॑ चाहै छै। हम्मूं नै चाहै छियै। हम्में आबे॑ पटेल सिंह के खेत में काम नै करवै। आबे॑ हम्में आपनो॑ खेती करवै। ऊ दिन नत्थू काका हमरा खेती वास्तें लोन लै ले॑ बताय रहलो॑ छेलै। हम्में आबे॑ लोन लै के॑ खेती करे॑ पारौं। तों ठीक कहै छैं मंगरू।'' तबे॑ मंगरू जे बलेसर के सबटा बात सुनी रहलो॑ छेलै, आपनो॑ मन के बात के॑ दोहरैतें हुवे॑ बोललै, ''आय ते॑ है खेती-बारी आरो छोटो॑-मोटो॑ काम करै ले॑ केत्ते॑ नी लोन मिलै छै । पंचायत के मुखिया ऋण दै छै, बैंक ऋण दै छै, जवाहर रोजगार योजना छै, एन आर पी ई ऋण दै छै,

ओकरा सें गरीबों कें सहायता मिलै छै। खाली काम करै वाला के मन में संकल्प होना चाहियो। आरो यहू नै तें तों जानै छै न बलेसर, बिलाक के बीडिओ लोन दै सकै छै। आरो सब के बात सुनला-समझला के बाद बलेसर मने-मन फैसला करै छै, की वें कोय तरह सें, कहिंयो सें लोन लै कें आपनों खेती करतै। आपनों खेती करै में केत्तें सुख छै।

आरो फेनू बलेसर जे फैसला करी लेलकै, से करी लेलकै। आय सें वें खेत रों काम नै करतै। आरो बलेसर बिना कुच्छु बोलले उठी कें चुपचाप खेत सें बाहर आवी जाय छै। आय बलेसर कें खेत के कोय चीज नै बान्हें पारी रहलों छै। नै गाछ, नै बिरिछ, नै पोखर, नै बोरिंग सें निकलतें पानी। कुछ दिन पहलें तक बलेसर कें यहें चीज कत्तें प्यारो रहै आरो आय वही सब एकदम वीरानों होय गेलों रहै। बलेसर सब कुछ छोड़ी कें, सब कुछ भुलाय कें एकदम मुँह फेरी कें आगू बढ़ी गेलों छेलै, जेना मशान में कोय अपने आदमी कें जराय-पकाय होकरा पंचकाठ दै आगू बढ़ी जाय छै। बलेसर छिनमान होने आगू बढ़ी जाय छै।

[३]

चैत-बैशाख के महीना चली रहलों छै। गरम रों महीना आवी गेलों छै। भोरकुआ पर तनी टा बढ़ियां लगै छै, कैन्हेंकि ऊ समय मौसम थोड़ा ठंडा रही छै, मतरकि जेना-जेना समय आगू बढ़ै छै, भोरकों ठंडा हवा कपूर नाँखी उड़ी जाय छै आरो धीरे-धीरे वातावरण में धूप के प्रभाव बढ़लों जाय छै। जैन्हें-जैन्हें सुरज भगवान ऊपर उठना शुरू होय छै, देह-हाथ घामे-घाम होय जाय छै। कैन्हो अजीब मौसम होय छै ई चैत-बैशाख रों महीना। न तन शीतल होय पारै छै आरो नै तें मने शांत

रहे॑ सकै छै। जेना-जेना धूप रो॑ परभाव बढ़ै छै, वैन्हें-वैन्हें मन के व्याकुलता बढ़े॑ लागै छै। हेने बुझाय छै जेना कि धूप सें बचै लेली धरती में समाय जांव या फिरू ठंडा पानी सें भरलों॑ नदी-पोखर में डूबलों॑ सारा दिन बिताय दियै। मतरकि हेनो॑ हुवे॑ कहाँ पारै छै। एकरा ले॑ समय कहां मिलै छै। खेती-बाड़ी आरो काम-धंधा या फिरू पेट बांधी के॑ रहलों॑ जावे॑ सकै छै की ? काम ते॑ करै ले॑ पड़तै। आरो बलेसर सबकुछ जानतें-बुझतें काम शुरू करी दै छै।

आय सें बलेसर लोन लेली दौड़-धूप शुरू करी दै छै। बलेसर आगा-पीछा देखले बिलाक दिश बढ़ी जाय छै। बिलाक घर सें आठ किलोमीटर दूर छै। मतरकि आय बलेसर के मनों॑ में एकटा विश्वास छै कि वें जेना भी हुवे॑, लोन लै के॑ रहतै, से आय वें धूपों॑-बताशों॑ के ख्याल नै करै छै। बिलाक तक जैतें॑-जैतें॑ बलेसर घाम सें तरबतर होय जाय छै। कुर्ता के एको कोना भींजै सें नै बचलों॑ रहै छै। एत्ता धूप छेलै बाहर में की, अभी तक ते॑ केला रो॑ खेतो॑ में बैठलों॑-बैठलों॑ बुझाय नै छेलै। मतरकि केला के खेत सें अब बाहर ऐतें बाहर के धूप-बताश नें बलेसर के सौंसे देहों॑ के॑ भिंजाय देलें॑ छेलै। बैशाख के धूप रो॑ बाते कुछ आरो होय छै। आरो वहू में कोशी माय के गोदी के। चलै लेली ते॑ चली देलकै बलेसर, मतरकि हेत्ता ख्याल नै करें॑ सकलै कि वें रास्ता में हेत्ता धूप में पड़ी जैतै। अखनी भगवान बलेसर रो॑ सीधा मुँहों॑ पर पड़ी रहलों॑ छै। आँखी पर घाम चुवी-चुवी के॑ आँखी रो॑ पिपनी पर गिरी रहलों॑ छै आरो बलेसर रो॑ आँख बीचों॑-बीचो॑ में बंद होय जाय छै। जखनी घाम चूवी के॑ आँखों॑ के कोरी में घुसी जाय छै , तखनी बलेसर के डिमी हेने लहरें॑ लागै छै, जेना कोय आँखी में मिरचाय रगड़ी देलें॑ रहै। घाम पोछै लेली आपनों॑ कंधा पर के गमछा उतारी के॑ आँख-मुँह पोछै छै आरो ओकरा मने-मन ख्याल आवै छै कि यहें॑ गमछा सें एक दिन गुलबिया नें हाथ पोछलें॑ रहै। आरो जबें॑ ऊ गमछा सें आपनों॑ मुँहो॑ के॑ पोछै छै तें॑ ओकरा हेने बुझाय छै कि गुलबिया आपनों॑ मुलायम-मुलायम हाथों॑ सें ओकरों॑ देहों॑ रो॑ घाम पोछी रहलों॑ छै। बड़ा

सुख मिलै छै बलेसर केॅ। ओकरा एक मिनटोॅ लेली लागै छै कि धूप अनचोके नरम पड़ी गेलोॅ रहै। एकदम नरम। गुलबिया के याद में अद्भुत असर छै, मतरकि धूप तेॅ धूपे छै। सब कोमल भाव केॅ उलाय-पकाय केॅ राखी दै वाला। बलेसर केॅ लागै छै कि ओकरोॅ देह कुम्हारोॅ के आवा बनलोॅ जाय रहलोॅ छै। वें पसीना सें भीजलोॅ आपनोॅ कमीजोॅ के बदन खोलै छै आरो जोर-जोर सें फूक मारी देह-हाथ केॅ ठंडा करै के कोशिश करै छै। आरो चलतें-चलतें बलेसर केन्हौ करी केॅ बिलाक पहुँचिये जाय छै, मतरकि बिलाक तक पहुँचतें-पहुँचतें आखिरकार बलेसर थकी केॅ चूर-चूर होय जाय छै। एत्तेॅ घामे-घाम होला के बादो बलेसर आपनोॅ देहोॅ पर के सबटा पसीना पोछी केॅ आफिस के बाहर एक बार थकथकाय केॅ बैठी जाय छै। ओकरा छाँव में आवी गेला के बादो चैन नै मिली रहलोॅ छै। वें कमीज खोलै छै आरो गमछे नाखी पसीना केॅ निचोड़ी दै छै। फेनू बदन पर राखी लै छै आरो कुछ देर लेली आँख बंद करी लै छै, जेना देहोॅ में बरफ के ख्याल करतेॅ रहै। आपनोॅ साँसोॅ केॅ, जे अभी तेज चली रहलोॅ छै, संभारै छै। आफिस के सीढ़ी पर बैठलोॅ-बैठलोॅ दू-तीन मिनट में केत्ता बात सोची लै छै। भीतर सें आदमी आवी रहलोॅ छै आरो केत्ता नी आदमी भीतर जाय रहलोॅ छै। आदमी सिनी रोॅ तांता लगलोॅ छै। बलेसर भी उठी केॅ भीतर जाय छै। बलेसर देखै छै कि वहाँ कोठली में एकटा टेबुल पर एगो मोटोॅ ऐसनोॅ आदमी बैठलोॅ छै। हेने बुझाय छै कि ऊ बड़ा बाबू रहै। कैन्हेंकि सबटा आदमी ओकरे आस-पास बैठलोॅ या खड़ा छै। दत्ता बाबू यहेॅ बतैलेॅ छेलै कि मोटोॅ रंग के आदमी मिलतौं भीड़ोॅ सें घिरलोॅ, वहेॅ बड़ा बाबू होथौं। बलेसर दत्ते बाबू सें एगो आवेदन-पत्रो लिखवैनें ऐलोॅ छै, जेकरा वें बड़ी हिफाजत सें प्लास्टिक के झोली में लेनें छेलै कि कहीं घामोॅ सें भींजी नै जाय। वें कमरोॅ सें ऊ झोली निकाली लै छै आरो झोली सें ऊ चपोतलोॅ कागजो, जेकरा लै ऊ बड़ा बाबू दिस बढ़ै सें पहिलें एक बार फेनू आपनोॅ विश्वास लेली दूसरोॅ आदमी सें पूछै छै। ऊ आदमी बताय छै, ''हों, टेबुल पर जे मोटोॅ रं के आदमी बैठलोॅ

छै, ऊ ई बिलाक के बड़ा बाबू छै। ओकरोॅ नाम सुमेर सिंह छै, अभिये दस रोज पहिलें ऐलोॅ छै।'' वें आदमी एक्के सुरोॅ में एत्तेॅ जानकारी दै दै छै। बलेसर देखै छै कि एक-दू टा आदमी, जे पैंट-कुरता में रहै, वहीं पर कुरसी पर बैठलोॅ चाय सुड़की रहलोॅ छै। बलेसर ऊ बड़ा बाबू केॅ बड़ा गौर सें देखै छै।

ओकरा ख्याल आवै छै कि ई आदमी केॅ छः-सात रोज पहिलें वें पटेल सिंह कन देखलेॅ छेलै। पटेल सिंह-सुमेर सिंह। हुवेॅ सकै छै कि रिश्तेदारी में रहेॅ। बलेसर मने-मन विचारोॅ के विन्डोवोॅ में उड़ेॅ लागै छै। काम हुवैं पारेॅ। जों ऊ आपनोॅ पता-ठिकाना बतावै छै तेॅ सुमेर सिंह ओकरोॅ मदद करेॅ पारेॅ। बलेसर के मन में यहू बात उठै छै कि कहीं सुमेर सिंह ने पटेल सिंह केॅ है सब बात बताय देलकै तेॅ ओकरा जोहो लोन मिलै वाला होतै, वहू नै मिलतै। पटेल सिंह तेॅ कभियो है नै चाहेॅ पारेॅ कि हमरोॅ केला के एकड़-दू एकड़ के खेती रहै। मतरकि सुमेर सिंह भला ई सब बात पटेल सिंह केॅ कैन्हें कहतै। यहाँ तेॅ कामे छै गरीबोॅ के मदद करना। तबेॅ हमरा कैन्हें नी करतै। वें पटेल सिंह के नाम कहतै, तबेॅ बड़ा बाबू जरूरे ध्यान देतै। आरो यही सब सोचतें हुवेॅ बलेसर बड़ा बाबू के नगीच आवी केॅ आपनोॅ आवेदन-पत्र केॅ सुमेर सिंह के आगू बढ़ाय छै छै ।

सुमेर सिंह दूसरोॅ आदमी सें बात करै में मशगूल छेलै। से ऊ बलेसर रोॅ आवेदन-पत्र लै केॅ आपनोॅ टेबुल पर फाइल रोॅ नीचूं रखी दै छै। बलेसर ई देखी केॅ कि सुमेर सिंह ओकरोॅ आवेदन-पत्र फाइल के नीचू में राखलोॅ छै, जरूरे हमरोॅ काम करतै, सोची खुश होय जाय छै। सुमेर सिंह ठीक सें बलेसर केॅ देखले बिना ओकरा हाथ सें बैठै के ईशारा करी दै छै आरो फिरू आपनोॅ बात में मगन होय जाय छै। बलेसर बहुत आशा आरो उम्मीद लै केॅ वहीं बाहर में आवी केॅ बैठी जाय छै। लोग बेद केॅ ऐतेॅ-जैतेॅ देखी केॅ ओकरोॅ विश्वास जमै छै कि यहाँ एत्तेॅ आदमी आवी-जाय रहलोॅ छै, जरूरे लोन लेली ऐतेॅ-जैतेॅ हुवै।

थोड़ा देर के बाद बलेसर के भीतर सें बुलाहट होय छै। बलेसर मने-मन बहुत खुश होय छै कि अब ओकरो॔ बुलाहट होय गेलो॔ छै। अब ओकरा लोन जरूरे मिली जैतै। हुन्नें सुमेर सिंह आपनो॔ कुर्सी पर ओठगांय कें॔ बैठलो॔ छै। बलेसर ओकरो॔ सामना में जाय कें॔ हाथ जोड़ी कें॔ खड़ा होय जाय छै। सुमेर सिंह होने कुरसी पर ओठगेलो॔ हुवें॔ बैठलो॔ पूछै छै, ''तोरो॔ नाम की ?''

बलेसर हाथ जोड़ले॔-जोड़ले॔ धीरे सें बोलै छै, ''बलेसर।''

''तोरो॔ बापो॔ रो॔ नाम की।''

''शिवचरण।''

''की शिवचरण।''

''शिवचरण मंडल।''

''तें॔ होना कें॔ नै बोलै। खाली शिवचरण कहला सें भगवानो कुछ समझें॔ पारतौं की ?''

''तों काम की करै छैं।''

''खेती-बाड़ी रो॔ काम।''

''तों की चाहै छैं।''

''लोन।''

''कथी लेली।''

''खेती-बाड़ी करै लेली।''

''खेती-बाड़ी लेलें॔ लोन।'' बड़ा बाबू रो॔ आँख तें॔ जेना कौड़ी नाँखी फैली कें॔ रही गेलै। आरू फिरू आँख कें॔ घोंघा नाँखी चलैतें॔ हुवें॔ कहलें॔ छेलै, ''अरे बलेसर, बारी जोगै लायक तें॔ ऋण नै उठावें॔ पारै छैं, तें॔ खेती लोन लेभैं तें॔ चुकाबें॔ पारभैं की।'' आरो हठातें फिरू सोचतें आपनो॔ बातो॔ कें॔ बदलतें हुवें॔ बड़ा बाबू बड़ी नरमी सें कहें॔ लागै छै, ''केत्ते॔ लेना छै।''

''बीस हजार।''

''मतरकि एत्ता पैसा लै लेली पहलें चार-पाँच हजार यै टेबुल पर खर्च करै लें॔ पड़तौ, करें॔ पारभैं।''

"बाबू, हम्में सिनी ठहरलां गरीब जन-मजूर, कहाँ सें एत्तें पैसा खरच करें पारभौं।"

"तबें है लोन लै लेली कथी लें ऐलों छैं। है लोन-फोन एत्तें आसान नै छै, जेत्ता आसान तों बुझी रहलों छैं।"

"हुजूर, मतरकि हमरे गामों के कैएक आदमी कें है लोन मिललों छै। जे हमरे नाँखी गरीब छै।" "मिललों छै तें हेनैं ? गलैलकै तें पानी निकललै। पानी लें पहलें लावै के जोड़ बैठावैं बलेसर।"

सुमेर सिंह आबें ज्यादा बहस करै लें नै चाहै छै, कैन्हेंकि ओकरों आस-पास ढेरो लोग के भीड़ जमा होय गेलों छै। ऊ बलेसर कें टालै लेली एक हफ्ता बाद आवै लेली कहै छै, "ठीक छै, तों पाँच-छों रोज बाद ऐहियौ। तालुक हम्में बीडिओ साहब सें बात करी कें राखभौं।"

आरो बलेसर आशा-निराशा के बीच झूलतें बाहर निकली जाय छै। बाहर अभियो भी ओत्ते रौदा छेलै। चार बजी रहलों छै। मतरकि रौदा देखी कें मन हेने बुझाय छै कि भगवान दिस नजरी उठाय कें भी नै देखै। रुकौ तें नै सकै छै। फिरू बलेसर आपनों गमछा सें मुँहों कें ढाकतें हुवें बांधी लेलकै आरो निकली पड़लै घर दिस।

आय बलेसर घर ऐतें-ऐतें एत्तें थकी कें चुर होय जाय छै । ओकरों देहों के एक-एक हाड़ चिनकी रहलों छै, जेना देह सें टूटी कें बाहर निकली जैतै। वें आपनों हाथ पीछू करी कें रीढ़ कें सहलावें लागै छै। ओकरा लागै छै कि केत्ता अच्छा होतियै कि कोय ओकरों चूर-चराहते बदनकें आहिस्ता-आहिस्ता मलतियै कि हठाते ओकरा गुलाबो के याद आवी जाय छै। आय गुलबिया पास होतियै तें ऊ कि हेने दर्द सें बेचैन रहतियै। देहों के एक-एक गिरेहों पर मुलायम हाथ ससारी-ससारी कें सबटा दर्द बिछी लेतियै। मतरकि गुलबिया आय ओकरों पास कहाँ छै। बलेसर मने-मन सोचै छै कि आय नै छै तें की, कल तें गुलबिया हमरों पास होतै घड़ी-दू-घड़ी आरो एक-दू दिन-रात वास्तें नै, सौसें जिनगी लेली। आरो ई सोचतें-सोचतें बलेसर के मोंन

भटकी जाय छै आरो देखथैं-देखथैं दरद भी टीसना कुछु कम होय जाय छै। बलेसर दरद के जगह में ओकरों मुलायम हाथ केरों स्पर्श महसूस करै छै।

[४]

आय हफ्ता रोज गुजरी गेलों छै। आय के दिन सुमेर सिंह नें बलेसर कें बुलैनें छेलै। ऐत्ता दिन बलेसर केना काटलकै, वहीं जानै छै। दिनों में पचीसो बार औंगरी पर दिन गिनतें रहै छेलै। आय दिन पुरथैं ओकरो चेहरा पर आशा आरो खुशी के अद्भुत प्रकाश छेलै। ऊ एकदम भोर उठलों छै। सबटा काम निबटाय लेलें छै आरो गमछी में पाव भरी सतू बांधी कें बिलाक दिस ओरियाय जाय छै। ओकरा मालूम छै कि जरा-सा दिन चढ़थैं धूप केन्हों तीखों होय जाय छै। आगिन में जरला सें तें अच्छा यही छै कि तीन घंटा बिलाक के बाहरे बैठलों जाय।

बिलाक खुलथैं बड़ा बाबू हाजिर होय गेलों छै। मतरकि बलेसर सबसें पहिलें केना घुसतियै। ई सोची कें कुछु देर बाहरे बैठलों रही जाय छै आरो हुन्नें बड़का बाबू होने आदमी सें घिरलों चल्लों जाय छै। केत्ता आदमी कें निवटैला के बाद बलेसर के बुलाहट होय छै। बलेसर एक आशा आरो उम्मीद लै कें बाहर सें हाथ जोड़ले-जोड़ले बड़ा बाबू के नगीच पहुंची जाय छै। बलेसर कें देखथैं बड़ा बाबू ओकरा सें पूछै छै, ''की बलेसर, तों तें पटेल सिंह के खेत में काम करै छेलैं।''

''हां हुजूर, हम्में हुनकों खेत के मजूर छेलियै।''

''आरो पटेल सिंह के खेत में तों मैनेजरो छेलैं ?''

''हां छेलियै तें, मतरकि आबें हम्में हुनकों खेतों पर काम

नै करै छियै।''

''हमरा तें यहू पता छै कि पटेल सिंह नें तोरा मैनेजर बनाय के साथें-साथें खूब सुख-सुविधो देलें छेलौं। फिरू तोरा कौन दरकार पड़ी गेलौ लोन के।''

''हुजूर, आबें हम्में आपनों एकड़-दू एकड़ जमीन लै कें खेती करै लें चाहै छियै।''

''ठीक कहै छै, तों मजदूर सिनी कें केत्तो सुविधा देलों जाय, मन नै भरै छौं। जरियो टा सुविधा मिललौं नै मिललौं कि माथों पर चढ़ै के कोशिश करें लागलौ। अभियो कुछू नै बिगड़लों छौं, तों पटेल सिंह के खेत रों काम नै छोड़ों। लौटी जा खेत में काम करै लें। हम्में तोरा तोरों भलाई वास्तें भी समझाय रहलों छियौं। जहां तोरों बाप-दादा के नाभि गड़लों छौं, वांही काम करी कें तोरों मुक्ति मिलतौं। की है लोन-फोन के चक्कर में पड़ी गेलों छैं। नै सकें सकभैं।''

''नै हुजूर, आबें हम्में हुनकों खेतों में काम नै करवै। हमरा लोन मिली जाय तें हम्में करवै तें अपने खेती करवै।'' ई कहतें बलेसी के चेहरा पर मन के एक विश्वास भाव झलकी उठलों छेलै।

सुमेर सिंह के बहुत समझैला के बादो बलेसर आपनों बातों पर अडिगे रहै छै। बड़ा बाबू तबें थोड़ा गोस्साय कें बोलै छै, ''तें ठीक छै। तों पहलें पाँच हजार टका ई टेबुल पर रखी दैं तबें तोरों लोन वास्तें सोचलों जैतौ।''

बलेसर बड़ा बाबू के ई रुख देखी कें थोड़ों घबड़ाय जाय छै, मतरकि फेरू हाथ जोड़ी थोड़ों घिघियैतें हुवें बोलै छै, ''हुजूर, हम्में पहलें कही चुकलों छियौं कि हम्में ठहरलां गरीब-गुरुवा। हेत्ता पैसा कहाँ सें लानें पारवै आरो फिरू तोरों सिनी रों यदि गरीब-गुरुवा पर किरिण होतै, तें हम्में गरीब तें मरिये जैवै। तों तें हमरों मालिक पटेल सिंह कें जानवे करै छौ। ई तें हम्मूं आबें जानी गेलों छियै कि तोहों पटेल सिंह कें जानै छौ। हम्में हुनकों खेत पर बहुत दिन तक खटलें छियै हुजूर। जों आपनें कोशिश करवै तें हमरा ई लोन जरूरे मिली जैतै।''

मतरकि सुमेर सिंह पर ओकरोॅ एत्तेॅ गिड़गिड़ैवोॅ के कोय असर नै होय छै।

[५]

दत्ता बाबू नें बलेसर के मुँह देखतेॅ हुवेॅ पूछलकै, ''मतरकि अखनी तोंय जाय कहाँ रहलोॅ छैं।''

बलेसर आपनोॅ आँखी केॅ गोल-गोल घुमैतेॅ हुवेॅ बोललै, ''हम्में ई गाँव के मुखिया पटेल सिंह, जे हमरोॅ खेत के मालिको छेलै, सें मिलै वास्तें जाय रहलोॅ छियै। ओकरा सें लोन मिलै लेली फिरू बात करवै।''

दत्ता बाबू ओकरोॅ बात सुनी केॅ अचकचैतें हुवेॅ एकाएक बोली उठै छै। कुछु गंभीर बात। बलेसर जानै छै, जखनी दत्ता बाबू कोय गंभीर बात कहै छै, तखनी हुनी आपनोॅ बांही के कुर्ता ऊपर-नीचें दस बेरी जरूरे करै छै, चश्मा नाकी पर ठीक सें राखै लेली ओकरा पाँच बार संभारै छै। अखनियो दत्ता बाबू ठीक वहेॅ रं करेॅ लागलेॅ छेलै । आरो हठाते फिनु रुकी केॅ बोलै छै, ''तों की पगलाय गेलोॅ छैं बलेसर, जे मुखिया पटेल सिंह लग जाय रहलोॅ छैं। आबेॅ तोंही सोचैं, जे सुमेर सिंह नें तोरा लोन नै देलकौ, अब ई पटेल सिंह तोरा लोन की देतौ। आरो तों तेॅ जानबे करै छैं, हमरोॅ देश के सबसें बड़ोॅ दुश्मन छै हमरोॅ जाति-व्यवस्था आरो अमीरी-गरीबी के भेदभाव। आबेॅ तोरोॅ केकरो कन प्रयास करना बेकार छौ। हमरोॅ मानें तेॅ तोरोॅ पास बस एक्के सहारा बची गेलोॅ छौ। तों ओकरोॅ कन जाय केॅ कोशिश करें तेॅ हमरा विश्वास छै कि तोरोॅ खेती लेली पैसा के व्यवस्था होय जैतौ।'' एक्के साँस में एत्तेॅ बतैतेॅ-बतैतेॅ दत्ता बाबू के साँस फुलेॅ लागलेॅ छेलै। साँस

फुलै के बेमारी हुनका पौर साल सें लगी गेलों छै। ऊ आपनों साँस कें स्थिर करै लेली जेन्हैं रुकै छै कि बलेसर के अंदर के बेताबी बढ़ी जाय छै, ई जानै लेली कब, कहाँ ओकरों काम हुवें पारै।

बलेसर के मुँहों पर एक आशा के किरण फुटी जाय छै आरो ऊ बेचैनी में पूछै छै, "ऊ कहाँ दत्ता बाबू ?"

दत्ता बाबू के साँस तबतक स्थिर होय गेलों छेलै। ऊ आपनों बात कें बोलै लेली बलेसर के सहारा लेतें हुवें बलेसर के कंधा पर आपनों हाथ रखतें ओकरा समझैतें हुवें बोललै, "बलेसर, तोरों तें बाप-दादा कें हम्में जानै छेलियौ। जिनगी कटी गेलौ ई भूमि बाबू कन। हुनकों देहरी पर काम करतें आरो रिन-कर्जा लेतें-देतें हुवें । तहूँ कैन्हें नी हुनके कन जाय कें करजा मांगै छैं। हम्में जानै छियौ, वें तोरा जरूरे रिन देतौ। हुनकों तें पैसा लै-दै के कामे छै। आरो फिरू वहाँ पैसा खरचा-उरचा करै के बात नै उठै छै। कैन्हेंकि तोरों बाप-दादा कें वें चिन्हवे करै छेलौ। पूरा गांव-टोला के लोग तें छोड़ी दैं, इलाका-बियान भरी के लोग आवी कें हुनका सें करजा लै छै । यही सूद के पैसा सें देखै नै छैं, कत्ते बड़का महल खड़ा करी लेलकै। हमरो बेरा बखत लाख-दू लाख हुनिये भूमिबाबू संभाले छै।

ई बात बलेसर के मनों में धंसी जाय छै। ठीके कहै छै दत्ता बाबू। हमरो बाप-दादा नें हिनके सें पैसा-कौड़ी लै कें हमरों फूफीसिनी के शादी-बीहा करनें छेलै। तब ऊ छोटों छेलै। माय-बाबू बोलै छेलै तें ऊ सुनलें छेलै। हम्में आबें भूमियक बाबू कन जैवै। जेना भी होतै रिन-करजा लेना छै आरो हुनके सें लेवै।

बलेसर दूसरे दिन आपनों गांव के महाजन भूमि चाचा के घर पहुंची जाय छै। घर की छै, महल छै। एतें बड़ों हाता तें ओकरों मालिक पटेल सिंह के भी नै होतै, जेत्ता बड़ा में भूमि बाबू के छै। ठीक कहै छेलै दत्ता बाबू। खूब पैसा कमैलें छै भूमि बाबू नें। एक बीघा रों हाता तें जरूरे होतै। एक क्षण लेली बलेसरों के मन में आवै छै, जों ऊ केला के खेती में सफल होलै तें यही रं हवेली बनतै । चारो बगल

शीशम के आरी बनाय देलें छै। बीचों में महल छै। केत्ता अच्छा रंगोली टीपलों घर छै। बाहर रों मिसतरी नें बनैलें छै । दादा बोलै छेलै। घर के आगू में एगो बड़का रं सीढ़ी छै। ओकरा पर चढ़थैं बड़का गो बरामदा छै। बरामदा के बाद भूमि बाबू के बैठे लेली बड़का ठो बैठकखाना। जेकरा में भूमि बाबू आरो हुनकों मुनीमजी बैठे छै। बलेसर बच्चा में केत्तें आय-जाय छेलै, ई घर में आपनों बाप-दादा के साथ। भूमि बाबू के नाम बहुते छै ई गांव में। भूमि बाबू के नाम जी पर ऐथैं हुनकों समूचा बात ओकरों दिमागों में घुरें लागै छै।

भूमि बाबू गोरा रं के लंबा-चौड़ा शरीर वाला लोग छै। रंग हेत्तें गोरा छै, जेना रोज दूधे सें नहैतें रहै। भगवानों के देलों रंगे नै छै, मतरकि मुंहो-कान सुन्दर छै। लम्बा ठारो नाकों पर बड़का-बड़का आँख। मूँछ बड़ों-बड़ों रोबदार। भूमि बाबू कें कोय नै कहै कि लेन-देन वाला साहूकार छै।

जखनी सीढ़ी पार करी कें बलेसर भूमि बाबू के पास पहुँचै छै, बाहरे सें हाथ जोड़ने-जोड़ने तें ओकरा हठाते आपनों नगीच देखी कें भूमि बाबू थोड़ा हतप्रभ होय छै। मतरकि तखनिये हुनी एकरों आवै के बातों सें एकदम तटस्थ होय जाय छै। भूमि बाबू कें ई समझतें देर नै लगै छै कि ई हमरा पास कुछु मांगै लेली ऐलों रहै। भूमि बाबू आपना कें हेने दिखाय रहलों छै कि ओकरा अभी बात करै के जरियो टा फुरसत नै छै। मतरकि बलेसर मन में पक्का ठानिये कें ऐलों छै कि ऊ आय भूमि बाबू सें करजा लैइये कें जैतै। होकरों लेली जेत्तें देरी होकरा यहाँ बैठे लें पड़ै, ऊ यहाँ बैठतै। आरो होकरा लेली ऊ गोड़ो पकड़ी लेतै। वें गोड़ पकड़िये लेतै, तें की होतै। पुश्त-पुश्त के जिनगी तें हिनके सिनी के गोड़ों के नीचें कटी गेलों छै। आय हम्में गोड़ पकड़िये लेवै तें की। आरो बलेसर आपनों कोनो बात के ख्याल नै करी कें सीधे गोड़ पकड़ी लै छै। भूमि बाबू आपनों गोड़ों कें झटकी कें हटाय लै छै। फेनू कुछु नरम-नरम होतें हुवें पूछें लागै छै, "की बलेसर, कोनो बात छौ की ?" तबें बलेसर अकचकाय कें भूमि मालिक के

तरफ देखी फेनू हाथ जोड़ी कें बोलै छै, ''हां मालिक, हम्में आपनों खेती करै के सोचै छियै।''

''मतरकि, तों तें पटेल सिंह के खेत में काम करै छैं, फिर ई कौन खेती के बात करी रहलों छैं।''

''आबें हम्में आपनों केला के खेती करवै।'' बलेसर आपनों बात कें जोर देतें हुवें कहै छै।

''तों जानै छैं, आपनों खेती करै में कत्तें टका के जरूरत होय छै ? आरो फिरू ई महीना-दू महीना वाला खेती नै छै। पूरे एक बरस रों खेती छै। तों हेत्ता दिन ई खेती करें पारभैं। बाहरों सें देखै में ई खेती-बारी बढ़िया लगै छै बलेसर, मतरकि भीतर हुलकला सें सब मरम समझै में आबें लागै छै। ई सब खेती-बारी बड़ा-बड़ा लोग वास्तें छै। जे आपनों पैसा कें जरियो टा पैसा नै समझै छै, लगैतें रहै छै । तबें ऊ जाय कें एक साल में कुछ पैसा बनै छै। खाद-बीज के दाम आबें आकाश छूवी रहलों छै रे बलेसर।'' भूमि बाबू नें बलेसर के मनसा कें समझतें हुवें होकरा हारै के कोशिश में कहलकै। ''हम्में तें यूं कहभौ, तों है सिनी बात दिमागों सें निकाली दैं आरो वही पटेल सिंह रों खेती में ठाठ सें मैनेजरी कर आरो दोनों जून के रोटी खो।''

बलेसर, जे भूमि बाबू के बात कें बड़ा ध्यान सें सुनी रहलों छेलै, ओकरों विश्वास कें कहीं सें डिगाबें नै पारलकै। बलेसर आपनों मनों के विश्वास कें आरो गहरैतें हुवें बोललै, ''जे भी हुवें मालिक, आबें हम्में करवै तें आपनों खेती। आरो हम्में पैसा लेली ऐलों छियै, मनों में एगो विश्वास लेलें कि आपनें हमरों बाप-दादा कें रिन-करजा दै छेलौ आरो हमरो बाप-दादा चुकाइये कें गेलों छै । हम्मूं आपने के ई रिन चुकाय देवै।'' भूमि बाबू मनेमन सोचै छै—ई बलेसर हमरों पीछा नै छोड़तै, तभियो एक ढेला फेंकी कें हुनी टालै के अंतिम परयास करै छै आरो बलेसर सें बोलै छै, ''रे बलेसर, तोरों बाप-दादा के बात कुछू आरो छेलै। रिन-करजा लै छेलौ तें यही लेली हमरे द्वारी पर खटतें-खटतें जिनगी काटी देलकौ। आरो फिरू तोरो बाप-दादा रों खैलों-पीलों

शरीर छेलौ, जे खेती-बारी सें लै कें घर-अंगना तक संभारी दै छेलौ। तोरों तें ई जवानियो में शरीर केन्हों रोगिये रं होय गेलों छौ। हम्में चाहबौ करौं कि तोरों देह खटाय कें टका वसूली लै तें वहू संभव नै छौ। सब धन बुड़े वाला ही लगै छै। तों हमरों देहरी पर की काम करभैं। आरो हम्में तोरा कोय काम दियौ नै पारौं बलेसर। फिरू तोंही बतावैं, हम्में तोरा कौन बात लेली रिन-करजा देभौ ?''

''मतरकि, हम्में आपना सें वादा करी रहलों छियै मालिक कि हम्में खेती सें जे पैसा होतै, रिन चुकाय देवै।'' बलेसर फिरू आपनों बात दुहरावै छै।

''अरे बलेसर, खेती-बारी के कोनो भरोसा छै। साल भरी में की होतै, की नै होतै। आरो कम सें कम हम्में तें भविष्य के बातों पर तनियो टा भरोसा नै करै छियै। कोशी के बाढ़ कें, के जानै छै। केकरो घर-बार, खेत-पतार कखनी पानी में समाय जैतै, एकरो लेखा तें भगवानो के पास नै छै कि तोहूं है नै जानै छैं कि तोरों गांव सेमापुर के नित्यानंद के केला के खेती बारगिये आंधी-बाढ़ में दहाय गेलों छेलै, की करें पारलकै नित्यानंद। हमरा सें तें तों पैसा भविष्य में नै लेभैं, पैसा तें अभी तुरत लेभैं। आरो अखनी पैसा लै वास्तें तोहों की इन्तजाम करलें छैं।'' भूमि बाबू आपनों मनों के बात घुमाय-फिराय कें बलेसर के नगीच राखै छै।

बलेसर बहुत सोचै-विचारै के बाद ई फैसला करै छै कि ऊ आय जे होतै, केन्हौ करी कें पैसा लेतै जरूर। ऊ कुछू देर मनों में उपाय सोचै छै आरो फिरू मजबूती साथें कहै छै, ''हमरों जर-जमीन आरो खेती-बारी बंधक-रेहन पर राखी लियै मालिक। जबें हमरा पैसा होतै, हम्में छोड़ाय कें लै जैवै।''

भूमि बाबू कें आभियो तांय है बातों पर विश्वास नै होय छै कि बलेसर आपनों जमीन आरो झोपड़ी रेहन राखी कें करजा लेतै। मतरकि जमीन-जग्घा रेहन पर राखी कें करजा लै के बात सुनथैं भूमि बाबू के मनों में लावा फूटें लागै छै, जे भाव कें छुपैतें हुवें हुनी फिरू

कहलकै आरो आपनों विश्वास लेली फिरू पूछै छै, ''की हेने मुँहामुँही बोली देलैं आरो हम्में विश्वास करी लियौ। कल जों तों आपनों बात सें फिरी जैभैं तबे ।''

''तें ठीक छै मालिक। जों हमरों बातों के विश्वास नै होय छौं, तें हम्में लिखी कें दै छियै, आपने रों विश्वास लेली।'' भूमिबाबू के ईशारा पावी मुंशी जी दराज सें कजरौटी आरो एकटा सादों कागज बलेसर के तरफ बढ़ैलकै आरो वही सादा कागजों पर बलेसर नें आपनों कजरौटी वाला अंगूठा जेन्हें बढ़ैलकै, वैन्हें ओकरों अंगूठा जहाँ-के-तहाँ रुकी गेलै।

भूमि बाबू कें बलेसर के मनों के बात कें समझतें देर नै लागलों छेलै। से हुनी कहै छै, ''देख बलेसर, अभियो सोची ले, हम्में तें कहभौ कि करजा-रिन लै के चक्कर में आपनों पुस्तैनी घर-जमीन कोय रेहन पर नै रखै छै। लोग मरियो जाय छै, तहियो कोय आपनों डीह नै बेचै छै, नै रेहन रखै छै।''

बलेसर नें भूमि बाबू के बात सुनलें छेलै आरो मनों के भाव छुपैतें हुवें झट सना कहलें छेलै, ''नै, मालिक नै। हम्में तें ई सोची रहलों छेलियै—अंगूठा के टीपा ई कोरा कागज पर कहाँ देलों जाय ?'' आरो बलेसर मुंशी जी के बतैले अनुसार काजल सें आपनों अंगुली के निशान दै दै छै। भमि बाबू कें जब विश्वास होय जाय छै, तबें ऊ आपनों कोठनुमा बक्सा सें बीस हजार टका निकाली कें पाँच बेर हाथ सें गिनतें हुवें फिरू मुंशी जी कें गिनै लें दै छै। मुंशी जी तीन बार मुंह अंगुरी छुवाय कें रुपया गिनै छै। आरो तबें भूमि बाबू बलेसर के हाथ में देतें हुवें बोलै छै, ''ले बलेसर, बढ़िया सें गिनी ले ।'' आरो जब तक बलेसर रुपया लै कें गिनतें रहलै, तब तक भूमि बाबू आँख गड़ाय-गड़ाय कें रूपया कें देखतें रहलै।

आय केत्ता दिन के बाद बलेसर के मन के बात पूरा होय गेलों छै। ओकरों चेहरा पर पैसा पैला के बाद एगो निश्चिन्ती आवी गेलों छै। आबें मने-मन केत्ता बात सोचतें हुवें वें पैसा कें आपनों कमर

के अंटी में खोसतें हुवें घर आवी जाय छै। बहुत दिन बाद आय बलेसर कें वहें बिछौना, जे कल कांटा नाँखी चुभै छेलै, रुइया नाँखी मुलायम लगी रहलों छै। बलेसर आपनों कमर में बंधलों रुपया कें बार-बार छुवै छै आरो मने-मन सोचै छै—ई पैसा हम्में केना संभरी कें रखियै। जों आय गुलबिया यहाँ रहतियै तें वहीं एकरा संभारी कें रखतियै। हर बार बलेसर कें गुलाबो के कमी अखरी जाय छै। मतरकि आय नै छै तें की, कल गुलबिये हमरों जिनगी के रानी होतै आरो बलेसर के आंखी में गुलबिया फूलों सें सजली रानी नांखी रंग-रूप में उतरी ऐलों छै। ऊ देखै छों, केला खेती में वें एत्तें पैसा कमाय लेलें छै, हेने बुझाय छै जेना बलेसर एक बड़का सेठ होय गेलों छै आरो गुलबिया ओकरों सेठानी। केत्ता रंग के सपना में डूबलों-उतरलों कबें बलेसर कें नींद आवी जाय छै, ओकरा पता नै चलै छै।

जोन दिनों सें बलेसर करजा करी कें एत्ता-एत्ता रुपया लानलें छै, ओकरों मनों के चिन्ता आरो चिन्तन बढ़ी गेलों छै। तीस साल के बलेसर के आंखी में पचास वर्ष के सपना पलें लागलें छै। ऊ रोज केला खेती के सपना देखी रहलों छै। केला खेती कोय हेनों-तेनों नै, मतरकि खूब बढ़िया फसल तैयार करै के बात सोची-सोची बलेसर मने-मन खुश होतें रहै छै। बलेसर के मनों में दीपक घोष सें लै कें हीरक सान्याल के नाम आवै छै। ई सिनी जमीन लीज पर खेती करै वास्तें दै छै। सोचै छै, वें दीपक घोष के जमीन लेतै, कैन्हेंकि हुनकों जमीन बढ़िया दोमट वाला छै। दीपक घोष के पास तीसो-तीस बीघा जमीन छै। पूरे सेमापुर गांव में। दू-तीन जगह हुनका जमीन छै। कुछ बावनगंज में छै आरो कुछ सकरैली में छै। मतरकि हम्में बावनगंजवाला जमीन लेवै। कैन्हेंकि बावनगंज वाला जमीन बहुत बढ़िया छै। खेती करतें-करतें एत्तें तें हम्में जानिये गेलों छी कि केला के खेती वास्तें दोमट मिट्टी होना बहुत जरूरी छै। मालिक रों खेती करै के क्रम में कैबार हम्में बावनगंज गेलों छेलियै। वहां के जमीन हमरों देखलों-सुनलों छै। ऊ दीपक घोष सें बीघा-दू बीघा जमीन लीज पर लै लेतै।

आधा पैसा अभी दै देवै आरो आधा पैसा बादो॑ में देवै, फसल कटला के बाद। आरो जहां तक जोताय के बात छै, जमीन कोड़ै लेली ट्रैक्टर वांही पर मिली जैतै, मुद्दर साव या तांती राम के। मतरकि वें कै दिन सें मनेमन हिसाब लगाय रहलो॑ छै तें॑ लगै छै, नै ट्रैक्टर सें कोड़ै में बहुत पैसा खरचा होतै। ऊ भुथरी या सीताराम के हल-बैल लैकें॑ खेत जोती लेतै। वहां मंगरू सें बात होय गेलो॑ छै। पुत्तल मोतीलाल बाबू कन सें लै लेतै आरो पुत्तल भी ऐन्हों॑ लेतै, जे बीट में बीचो॑ सें लिकलतें हुवें॑, जेकरो॑ जड़ मोटो॑ रहे॑ आरो पत्ती तलवार के समान पतला आरो नुकीला कोनावाला रहै। ऐहनो॑ पुत्तल मोतीलाल बाबू के छै। हुनको॑ खेती ई गांव में मशहूर छै। बलेसर सोचतें-सोचतें सब किसिम के केला गाछ के बारें में सोचे॑ लागै छै। मालभोग, अमृतसागर, चम्पा, चीनी चम्पा, अल्पना, भीमकेला, नेन्द्रन। मतरकि हम्में लगैवै तें॑ खाली अल्पना आरो मालभोग।

जहां तक खेत में नाइट्रोजन, पोटाश आरो फासफोरस के दरकार पड़तै,॑ऊ सबसें अच्छा कमानी में सें केकर्हौ कोय छै, यें मुत्तलिक वें मोतीलाल बाबू सें जरूरे पूछी लेतै, बड़ी अनुभवी किसान छै। मोतियेलाल बाबू सें पूछी कें॑ वें आपनो॑ खेत में नाइट्रोजन आरो पोटाश छिटतै। हेना तें॑ फासफोरस के भी जरूरत पड़ै छै, मतरकि नाइट्रोजन आरो पोटाश के बेसी जरूरत पड़ै छै। खैर अभकी तें॑ खेती के पैहलो॑ बरस छै, तें॑ यै लेली खाद-पानी पौधे के अनुसार करै लें॑ पड़तै। जेना कि केला गाछ के तना कें॑ चारो तरफ एक-डेढ़ बित्ता छोड़ी कें॑ आधा बित्ता के पट्टी रं करै लें॑ पड़तै। ई सब काम वें आपनो सें करी लेतै, ई सब होकरो॑ करलो॑ होलो॑ छै। जहाँ तक पटवन के बात छै, पानी पटावै लेली दयानंद बाबू के पम्पिंग सेट लै लेतै । ई सब कामों॑ में गुलाबो के साथ बहुते छै, कैन्हेंकि गुलाबो तें॑ नित्यानंद बाबू के खेतों॑ में काम करै छेलै। बलेसर आगू सोचै छै।

जैन्हें-जैन्हें समय आगू बढ़लो॑ जैतै, तें॑ खाद दै वास्तें पुत्तल सें दूरियो बढ़तें॑ जैतै। गुलबिया आरो हम्में मिली-जुली कें॑ हेने खेती

करवै कि देखैवाला देखतै। हम्में यहू जानै छियै कि बीचो-बीच में सब गाछ कुछु बड़ों होय जैतै तें ओकरों पत्ता काटै लें पड़तै आरो गुलाबो ई सब काम बढ़िया सें जानै छै। बलेसर जानै छै कि केला खेती में देखभाल के बड़ी जरूरत होय छै। पुत्तल गाछ बड़ों नै होलौं कि ढेर बच्चा वैसें फुटें लागै छै। यै बच्चा सिनी कि गाछ बढ़ै लें दै छै। मतरकि कोय चिन्ता के बात नै छै। जब-जब शम्स के नगीच दोसरों पुत्तल हुवें लागतै, तबें हम्में आरो हमरी गुलाबो मिली कें काटी लेवै।

ई सब खेती-बारी के काम हमरा सें ज्यादा तें गुलाबो जानै छै । हम्में तें ज्यादा खाद-बीज लानै में रहवै। खेत पर नहिंयो रहभै, तहियो गुलाबो हेकरा बढ़िया सें संभाली लेतै। खूब मेहनत करवै हम्में आरो गुलाबो मिली कें—चारो तरफ ओकरो मन मोताबिक गाछ-बिरिछ लहराय रहलों छै। हरा-हरा पत्ता देखी कें बलेसर रों मन एत्तें हरा-भरा छै कि कुछु कहलों नै जाय। चारो तरफ खानी फुटी गेलों छै। खानी फुटला के साथें गुलाबो बलेसर सें कहै छै, "यहें रं ठड़ा-ठड़ा आपनों खेती निहारबों कि है खानी बेचै लेली गाड़ियो लानभौ। देखै छौ कि की रं खानी तोरों जवानी नाँखी फुटी गेलों छै।" गुलाबो देखै छै कि बलेसर ओकरों बात सुनतौं अनठियाय देलें छै आरो बात बदलतें हुवें कहै छै, "कोनो की पहलें खेती-बारी नै करलें रहियै।" "बँसबीटीं सें बाँस कीनी लिहौ उरमा के बाबू सें। वें अच्छा बांस देतै आरो सस्ते में देतै।" गुलाबो बलेसर कें समझाय छै।

आरो देखतें-देखतें बलेसर के आंखी में पाँच महीना एक क्षण में गुजरी जाय छै। वें देखै छै कि केला के गाछ खूब बढ़ें लागलें छै । बलेसर कें देखी खूब आचरज लागै छै। ऊ अचरजे में डूबलों छै कि गुलाबो ओकरों गाल में हलका सें आपनों औंगरी धसैतें हुवें कहै छै, "हेना आचरज सें की निहारै छौ। आखिर हमरों दोनों के मेहनत केन्हों रंग लानलें छै। सबके जुवान पर बस एके बात छै कि गुलाबो आरो बलेसर मिली कें केत्तें बढ़ियाँ खेती करलें छै। देखै लायक खेती छै। वाह, बलेसर वाह।"

बलेसर कें लागै छै कि गुलाबो यहें सब बोललों चललों जाय रहलों छै, जेकरों उत्तर में बलेसर कहै छै, ''नै गुलाबो, नै। है सब जे लहलहाय रहलों छै, सब तोरों खून-पसीना के मेहनत छै। तोरों आत्मा के खुशी छै है गाछ-बिरिछ आरो फल।'' फिरू बलेसर यहू सपना देखै छै कि ओकरों खेत के पास ट्रक ठेला लागलों छै। एक सौ रुपया खानी सें वें कम में बात नै करतै। एतने नै, ट्रकवाला ओकरों मुँहमांगा दाम दै लेली तैयार छै। कहाँ-कहाँ केरो ट्रक नै लागलो छै। कलकत्ता, बनारस, उत्तर प्रदेश, पटना आरो आजमगढ़ के व्यापारी ठाड़ो छै ओकरों माल लै लेली। बलेसर के भाव बढ़ी गेलों छै। होकरो लगै छै कि वें आज जेत्तें दाम लगैतै, उत्ते टका व्यापारी देतै। मतरकि वें कुछ नै करतै, बिना गुलाबो के पूछलें। से वें खेते के एक कोना में खड़ी गुलाबो के नगीच पहुँची जाय छै।

गुलाबो आपनों लगैलों गाछ-बिरिछ आरो बनकेल कें खूब गौर सें छूवी-छूवी कें देखी रहलों छै। बलेसर ओकरा है रं बनकेल कें छूवी-छूवी कें देखला पर टोकै छै, ''तों ई सब्जी पतार वाला गाछ लगैनें छौ। फल के कोनो व्यापारी ई गाछ लेतौं ?'' तबें गुलाबो बोलै छै, ''हमरा कोय व्यापारी सें की काम छै। हमरों ई बनकेला कें वें व्यापारी लेतै, जे व्यापारी हमरों छै। जे हमरों तन-मन के व्यापारी छै।'' गुलाबो के बात सुनी कें बलेसर कें लागै छै कि ऊ ठठाय कें हँसी पड़लों छै आरो सचमुचे में जखनी बलेसर के सपना टुटै छै, ई सब बात याद करी कें ऊ जोर सें ठठाय कें हँसी पड़ै छै। आपनों आस-पास के सब जगह कें गूजैतें हुवें।

[६]

सबनें देखलकै, सबनें देखी रहलों छै गुलबिया आरो बलेसर के मेहनत। ठीक आपनों सपने रं बलेसर नें खेतियो करी कें सेमापुर वाला के सब खेतिहर के आँखी चौंधियाय देलकै। दीपक घोष सें दू बीघा जमीन लेला के बाद वें खेतों में गुलबिया साथें जोन दिन पहलों हर गाड़लें छेलै, वहीं दिनों सें गुलबिया के खून-पसीना ऊ माटी सें सनी कें हलफलावें लागलें छेलै। पहलों हर गाड़ै के पहलें बलेसर गुलबिया साथें शिव मंदिर गेलो छेलै। जे मंदिर सत्यनारायण जायसवाल नें आपनों माय-बाबू के स्मृति में बनैलें छेलै।

आरो वहीं में बलेसर गुलबिया के संकेत पावी हेनो पूजा करलकै कि गांव के दूए-चार बड़ों-बड़ों हेनों करें पारतै। धुबनों-गुग्गुल साथें चंदन के टुकड़ा मंगवैलें छेलै गुलबिया नें। मंगवैलें की छेलै, आपने सें एक-एक समान कीनी ऐलों छेलै हटिया सें, बिना कुछ बात सोचलें-विचारलें। होना ई पूजा होकरे घर के छेलै । पंडितो करलें छेलै वें जे ठीक-ठीक सें संस्कृत के पाठ करें पारै। मंतरे पर तें भगवान खुश होय छै। जों मंतरे गलत होतै तें भगवान धन- सम्पत की देतै। आरो वहै दिन सें गुलबिया आपनों मालिक नित्यानंद बाबू के काम छोड़ी देलें देलै। मंदिर में पूजा करला के बाद बलेसर मुद्द के हर खेतों में राखलें छेलै। गुलबिया नें बड़ी नेम-धरम सें हरों के पूजा करनें छेलै। खेतों में सब पूजा-पाठ करी लेला के बाद दोनों नें मिली कें आपने सें पूरा खेत जोतना शुरू करी देलें देलै। यही नै, दोनों हेने मिली-जुली कें खेती करै में जुटी गेलों छेलै, जेना कोय आपनों आवैवाला बच्चा-बुतरू के देखभाल में जुटी जाय छै।

आय एक-डेढ़ महीना बीती गेलों छै। खेत आबें तैयार छै खेती करै लेली। आषाढ़ शुरू होतै। बलेसर नें मोतीलाल बाबू कन सें पुत्तल लानी कें लगाय देनें छै। गुलाबो सब जानै छै कि बलेसर खाली आपनों किसिम के गाछ लगैतै, से ऊ आपनें सें खोजी-ढूंढी कें आपनों मोस

आरो बनकेला केॅ किनारी में लगाय देनें छै।

समय देखतेॅ-देखतेॅ बीती जाय छै। आबेॅ पुत्तल सें हरा-हरा पत्ता निकली गेलोॅ छै। गुलाबो आपनोॅ सबटा अनुभव के खूब उपयोग ई खेतोॅ में करी रहलोॅ छै। जैन्हें गाछ में कुछू पत्ता निकलेॅ लागलेॅ छेलै, ऊ दौड़-धूप करी केॅ ओकरा में दवाय नाइट्रोजन आरो फास्फोरस छिटी देलेॅ छेलै। ई सब करै वास्तें गुलबिया केॅ कोय गाछ-बिरिछ के डॉक्टर-वैध के नगीच जाय के जरूरत नै छेलै। ऊ बचपने सें खेतोॅ में काम करतें ऐलोॅ छै आरो आबेॅ तेॅ ओकरोॅ जिनगी के बीस बरस बीती गेलोॅ छै। बलेसर आपनोॅ खेतोॅ पर बैठलोॅ-बैठलोॅ गुलाबो केॅ देखतें रहै छै। आरो गुलाबो छेली कि दिनभर आपनोॅ काम में भिड़ली रहै छेली। ओकरा अब दिनभर काम करै सें फुरसत नै छेलै। गाछ केॅ केना की करना छै, कबेॅ दवाय देना छै, कबेॅ पत्ता काटना छै, कबेॅ पानी पटाना छै, कबेॅ पुत्तल काटना छै, ई सब काम खाली गुलाबो ही करी रहलोॅ छै।

बलेसर आपनोॅ खेतोॅ में लहलहैतेॅ गाछ-बिरिछ केॅ देखी आचरज करै छै। आरो ओकरा यहो आचरज लागै छै कि ई सब काम गुलाबो नें केत्ता बढ़िया सें संभारी लेलेॅ छै। बलेसर मनेमन सोचै छै ई गुलाबो हमरा पर जरियो टा काम के भार नै पड़े लेॅ दै छै। हेनोॅ कोय काम नै छै जे गुलाबो नें नै करलेॅ छै। खेत केॅ देखी हेने बुझाय छै, जे आय खेत के रंग-रूप छै, जों वें आपना सें करतियै तेॅ ई रूप-रंग नै होतियै। ई तेॅ गुलाबो छै, जे खेत केॅ आपनोॅ बच्चा सें भी ज्यादा परेम दै छै। नै आपनोॅ तन के ख्याल छै, नै तेॅ सुध। केत्ता बेसुध होय केॅ काम करी रहलोॅ छै। हम्में जबेॅ-जबेॅ खेती में हाथ बंटाय लेॅ जाय छियै, तबेॅ ऊ हमरोॅ हाथ पकड़ी केॅ हटाय दै छै। हरदम एक्के बात कहै छै, "तों हमरोॅ है छोटोॅ-छोटोॅ बच्चा सिनी केॅ हाथ नै लगैइयौ। केत्ता जतन सें एकरा हम्में बड़ा करी रहलोॅ छियै । जबेॅ ई बड़ा होय जैतौं, तबेॅ तोहें एकरा सें खेलियौ।"

गुलाबो के ई बात पर बलेसर खूब गंभीरता सें सोचै छै आरो

एकरों मानें ढूंढ़ै के प्रयास करै छै। कुछू-कुछू मानें वें भी पकड़ै छै आरो जेत्ता मानें पकड़ै छै, ओकरा सें चार गुना ज्यादा ओकरों बदन में गुदगुदी उठै छै। गुलबिया के बात बलेसर सोचै छै तें सोचतें चललों जाय छै। जबें ऊ दोनों बच्चे छेलै, बकरी चराय वास्तें दोनों खेत-बहियार निकली जाय छेलै। गुलबिया जे कुछू भी आपनों घरों सें लानै छेलै, ऊ सबटा हमरों आगू में राखी दै छेलै। ई कहतें राखी दै छेलै कि दोनों साथे खैबै। तों जे कुछ लानलें छों, एकरा में मिलाय दौ। फेनू गुलबिया तें की खाय, हमरे सबटा बातों-बातों में खिलाय दै, ई कहतें कि सुनै छियै, लड़का जाति कें भूख बड़ी लागै छै—कैन्हें कहै छेलै गुलबिया ई, यही सें कि ओकरों हालत गुलबिया सें छिपलों नै छेलै। द्वारी-द्वारी पर माय के नौड़ीपना करला के बादो हमरों सिनी के पेट बड़ा मुश्किल सें भरें पारै छेलै। ऊ तें धन्य छेलै बाबू, जे घर छोड़ी कें पंजाब चललों गेलै आरो पैसा लै कें लौटलै तें डीह-डाबर बनें पारलै। गुलाबो तखनिये सें हमरों घर आवी रहलों छै। जहिया सें माय मरलै आरो गुलाबो के जुआनी में पानी लागलै, तहिये सें घर आना-जाना बंद होय गेलै। आय वही गुलाबो की रं खेती में तन-मन-धन लगैलें हुवें छै। जेना ओकरे खेत आरो हम्में ओकरों पुरुख—बलेसर ई बात सोचथैं एकबार फिरू सिहरी उठै छै। सोचै छै, आय नै तें कल ई सब बात सच होने छै। वें आपनों चमकतें आंखी सें गुलबिया कें निहारै छै, जे केला के कोमल पत्ता नाँखी लहलहाय कें खेती कामों में बावली बनी गेलों छै।

[७]

आरो रोजे गुलाबो आपनों खेतों में काम-धंधा करी कें बलेसर सें अलग होय जाय छेलै, जेना चकवा चकई सें अलग होय जाय छै।

रात भर दोनों तड़पै छेलै एक-दूसरा लेली। दोनों कें हेनों दुख जिनगी में पहिलों बार अनुभव होलों छेलै।

मतरकि गुलाबो रोज दुगना उत्साह सें फिरू खेत आवै छेलै, जेना कि कोय धरती आकाश सें मिललों प्रतीत होय छै। जेना हहैली कोशी हिमालय सें निकली कें गंगा दिश भागै छै, होनै कें दोसरों दिन होतें हहैली गुलबिया बलेसर के खेतों दिश भागी जाय छेलै। आरो फिरू मिली जाय दोनों दिनभर लेली। समय आपनों तेज रफ्तार सें बीतलों चललों जाय रहलों छेलै। देखतें-देखतें आबें गाछ सिनी में खानी फुटें लागलें छेलै। गुलाबो ई सब देखी कें खूब खुश होय छेलै, कैन्हें कि पहले साल में खेती एत्तें दमदार शायदे होय छै, जेन्हों कि अभरी ई खेतों में होलों छै। बलेसर गुलाबो सें कहै छै, "ई सब तोरे मेहनत आरो सूझबूझ के कमाल छै गुलाबो।" बलेसर गुलाबो के हाथ आपनों हाथ में लै कें बहुत परेम सें ओकरों तरहथी पर आपनों अंगुरी छुवाय छै, कुछ लिखै के कोशिश में आरो कहै छै, "गुलाबो, ई सब खेती में जे कुछ होलों छै, सब तोरे परेम के कारण।" वें कहबो करै छै, "देखों, हमरों-तोरों ई परेम केत्ता सुन्दर रूपों में खिली गेलों छै। सच कहै छियौं गुलाबो—जों ई रंग खेती हम्में चार-पाँच बरस हम्में करी लेभौं, तें हम्में लखपति जरूरे बनी जैभौं। ई रंग खेती तें ई गाँवों में केकरो नै छै, जेन्हों हमरों सिनी के। अभरी जे ई खानी मोटावै तें हमरों खानी के डाक लगतै डाक, देखियौ।" यहें रंग के कत्तें बात बलेसर आरो गुलाबो दिनभर करतें रहै छै, आरो गुलाबो के मनों में सपना भुक्का-भुक्का फुलतें रहै छै। एकदम रसभरलों। महुवे नाँखी पागल बनाय दै वाला गंध आरो रसों सें भरलों।

आरो देखतें-देखतें चार महीना बीती जाय छै। सावन महीना आवै में आरो दस दिन रही गेलों छै। गुलबिया आरो बलेसर आँख फाड़ी-फाड़ी आषाढ़ के सरंग कें ताकतें ऐलों छै। यै बीचों में कैएक बार सरंग में मेघो उतरलों छै, कड़कवाला मलका साथें, मतरकि असली बरसात तें सावने के। सावन उतरतै, खेत-बहियार खानी के महक सें

महमह करें लागतै। आरो सावन के उतरतें ठीके बलेसर के खेत गंध सें बौरावें लागलें छेलै। बिकै वास्तें एकदम तैयार। हेनो खेतिये होलों छै कि केकरो नजर लगी जाय। छोटका किसान सें लै कें बड़का किसान तक एक्के बात दोहराय रहलों छै, ''जे हुवें, अभरी खूब नफा कमैतै बलेसर।'' आरो ई सब बात के चरचा कानो-कान होतें हुवें पटेल सिंह तक पहुंची गेलों छेलै कि बलेसर अभरी बहुत बढ़िया खेती करलें छै। पटेल सिंह ई गांव के मुखिया छेकै आरो कोय हुनकों सामना में हुनके मजदूर के बड़ाय करें, हुनी ई बरदाश्त करै वाला नै छेलै। कैन्हें कि आखिर हुनकों भी कोय इज्जत छै कि नैं ? पटेल सिंह ई सब बात खूब मनेमन गुनै छै कि बलेसर ओकरों मुंह चिढ़ाय रहलों छै, आरो हमरों बेइज्जती करी रहलों छै। से हुनी आपनों दिमाग दौड़ावें लागै छै कि हुनका आबें की करना चाहियों । से हुनी सब बात के पहले पता लगाय लै छै कि आखिर बलेसर एत्तें बड़ा कमाल करलकै केना ? सब पता लगैतें-लगैतें हुनका पता लगलै कि ई सब काम में कोने-कोने बलेसर कें मदद करनें छै।

पटेल बाबू ठहरलै गांव के मुखिया। कभियो केकरो देहरी नै टपै छै, मतरकि आय तें टपै लें पड़तै। कैन्हें कि ई खाली हुनके बात नै छै, एकरा में भूमियो बाबू कें फायदा छै। हुनी मनेमन सोचै छै कि छोटका लोगों के सिर पर बैठना बेकारे छै। पछियारी टोला के शेखू नें चमरटोली के बिरना कें कत्तें माथा चढ़ाय राखनें छेलै आरो फिनू आखिर में होलै कि, वही बिरना ने यूनियन बनाय कें शेखू बाबू के सब जर-जमीन तहस-नहस करवाय देलकै। रातों-रात सब फसल-तसल कटवाय लेलकै। यहू नै सोचलकै कि शेखू बाबू नें महीना-महीना तक नै, साल-साल भर ओकरों घरों के परवरिश करनें छेलै। दूसरा लूटतियै तें लूटतियै, कम-सें-कम बिरना कें तें है नै करना चाहियों । आरो नै जानें कत्तें बात सोची जाय छै पटेल बाबू नें। जों ई बलेसर कें नै रोकलों जाय तें ई हमरों सिनी रों माथों पर बैठी जैतै। आय पटेल सिंह के पैर में घिरनी लागी गेलों छै। ई सब बात हुनी आपनों बरामदा

पर टहलतें हुवें सोची रहलों छै। हुनी यदि चाहै आरो भूमि बाबू के घर खबर भिजावाय दै तें कि मजाल छै कि भूमि बाबू हमरों बात काटी देतै। छै तें रिन-करजा दै वाला ही। पैसा कमैलें छै, मतरकि आखिरकार हम्में ई गाँव के मुखिया छियै। मतरकि समय-समय के बात छै। मानलियै कि हम्में जमींदार साथें मुखिया आरो ऊ महाजन। मतरकि शास्त्र कहै छै, समय पड़ला पर आदमी कें समयेनुकूल बात-व्यवहार करना चाहियों। वही होय छै चतुर पंडित। आरो हुनी ई सोचै छै कि अखनिये हम्में जैवै भूमिबाबू कन। आरो हुनी एक पल देरी नै करै छै। अनचोके हुनकों पैर भूमि बाबू के घर दिश उठी जाय छै। रास्ता-पैड़ा के कत्तें लोग आय हुनका ई रंग चलतें देखी कें आचरज करै छै। जें पटेल सिंह एक कदम बिना गाड़ी-घोड़ा के नै चललें छै, आय पैदल छै। की बात छै, केकरो कुच्छू समझै में नै आवी रहलों छै। जत्तें लोग, ओत्तें शंका।

आरो मलकलों-मलकलों पटेल सिंह भूमि बाबू के द्वार लग पहुँची जाय छै। आपनों धोती कें संभारतें हुवें टनकलों आवाज में पुकारलकै, "अरे भूमि बाबू, कहाँ छौ ? छौ की नै।" भूमि बाबू, जे आपनों कोठली में बैठलों हिसाब-किताब में मशगूल छेलै, अनचोके पटेल सिंह के आवाज सुनी कें धड़फड़ाय जाय छै। हुनी धड़फड़ाय कें आपनों गद्दी पर सें उठी कें बाहर आवै छै। द्वारी पर पटेल सिंह खाड़ों छै—ऊपरे ताकी रहलों छै। भूमि बाबू आपनों धोती के कोंची ठीक करतें हुवें हड़बड़ैतें हुवें नीचें उतरै छै आरो पटेल सिंह सें परनाम-पाती करै छै। आपनों मनों में उठी रहलों ढेरे प्रश्न के ओझरा में बड़बड़ैतें हुवें पूछै छै, "आय आपने हमरों घर दिस ? जों आपनें खबर भिजवाय देतियै तें हम्में आपनें के घोंर चललों ऐतियै । ई तें हमरों बड़ा भाग छिकै कि आपनों रों गोड़ ई घारों में पड़लै । हमरों घोंर आय पवित्र होय गेलै।" पटेल बाबू शायद ई सब सुनै लें नै चाहै छेलै, से हुनी सीधे आपनों गोड़ घरों दिश बढ़ाय देलकै । मतरकि हठाते रुकी जाय छै, ई कहतें कि दुआरिये पर आभार करभौ कि भीतर जाय लें भी कहभौ।

भीतर जाय के बात सुनथैं भूमि बाबू एक बार जोर सें खखसलै आरो आपनों नौकर सुगना कें 'सब कुछ हटाय ले' वही खखसबों में कहै छै। सुगना–जे भूमिबाबू के साथ द्वार तक ऐलों छेलै, धड़फड़ैतें ऊपर भागै छै आरो पीछू-पीछू मध्यम गति सें भूमि बाबू पटेल सिंह साथें ऊपर चललों जाय छै।

भूमि बाबू के बहुत कहलौ पर पटेल सिंह नीचें गद्दिये पर पालथी मारी कें, जमी कें बैठी जाय छै आरो बिना लाग-लपेट के दांत चोभलैतैं-चोभलैतें कहना शुरू करै छै, "भूमि बाबू, तों तें जानवे करै छों बलेसर के, ऊ हमरों खेत के मामुली मजदूर छेलै। हम्में ओकरों मेहनत आरो ईमानदारी देखी कें ओकरा आपनों खेतों के मैनेजर बनाय देलें छेलियै। की सुख-सुविधा ओकरा नै देलें छेलियै, मतरकि की बतावौं, ई छोटों लोग कें जरियो टा सुविधा दौ तें माथे पर चढ़ी कें बैठी जाय छै। केत्ता बढ़िया मैनेजरी करै छेलै, ऊ छोड़ी देलकै। मनों में एकटा भूत सवार होय गेलै कि करवै तें आपने खेती करवै । यहाँ केरों बिलाक सें लै कें हमरा तक दौड़ लगैलकै। जब कहीं कोय काम नै बनलै तें आपनें कन करजा लै लें आवी गेलै, आरो आपनें बिना कोय माथों लगैलें करजा दैय्यो देलियै। आबें तोंही सोचों भूमि बाबू, जे मजदूर हमरा शिकस्त दियें सकै छै, ऊ कल तोरा शिकस्त केना नै दियें पारै छै।"

पटेल सिंह के बात सुनी कें भूमि बाबू के माथों ठनकी जाय छै। कहै छै, "है तें हमरा सें बड़का गलती होय गेलै, मतरकि आबें की करलों जाय ?"

आपनों गोटी के चाल ठीक पड़तें देखी कें पटेल सिंह लगलें कहै छै, "यहू सोचौ, जे जमीन आपनों एक्का पर लिखाय लेलें छौ, जों अब वहू आपनें के हाथ सें निकली जाय तें की करभौ। आपनें चाहवै कि ऊ जमीन आपनें के हाथ सें निकली जाय। आय तें दू बीघा में खेती करलें छै, कल जों वें एकरा सें पूंजी बनाय कें दस बीघा के खेती करें लागै तें कल वें महाजनी करें पारें। आबें आपनें सोचियै,

जों ऊ महाजनी करी रिन-करजा दियें लगै, तें आपनें के टक्कर में आवी जैतै। फिरू आपनें रों ई महाजनी बँटी जैतै। आरो हम्में ई कहियो सें नै चाहै छियै कि आपनें के ई कारोबार बँटी जाय।'' भूमि बाबू कें लागै छै कि ठीके में ओकरा सें जिनगी के बहुत बड़ों भूल होय गेलों छै आरो पटेल बाबू छोड़ी कें ओकरों ई भूल कोय नै सुधरें पारें, से हुनी दुखित स्वर में पूछै छै, ''ई भूल के सुधार हुवें पारें ? जों कुछ रास्ता छौं तें कहों, हम्में ऊ सब करै लें चाहै छियै, जे तों कहभौ ?''

पटेल बाबू के तें जेना मने के बात होय गेलों छेलै, से हुनी भूमि बाबू के कान के नगीच आपनों मुँह लाय कें आहिस्ता सें कहै छै, ''आपनें तें जानबे करै छियै कि फसल काटै रों समय एकदम नगीच आवी गेलों छै, आरो यही समय छै, जबें बलेसर कें मात करलों जावें सकै छै।'' बलेसर कें मात करै के बात सुनथैं भूमि बाबू के मुरझैलों चेहरा हठाते खिली उठै छै, जेना हुनी आपनों हारलों बाजी एकबार फिनू जीती लेलें रहें। आँखी में चमक फुटी पड़ै छै आरो अभी तक जे हुनी हाथ भर के दूरी सें भूमि बाबू के बात सुनी रहलों छेलै, आपनों मुँह बित्ता भरी हुनकों नगीच लानतें हुवें कहै छै, ''बोलों पटेल बाबू बोलों, लागले चोट हमरा की करना छै ?''

भूमि बाबू मने-मन सोचै छै—ठीक कही रहलों छै ई पटेल बाबू, आबें आपनों वास्तें होकरा कुछु-न-कुछु करै लें लागै। आबें चाहे जे होय जाय, ऊ बलेसर कें आगू बढ़ै लें नै देतै।

पटेल बाबू बलेसर कें मात दै के नुस्का बताय छै। बलेसर रों खेतों में फसल आबें कटै लेली एकदम तैयार छै। आय सावन शुरू होय में चार दिन बाकी छै। सबके खेते-खेत घूमी रहलों छै व्यापारी। सबके खेत देखी सुनी रहलों छै। हेना तें सबके फसल अच्छा या खराब तैयार तें होय गेलों छै। मतरकि बलेसर रों खेत देखी कें सब्भे व्यापारी फेनू हुन्ने फिरी जाय छै। जेना गरीबदारों में कभी-कभार सुंदर जनानी आबी जाय छै नी, आरो गांव जबार भरी के मरदाना के नजर हुन्ने लटकलों रहै छै, वही रं बलेसर के ई केला खेत होय गेलों छै। आरो

एक बात जानै छौ कि नै भूमि बाबू, ओकरोॅ ई केला खेती के राज छेकै जोगबनिया के बहिन गुलबिया। वही छौड़ी के हाथोॅ आरो माथोॅ के चलतें बलेसर के केला के खेती जवानही रङ फुटी पड़लोॅ छै। जों तोहों बलेसर केॅ एक जगह पर मात दौ तेॅ दूसरोॅ जगह पर हम्में ओकरा मात दै देबै।'' भूमि बाबू बड़की-बड़की कौड़ी रङ आँख फाड़ी-फाड़ी केॅ पटेल बाबू दिस ताकै छै, जेना हुनी पूछतें रहेॅ, ''बोलोॅ, हमरा की करना छै।'' तबेॅ पटेल बाबू नें पाँच बार आपनोॅ हाथोॅ केॅ जोरोॅ सें दबैतें हुवेॅ कहलकै, ''तोरा करना ई छौं कि टका के बलोॅ पर सब व्यापारी केॅ भड़काय देना छौं कि ओकरा सें कोय केला नै खरीदै। दाम लगावै तेॅ आधोॅ-आधोॅ, हेने लै बाला केॅ भड़काय दौ कि फसल के दाम तेॅ छोड़िये दौ, खेत के भी दाम नै मिलै।''

''समझी गेलियै। सब समझी गेलियै।'' भूमि बाबू कहै छै। ''आरो जहाँ तक गुलबिया के बात छै, हम्में ओकरोॅ व्यवस्था करी देबै । ई नट्टिन जब तांय बलेसर के पीछू-पीछू लागलोॅ रहतै, बलेसर के किस्मतो साथें रहतै। हिन्ने बलेसर के खेती जैतै आरो हुन्ने गुलबिया आपनोॅ मरदाना के घोॅर। जोगबनिया केॅ बुलाय केॅ कल्हे हम्में कही दै छियै कि आपनी बहिन केॅ कोय मरदाना के खुट्टा सें बांधी दैं, नै तेॅ तोरहे बांधी केॅ पिटबौ। भूमि बाबू, गुलबिया ससुराल जैतै कि बलेसरो रोॅ किस्मत नरक गेलै। खेती तेॅ जैबे करतै, गुलबिया के बीहा होल्हैं, यहू सारा पगलाय केॅ मरी जैतै।''

एतना कहतें-कहतें पटेल बाबू ठहाका मारी केॅ हांसै लागलै। आरो आपनोॅ इज्जत-प्रतिष्ठा सुरक्षित देखतें भूमियो बाबू 'हो-हो हा-हा' करी केॅ ठठाय पड़लै।

[८]

आरो आखिर में बलेसर रो॑ खेती खतमे भै गेलै। जे दिन सें गुलबिया बलेसर रो॑ खेतो॑ में आना-जाना छोड़लकै, वहे॑ दिनो॑ सें खेत जेना तहस-नहस होय गेलै। गुलबिया ऊ खेत लेली लक्ष्मी रहै लक्ष्मी, ऊ खेतो॑ में गुलबिया नै रहै छेलै ते॑ धनो नै रहै छेलै, जेना गुलबिया के गोड़ो॑ में लक्ष्मी के बास छेलै। जे दिनो॑ सें गुलबिया हमरो॑ खेतो॑ वास्तें आपनो॑ जान-परान लगैनें छेलै, वै दिनो॑ सें ऊ खेतो॑ में जेना लक्ष्मी के गोड़ चली के॑ ऐलो॑ रहै।

आय गुलबिया के रोजो सें खेत नै ऐलो॑ छै। नै जानो की होय गेलो॑ छै। बलेसर आपनो॑ खेतो॑ में बैठलो॑-बैठलो॑ कत्ते॑ नी बात सोचै छै। मतरकि दिमाग कामे नै करी रहलो॑ छै। सबटा जेना भुतलाय गेलो॑ छै। बलेसर खेतो॑ में कभी हिन्ने कभी हुन्ने घुरै छै। न कोय हिन्नें ताकै छै आरो नै कोय पूछै छै। बस बलेसर घूमतें रहै छै। हेनो॑ कोय लोगो नै भेटावै छै, जेकरा सें गुलाबो के बारे में कुछू पूछै। बलेसर आपना में कत्ते॑ बात सोचै छै। नै जानौ गुलाबो के॑ की होय गेलो॑ छै। मन-तन खराब छै की, हाँ हुवे॑ पारै, एत्ता खटलो॑ छै ई खेतो॑ वास्तें कि, कोय की खटतै। मतरकि जों मन-तन खराब होतियै ते॑ खबर जरूर भेजवैतियै। नै-नै गुलाबो के मन नै खराब हुवे॑, बलेसर भगवानो॑ सें मने-मन प्रार्थना करै छै।

बलेसर सोचै छै कि आखिर हुवे॑ की पारै। पहनें ई खेतो॑ पर खाली आदमिये नै, चिड़िया चुनमुन के चहचहैबो॑ होय छेलै। आय कै रोजो सें हेने बुझाय छै जेना ई खेत खेत नै रही गेलो॑ छै—मुदाघट्टी होय गेलो॑ छै। आरो मुर्दघट्टी में लहाश सांय-सांय जली रहलो॑ छै । ओकरो॑ आग के लपट सें बलेसरो नै बचे॑ पारले॑ छै। लहाश जरै सें जेना आग के लपट उठै छै, होने के॑ बलेसर के दिल सें आग के लपट उठी रहलो॑ छै। उठतियै कैन्हें नी ? बात खाली गुलबिये के ते॑ नै छेलै, बात यहाँ खेतियो के छै। बलेसर के॑ सब्भे कुछ मालूम होय गेलो॑ छै कि ओकरो॑

खेती के मोल गिराय में केकरों-केकरों हाथ छै, मतरकि गामों में कोय नै बोलै छै। असकल्ले ओकरा कुछू बोलै में भय लागै छै। बात कहीं झूठ होय जाय तबें। मतरकि बलेसर मने-मन ई बात मानी रहलों छै कि ई बात केन्हौ कें झूठ नै हुवें पारै । ओकरों खेती बरबाद करै में जेत्ते गुनाहगार पटेल बाबू छै, भूमियो बाबू ओकरा सें कम नै छै।

केला के सब टा गाछ गाछ नांखी नै लगी रहलों छै। हेने बुझाय छै जेना श्मशान में लहाश खाड़ों रहें। सबटा गाछ जीत्तों आदमी रङ आपनों किस्मत पर कानी रहलों छै। ओकरा देखी कें बलेसर के अर्न्तमन हाहाकार करी उठै छै। नै जानौं की होय गेलै ई खेतों कें। कुछू दिन पहिनें ई खेत सब्भे के नजरों में लक्ष्मी के वासों छेलै। आय अनचोके एकटा शमशान घाट भै गेलै। बलेसर सोची-सोची कें हलकान होय रहलों छै, होतों चल्लों जाय रहलों छै। अखनी बलेसर आरो केत्तें बात सोचतियै कि ओकरों आँखी के नगीच चार दिन पहलकों दृश्य खाड़ों होय गेलै। जबें भूमि बाबू दस ठो लठैत साथें होकरों खेतों पर चढ़ी ऐलों छेलै आरो कहलें छेलै, "की बलेसर, तोरों तें पैसा लेलों आय एक बरस सें बेसीये होय गेलों। रूक्का पर तें लिखनें छेलैं कि एक बरस में पैसा सूद समेत घुमाय देभौं। मतरकि तों तें सूद दै के बात तें दूर—हमरों मूल भी नै लौटाय लें ऐलैं। बहुत दिन हम्में तोरों आसरा देखी लेलियौ। सोचलियै कि तोरों केला बिकी जैतौ तें आपने आबी कें पैसा घुमाय देभैं। मतरकि तोरों केला फसल बिकला के बादो हमरा एक टा फूटी कौड़ीयो सूंघाय लें नै ऐलैं। आरो अबें हम्में एत्ता इंतजार नै करै सकै छियौ।" आरो कत्तें नी बात भूमि बाबू खाड़े-खाड़ बोललें गेलै, मतरकि बलेसर के कान जेना कुछू नै सुनें पारी रहलों छेलै। सौंसे शरीर जेना पत्थर के होय गेलों रहें। आबें तें बलेसर सिवाय एक टा बूत के आरो कुछू नजर नै आबी रहलों छेलै। नै तें बदन में कोय हरकत होय रहलों छेलै आरो नै तें वें आपनों जगह सें हिली-डुली रहलों छेलै। आखिर में बड़ी मुश्किल सें आपनों सौंसे ताकत लगाय कें वें कहनें छेलै।

बलेसर कें याद आबै छै की रङ कनमुहो होतें हुवें वें भूमि बाबू सें कहनें छेलै, ''मालिक जे खेती सें चालीस-पचास हजार के नफा होना छेलै, ऊ खेती के व्यापारी दाम लगैलकै बीस हजार आरो एक व्यापारी नै, सबटा व्यापारी। ई टका तें हमरो हाथो नै लगें पारलै कि खेत मालिक आरो खाद मालिक आबी कें लै गेलै। आपने कें टका दै के बात सोचथैं रही गेलियै, आबें तें हम्में यही कहबै हम्में आपनों मकान हारलां........।''

तखनी भूमि बाबू आपनों चेहरा पर केन्हों बनावटी गुस्सा लानतें हुवें कहनें छेलै, ''रे बलेसरा, तोरों ऊ श्मशान लै कें हम्में की करबौ, अपनों मुरदा गाड़बै की। मतरकि आबें तें तोरों खालो बेची कें हम्में आपनों पैसा वसूल नै करै पारौं। अबें तें तोरों वही मुर्दघट्टी पर संतोष करें पारौं।'' आरो की रंग भूमि बाबू तमतमैलों खेतों सें चल्लों गेलों छेलै। बलेसर के आँखी में एक-एक करी कें सब दृश्य घूमी जाय छै।

पैहनें तें बलेसर गुलाबो लेली अलगे परेशान छेलै, आरो ऊपर सें ई खेत के करजा। सब मार एक्के बार पड़ी गेलों छेलै। केना बरदास्त करें सकै छेलै बलेसर। ऊपर सें नीचे तांय टूटी कें रही गेलों छेलै बलेसर। भूमि बाबू के रूक्का पर लिखलों बातों के अनुसार आबें तें बलेसर के घरो-द्वार सब खतम होय गेलों छेलै। कच्चा माल कें बेसी दिन खेत में राखबों ठीक नै छेलै, ओकरा पर सें पाकलों केला। बलेसर आखिर में नौ-छौ करी कें भसाय देनें छेलै आपनों खेत। जोन खेतों सें ओकरा पचास हजार टका के फायदा होतियै, वही खेत अठारह-बीस हजार टका में जेना-तेना करी कें बिकी-बिकाय गेलों छेलै।

आरो वही दिन सें सब्भे सें बेखबर होय गेलों छेलै बलेसर। नै आबें ओकरा आपनों देहो के होश छेलै, नै आपनों जीवन के। बलेसर के कपड़ा-लत्ता एकदम मैलों-कुचैलों होय गेलों छेलै। कल तक जे बलेसर बाबू रंग बनी संवरी कें रहै छेलै, वही अबें दीन-दुखिया-साधु रङ दीखै छेलै। आरो अबें बलेसर कहाँ नहैतै, कहाँ रहतै, यहू बात

के होश नै छै। कैन्हें कि नै रहै के घोॅर रहलै ओकरा नै खाय-पीयै के पैसा कौड़ी। सब्भे जेना लक्ष्मी के घर सें जैतैं बिलाय जाय छै, होने केॅ बिलाय गेलोॅ रहै। कहै छै, जेना लक्ष्मी धीरें-धीरें घोॅर आवै छै, होने धीरें-धीरें घरोॅ सें चल्लोॅ जाय छै। मतरकि बलेसर रोॅ लक्ष्मी तेॅ कबेॅ कौन द्वारी सें ऐलोॅ छेलै आरो कबेॅ कौन द्वारी सें चल्लोॅ गेलोॅ छेलै ओकरे नै पता छेलै। बलेसर तेॅ गुलाबो केॅ ही लक्ष्मी मानै छेलै। जोन दिनां सें गुलाबो ओकरोॅ घोॅर ऐलोॅ छेलै वही दिनोॅ सें जेना सब्भे खुशी बलेसर के घोॅर दिस ऐलोॅ छेलै। आरो जोॅन दिनां सें गुलाबो गेलोॅ छेलै, वही दिनां सें जेना सबटा खुशी बिलाय गेलोॅ छेलै। बलेसर केॅ याद आबै छै कि खेत के फसल बिकै सें आठ रोज पैहनें सें गुलाबो के खेत आना बंद होय गेलोॅ छेलै। जबेॅ ओकरे लक्ष्मी आना छोड़ी देलेॅ रहै तेॅ फसल सें लक्ष्मी केना ऐतियै। आखिर वहू नै ऐलै। अजीब मतछिनतोॅ रङ जिनगी कटी रहलोॅ छै बलेसर के। कुछू देर तांय ऊ खेतोॅ में आबी केॅ फसलहीन केला गाछोॅ केॅ ताकै छै, ताकतें रहै छै, आरो फेनू लौटी जाय छै आँधी- बताशोॅ रङ वहेॅ ठाकुरवाड़ी।

अबेॅ बलेसर खाली ठाकुरवाड़ी में बैठलोॅ रहै छै। ऊ मंदिर के चौखट पर हेने बैठलोॅ रहै छै। बार-बार खाली सूना आँखोॅ सें ठाकुरवाड़ी दिस ताकतें रहै छै। बलेसर मने-मन कुछू-कुछू बड़बड़ैतें भी रहै छै। की बड़बड़ावै छै, कोय नै समझेॅ सकै छै। जों बलेसर समझतेॅ होतै तेॅ समझतेॅ होतै। ओकरा देखी केॅ तेॅ यहू नै बुझाय छै कि वें जे बड़बड़ाबै छै, वहू समझै छै कि खाली हेने बड़बड़ावै छै।

बलेसर के मोॅन होय छै कि ऊ ठाकुरबाड़ी के भीतर जाय भगवानोॅ सें लिपटी केॅ खूब कानै। मतरकि ओकरोॅ गोड़ नै उठै छै । गोड़ उठला सें पैहनें ओकरा ऊ दिन याद आवी जाय छै जबेॅ गुलबिया ओकरोॅ छाती पर आपनोॅ सर राखतें हुवें कहनें छेलै, ''हमरोॅ ई छांव हमरोॅ जिनगी सें कभी नै हटै।'' आरो एकरोॅ उत्तर में बलेसरो कहलेॅ छेलै कि बस फसल कटै भरी के देर छै, यही ठाकुरबाड़ी में तोरोॅ मांग सिंदूर सें भरी देबै। मतरकि ई सब कुछू नै हुवेॅ पारलेॅ छेलै। फसल

लुटलै तें ऊ आपनों दुखों सें बोझिल होय गुलबिया के घोंर जाय रहलों छेलै। शायद दुख सें मनों कें शांति वहीं मिलें पारै छेलै। मतरकि ऊ गुलाबो के घर तांय कहाँ जाबें पारलें छेलै। बीचे में पुरनिया रों भौजी राह रोकी कें पूछनें छेलै, ''कहाँ जाय छौ दियोर।'' पुरैनिया वाली भौजी कें पता छेलै कि ई बेरा में बलेसर असकल्ले कहाँ जावें पारै। ऊ दिन बलेसर कुछू नै छुपैलें छेलै। साफ-साफ मनों सें कही देलें छेलै, ''गुलाबो कन जाय रहलों छी।'' आरो पुरनिया वाली भौजी नें तबें ओकरा सब्भे बात बतैनें छेलै कि गुलाबो अबें ई गांव सें बाहर केकरो कनयांय होय कें चल्लों गेलै। सुनथैं बलेसर के होश उड़ी गेलों छेलै। आरो भौजी सबटा बात कहतें चल्लों गेलों छेलै, ''जोगबनी पर एक दिन नै जानौं कौन भूत सवार होलै कि गुलाबो कें जे पीटना शुरू करलकै तें दू घंटा तांय पीटतें रही गेलै बेचारी के, खलरी उतारी देनें छेलै। ओकरों कहीं ऐबों-जैबों बंद करी देनें छेलै। मतरकि ऊ आपनों जिद पर अड़ली छेलै कि जेना भी होतै, बलेसर सें मिलै वास्तें जरूरे जैतै। मतरकि ओकरों सब्भे प्रयास बेकार चल्लों गेलों छेलै। आरो एक दिन तें गुलाबो केबाड़ के सीकड़ तोड़ी कें भागै लें चाहै छेलै, मतरकि पकड़ाय गेलै। ओकरों बाद भौजाय बिमली नें गुलाबो के हाथ-गोड़ बांधी कें घरों में ठेली कें गिराय देनें छेलै। कैन्हें कि जोगबनिया के है हिदायत छेलै आपनों कनयाय कें कि अबें गुलाबो काहीं आबें जाबें नै पारै।

लोगें तें बहुते कुछू बोलै छेलै। पुदनिया माय एक दिन हमरों कानों में कहनें छेलै कि जोगबनिया कें पैसा मिललों छै कि जल्दी सें अपनों बहिन के हाथ पीला करी कें गांव सें बाहर भेजी दौ, आरो ई काम एत्ता जल्दी करना छै कि केकरो कानो-कान खबर नै हुवें, नै तें जोगबनिया के ई गाँव भरी में हुक्का-पानी बंद करी देलों जेतै। हेनों खबर गांव में उड़ी रहलों छेलै।

गुलबिया कें चार-पांच दिन तांय बांधी कें राखलों गेलै। वें अन्न पानी तें त्यागीये देलें छेलै। भौजाय जे अन्न मुँहों में दै छेलै,

सब उगली तें देबे करै छेलै, आपनों भौजाय पर थूकियो दै छेलै। एक-दू दिन तांय तें आपनों भौजाय कें खूब गारियो देनें छेलै। सबकुछ समझै छेलै गुलाबो। ओकरा यहू खबर होय गेलों छेलै कि ई सब काम ओकरों भाय-भौजाय केकरों कहला पर करी रहलों छै। मतरकि भौजाय बिमली सब कुछ सुनियो कें अनसुनी करी दै छेलै। वें जानै छै कि ई सब बातों में कोय दम नै छै। ई सब एगो बुखार छेकै, मियादी बुखार थोड़े नी छै जे कि एक बार होलै तें बार-बार होतें रहतै। ई बुखार वही बुखार छै, जेकरा की कहै छै—एन्फ्लूंजा। जे रहबो करै छै तें एक-दू दिन। बोखार उतरतें सब धीरें-धीरें ठीक होय जाय छै। आखिर कै दिन गाली देतें ई मुँहो सें। एक तें अन्न त्यागी देनें छै, कत्ते शरीरो में जान छै जे भूखलों-प्यासलों चीखतें-चील्लैतें रहतै। आरो यही होलै। एक-दू दिन बीततें-बीततें गुलाबो के बोलबों-बाजबो आरो गारी देबौ बन्द होय गेलै। समय के साथें शरीर के सब्भे ताकत छिन्न-भिन्न हुवे लागलै। एक-दू बार तें अन्न के अभाव में बेहोश भी होय गेलों छेलै गुलाबो।

दू रोज तांय बंधले रही गेलें छेलै आरो वही हालते में जबें ऊ बेहोश होय गेलै तें भौजाय नें हाथ खोली कें खटिया पर बिस्तरे नांखी बिछाय देनें छेलै। अबे गुलाबो कुछू नै बोलै छेलै। कि बोलतियै, ओकरों तें देहों के सबटा ताकते छिन्न-भिन्न होय गेलों छेलै। खाली सुन्न नांखी कभी-कभी आंख खोली कें ताकी लै छेलै। ओकरा देखी कें लोग यही कहै छेलै कि अभी तांय गुलाबो के हुकुर-हुकुर जे जीवी रहलों छै तें केकरो आवै के ही आस में।

आरो तीनो-चार दिन नै बीतलौ होतै कि आपनों चचेरों साला बसंत के साथें गुलाबो के बीहा करी देलें छेलै। गुलाबो के बीहा की होलों छेलै, बसंत खाली आबी कें ओकरों मांग में सिंदूर भरलें छेलै। गुलबिया आपनों तन-मन सें एकदम बेकार नांखी होय गेलों छेलै। की होलों छेलै, की नै होलों छेलै—कुछू नै पता छेलै गुलाबो कें। कैन्हें की घरों में जे कुछू होय रहलों छेलै, सब एक सुनियोजित ढंग सें रचलों एक नाटक मात्र छेलै। जेकरा भाग में लैवाला जोगबनी और विमली मुख

छेलै।

गुलाबो के सबटा अरमानों ॅ पर खून के धारा बही गेलों ॅ छेलै । कुछू होश नै छेलै गुलाबो के ॅ। बेहोशी के अवस्था में बसंत होकरो ॅ जीवन के मालिक बनी गेले ॅ छेलै। जों गुलाबो होश में रहतियै ते ॅ ई सब आपनो ॅ सामना में कभियो नै होय लें ॅ देतियै। मतरकि ऊ सब होय गेलो ॅ छेलै, जे गुलाबो आपनो ॅ मनो ॅ में भी नै सोचले ॅ छेलै । आस-पड़ोस के एक दूर जो ॅर जनानी आबी के ॅ गीत-लाद गैले ॅ होतै, मतरकि सब भीतरे-भीतर डरी रहलो ॅ छेलै कि नै जानौं कबे ॅ की होय जाय।

पुरनिया वाली भौजी थोड़ो ॅ थमी के ॅ कहनें छेलै, ''यहू रं के बीहा कोय बीहा होय छै। कत्ते ॅ बढ़ियां होतियै जे ई घरो ॅ में गुलाबो के बारात सजी-धजी के ॅ गाजा-बाजा के साथें ऐतियै। गुलाबो गांव भरी में एन्हो ॅ लड़की छेलै, जे कि सुंदर होय के साथें खूब होशियारो आरो सब्भे कामो ॅ में ठोस छेलै। हेनो ॅ लड़की के ससुरारो यही गामो ॅ में होतियै ते ॅ कत्ते ॅ नीक्को होतियै। की कहियौं दीयोर, दुखनी नानी नें कहनें छेलै कि गुलाबो के डोली नै जाय रहलो ॅ छेलै, ओकरो ॅ लहाश जाय रहलो ॅ छेलै। डोली राते-रात गामो ॅ सें बाहर भै गेलै। चिड़ियो चुनमुन के ॅ पता नै लागलो ॅ छेलै। हाँ, एतना लोगें जरूरे कहै छै कि एक बार राती बड़ी जोर के चीख उठलो ॅ छेलै। ऊ चीख आरो केकरो नै, गुलबिया के रहै। तोरे नाम लै के ॅ चीखले ॅ रहौं दीयोर। हे दियोर, तोहें जेकरो ॅ वास्तें जहां जाय रहलो ॅ छौ, ओकरा ते ॅ कोय दूसरे बहेलिया लै गेलौं।'' कहते-कहतें भौजी के आँख लोराय गेलो ॅ छेलै आरो बोली सचमुचे में कलपे ॅ लागलो ॅ छेलै। आरो वही कलपित्तो ॅ सुरो ॅ में भौजी दू-चार बात आपनो ॅ बातो ॅ में आरो जोड़ी देनें छेलै, ''जे भी हुवे ॅ, बड़का लोग के बातो बड़का रङ होय छै। देखैं, आपनो ॅ स्वास्थ में धक्का लगला सें कत्ते ॅ बड़ो ॅ काम करी दै छै ई बड़का लोग । जबे ॅ गुलाबो के ॅ ई सब बात पता चलतै ते ॅ वें कभियो खुश नै रहें ॅ पारतै। अखनी ते ॅ जोर-जबर्दस्ती सब्भे कराय देलकै बिमली भौजी नें—मतरकि जे कुछ करलकै ऊ अच्छा नै करलकै।

हम्में सिनी तें सब्भे दिन ई लड़का लोगों के दवाब में रहीये जैबै। तोंही सोचों बलेसर, आय ई काम गुलाबो साथें होलै कल ई घटना आरो केकरों साथें हुवें पारै। ई बड़का लोगें आपनों पैसा के आगू केकरो कोय सुख देखै लें नै चाहै छै। बस जे चाहै छै, आपनों लें ही चाहै छै । नै पैसा में कोय ओकरा सें आगू बढ़ै आरो नै कोय प्रतिष्ठा में। तोरों साथें की होलौं ? तों हुनकों सिनी के बराबरी तें नहिये नी करैलें चाहै छेलों, खाली आपनों लेली कुछू पैसा कमाय लें चाहै छेलौ। की मिललौं ? नै तें पैसा आरो नै तें प्रेम। दोनों चीज चल्लों गेलै एक्के साथ। हम्में छोटों लोगों के कोय मोंन नै होय छै, कोय इच्छा नै होय छै, कोय अरमान नै होय छै, जों बड़का लोगों सें टकराबै के बात होलौं नै कि हमरों सिनी के सबटा बात हुनकों सिनी के पैसा आगू दबी जाय छै। पैसा जे नै करबावै ऊ बड़का लोगो सें।''

बलेसर कें एक-एक करी कें सब्भे बात याद आबें लागै छै कि ऊ दस रोजो तांय पटेल बाबू सें लैकें भूमि बाबू के द्वारी तांय पहुंची कें ढेर देरी खाड़ों रहै। मिनटो तांय दोनों कें सवालिया आंखी सें घूरतें रहै छेलै, कुछू बोलै नै छेलै, आरो फेनू कभी केला खेतों में जाय कें ढेर देरी तांय कपसतें रहै आकि ठाकुरवाड़ी के देहरी पर माथों पटकतें रहै। आबें तें ओकरों आंखी के लोरो सुखी गेलों छै कानतें-कानतें। आरो देहरी पर माथा पटकला के बादो ओकरा कोय चोट नै बुझावै छेलै। एकदम सुन्नों-सुन्नों रङ होय गेलों छै बलेसर के देह-हाथ।

नै खाय के सुध रहै, नै पीयै के। नै धरान के प्रति रूचि नै, देहों के ख्याल। गुलबिया के बिना बलेसर के जिनगी सें लै कें दुनिया तक बेरथ होय गेलों छेलै, बेमतलब। श्मशान नांखी, जेकरों बीच ऊ एगो जित्तों लाश नांखी बुलतें रहै छै।

[६]

जखनी गुलबिया के आँख खुललै, वें अपना कें अनचीन्हों जगह पर पैलकै। आँख फाड़ी-फाड़ी कें सब घर द्वार दिस ताकै छै । मतरकि कोय चीज आपनों पहचानलों के नजर नै आबै छै। तीन-चार दिन के बेहोशी के बाद सौंसे शरीर एकदम निढाल रंग होय गेलों छेलै, मतरकि अपनों बदन के सौंसे ताकत लगाय कें वें कोठली सें बाहर ऐंगना में आबै छै। वें सब चीज कें गौर सें देखै छै, कोय चीज हेनों नै बुझाय, जे ओकरों घर कें रहै। आँख मली-मली कें वें सब चीज कें चीन्हे के कोशिश करै छै, मतरकि सब बेकार होय जाय छै। जहाँ ओकरों खूंटी होय छेलै, जेकरा पर वें अपनों शृंगार के सामान रखै छेलै। ऊ दिस नजर घुराय छै तें वहाँ पर एकटा फोटो टंगलों दीखै छै। केकरों छै—कुछ जनाय में नै आबै छै।

हिन्हें-हुन्हें देखला के बाद वें जोर-जोर सें चीकरलें भी जाय रहलों छै कि हमरा ई कहां लानी कें रखी देलकै ई मुँह झौंसा सीनी । ओकरों चीखै-चिल्लावै के आवाज सुनी कें गुलबिया के दूल्हा बसंत वहाँ आबी जाय छै। ओकरों हाथ जोर सें अमेठी कें बोलै छै। ई राकसिन हेनों की चीकरी रहलों छैं, ई तोरों दूल्हा के घर छौं। आरो तों अखनी ससुरार में छौ। ई तोरों भाय-भौजाय के कोनो द्वारी नै छै जे यहाँ तोहें हेना करी कें चीखवों आरो चिल्लैबों । यहाँ तोरों चीख सुनै वाला कोय नै छै। अब चुपचाप अपनों कोठली में जा आरो ई चीखबों-चिल्लैबों बंद करों ।

मतर गुलबिया पहले नांखी टांस गल्लों सें कही छै, “नैं तोंहे हमरों मरद छेकौ, न हम्में तोरों जनानी। तों हमरा पर हुकुम चलाय वाला के। तोंहें केना ई समझी रहलों छौ की तोरों हुकुम हमरा पर चली जैतों। आरो वहू में ओकरों, जेकरा सें हमरों कोय रिश्ता नै छै, एक अध्धी पैसा के भी नै। तों हमरा बातों सें बान्है वाला के होय छौ। हम्में केकरों गुलामी आय तलक नै करलें छियै। समझलों की नै।” आरो

अपनों हाथ छोड़ाय कें फिरू भागै के कोशिश करै छै, मतरकि कमजोर शरीर के कारण वहीं पर धम्म सना बैठी जाय छै। शायद ओकरों माथों चकराय उठलों छेलै।

बसंत जे बहुत देर सें अपनों कनयाय के बात सुनी रहलों छेलै, गुलबिया के बातो सें बसंत के शरीर कांसा के बरतन नाँखी झनझनाय उठै छै आरो वें वही गुस्सा में ओकरों दोनों बांह पकड़ी कें ओकरा खाड़ों करी कें अपनों आवाज कें थोड़ा आरो टांस करतें हुवें बोलै छै, ''आय तलक तें तों केकरों गुलामी नै करलों होबों, कैन्हें की तोरा होनों मरदे नै भेटैलौं। मतरकि आय सें तों हमरों सब गुलामी करबौ। आरो हम्में तोरा सें सब गुलामी करभैंभौं। कैन्हे की हम्में अब तोरों मरद होलियौं। मरद यानि मालिक। आरो जेना गुलाम आपनों मालिक के गुलामी करै छै, आय सें तहूँ अपनों ई मालिक के गुलामी करभौ। है कान खोली कें सुनी लौ।''

गुलबिया ओकरों ई बात सुनथैं अपनों मुंडी, जे नीचें झूकलों छेलै, उठैलकै आरो एक बार बसंत के मुंह दिस गोस्साय कें ताकै छै। नै जानौं, फेनू कहाँ सें ओकरा में ताकत घुरी ऐलों छेलै। आरो लगभग चीखै के सुरों में बोलै छै, ''की सबूत छै, कि तोंहे हमरों मरद छौ, आरो हम्में तोरों जोरू।''

गुलबिया के बात सुनी कें बसंत ओकरों मांगों में अपनों औंगरी रगड़तें हुवें बोलै छै, ''है जे सीती में लाल टेस सिनूर देखै छौ, वही सबूत छेकै तोरों हम्में मरद छेकियै।''

गुलबिया अपनों ओंगरी आपनों सीती पर राखलें छेलै आरो फिरू आंखी सें आपनों ओंगरी कें देखै छै, जेकरा पर लाल-लाल सेनूर उतरी आबै छै। ऊ एक क्षण लेली निस्तेज पड़ी जाय छै आरो दूसरों बार अपनों नजर कें चारो तरफ घुराय छै। हठाते ओकरों नजर वाहीं पर अलमुनियम के लोटा पर पड़ी जाय छै, जेकरा में भरलों लोटा पानी छेलै। गुलबिया झपटी कें ऊ लोटा कें उठाय लै छै आरो अपनों मुड़ी झुकाय कें सौंसे माथा धोय लै छै। पानी ढारते सबटा सिनूर भरभराय

कें धुलाय जाय छै। दहिना हाथ सें पानी ढारी लै छै आरो बायां हाथ सें अपनों माथा कें खूब जोर-जोर सें रगड़ी कें सबटा सिनूर कें साफ करै लें चाहै छै। जेना-जेना अपनों बायां हाथ कें रगडै छै, होने-होने आरो सेनूर ओकरों सौंसे बदन पर पानी के साथ मिली कें लाल टुह-टुह होय कें गिरें लगै छै। अखनी गुलबिया के मुँह-कान सेनुर पानी सें मिली-जुली कें एकदम लाल-लाल होय जाय छै। अखनी गुलबिया एकटा शक्ति रूप में ठाड़ों देवी नाखी बुझाय रहलों छै। जेना की लाल जावा के फूल लाल टस-टस रं होय छै आरो भगवती पर चढ़ै छै, होने कें लाल रं जावा फूल नांखी भरी गेलों लगै छै। हेने बुझाय छै जेना अखनी गुलबिया अपनों हाथ सें केकरो खून करी देलें रहै आरो खून के सौंसे छींटा ओकरों बदन पर पड़ी गेलों रहै। आरो एक बार होकरों ई रूप देखी कें बंसत भी भीतरे-भीतर डरी जाय छै, मतरकि तुंरते अपना कें संभाली लै छै। अब गुलबिया के सौंसे माथा एकदम सूनों होय जाय छै। आरो वें सिनूर के बहते घार कें देखतें हुवें बोलै छै, ''लें, हम्में ई बीहा कें बीहा नै मानै छी। केकरो मांग में जबरदस्ती सिनूर भरी देला सें कोय केकरों बिहाता नै बनी जाय छै। हम्में तोरों देलों सबटा सिनूर धोय कें गिराय देलियौं, अब तें नै हमरों कोय मालिक आरो नै हम्में केकरो गुलाम। अब तोहों कोन सबूत देभौ कि तोहें हमरों मालिक छेकौ, आरो तोहें हमरों मरद।''

बसंत, जे गुलबिया के ई रूप देखी रहलो छेलै, वें लोटा ओकरों हाथ सें छीनी कें एक तरफ फेंकते हुवें गुस्सा सें बोललै, ''की होलै, जों तोहें एक बार धोय देबौ तें की हम्में तोरों मालिक नै हुवें पारियै। तोरों मानला नै मानला सें की होय जैते। तों जेत्ता बार सिनूर धोबौ, हम्में ओत्ता बार तोरों मांग सिनूर सें भरी देबौं। आरो हे बें लें भरलियौं।'' ई कही कें बसंत ओकरों मुंह सें चूते गीला सिनूर कें अपनों दायां हथेली पर उतारी कें फेनू गुलबिया के सीथी पर राखी दै छै। राखी की दै छै पोती दै छै। एक बार नै दू-चार बार, होने कें जैसें गुलाबों के माथा एकदम लाल-लाल होय जाय छै, जेना ओकरों मुंह नै

रहै, कोय लाल सुरजे देहो॑ पर उगी गेलो॑ रहै।

आरो बसंत तबे॑ वही गोस्सा में कहै छै, ''समझलो॑ कि नै तोंहें, आरो अब ते॑ कोय तोरा हमरो॑ बिहैतो कहतौं।''

गुलबिया अपनो॑ शरीर के सौंसे ताकत लगाय के॑ उठै छै आरो अपनो॑ माथा के बाल पीछू करते॑ हुवे॑ हठाते॑ बसंतो॑ के कमीज के बटन घींचते॑ हुवे॑ बोले॑ लागलै, ''तों हजार बार हमरो॑ मांग में सिनूर डालबौ, आरो हम्में हजार बार हेकरा धोय डालबै।'' आरो अपनो॑ दांत पीसते हुवे॑ बसंत के कमीज पकड़ी के॑ ओकरो॑ शरीर के॑ खींचै लगै छै। गुलबिया बसंत के कमीज के बटन भी खींचले॑ जाय छै आरो अपनो॑ भीतर के सौंसे ताकत लगाय के॑ जोर-जोर सें चिल्लैने जाय छै। ओकरो॑ ई चीख-पुकार के आवाज बाहर जाय रहलो॑ छेलै। ई सब दृश्य देखै लेली अंगना में केत्ता लोग जमा होय जाय छै। नयी कनियाय के॑ देखै के उत्साह में सब ऐलौ छेलै, मतरकि ओकरो॑ ई रूप एकटा तमाशा बनी जाय छै। अड़ोस-पड़ोस के सबटा जर-जनानी घुंघटा के भीतर सें आँख फाड़ी-फाड़ी के॑ सब दृश्य देखे॑ लागै छै। बच्चा सिनी हैरत सें जे देखी रहलो॑ छै, ते॑ सबके मुंह दू फांक में बंटी के॑ रही जाय छै। जेना की बसंत आरो गुलबिया के रिश्ता अखनी दू फांक में बंटलो॑ दीखी रहलो॑ छै।

बसंत मुहल्लावाला के॑ सामना में देखी के॑ आरो गोस्सा होय उठै छै। से भीड़ के॑ छाँटै लेली ऊ गुलबिया के हाथ पकड़ी के॑ लै जाय लगै छै। मतरकि गुलबिया आरो चिल्लाय-चिल्लाय के॑ बसंत के॑ गारी दै लागै छै कि ई आदमी हमरा सें जबरदस्ती बीहा करले॑ छै। ई बीहा हमरो॑ होश-हवास में नै होलो॑ छै। एकरो॑ कहला सें की हम्में हेकरो॑ बीहाता होय गेलियै। आरो सब जर जनानी कभी गुलाबिया के ते॑ कभी बसंत के मुंह ताके॑ लगै छै। हेकरो॑ पहिले की गुलबिया आरो बेसी कुछु बोलतियै, बसंत ओकरा कोठली में लै जाय छै आरो धक्का दै खटिया पर वहीं गिराय दै छै। फेनु झपटी के॑ बाहर आबै छै आरो दरवाजा के कुंडी चढ़ाय दै छै। गुलाबो बिछौना पर गिरी के॑ कपसी-कपसी के॑ कानै

लगै छै। ई सब दृश्य देखी केॅ बसंत के माय झनकी बसंत सें बोलै छै, "छोड़ी दै बसंता तों एकरा ई कोठली में। मरै लेॅ छौड़ी देंही दू दिन आरो भूखलोॅ-प्यासलोॅ। अपने माथोॅ ठंडाय जैते। आखिर कबतक ई अपनोॅ ताकत केॅ अजमैतें। बहुत बलवाला केॅ देखलियै। ई कौन सत्ती छेकै जे तपस्या करतें रहती अपनोॅ यार-भतार के। आरो सत्ती नाखी पाबिये लेती अपनोॅ भोला केॅ। ई कलमुंही हमरोॅ घर आबी केॅ हमरा सिनी के नाक में दम करी मारलकै। जों ई सब बात पहिलें जानतियै तेॅ कभियो अपनोॅ बेटा के बीहा ऊ घर में नै करतियै। रहतियै अपनोॅ भाय-भौजाय के कपारोॅ पर। हमरोॅ कपारोॅ पर पटकी देली ई बिमली नें। नै जानोॅ की कही केॅ बसंत केॅ बुलैलकै आरो वहाँ ई आफत केॅ हमरोॅ माथा पर पटकी देलकी। पागल, बताशोॅ केॅ की हमरे लेली रखलकी छेलै ऊ बिमली। आरो कोय घर नै मिललै, जे हमरोॅ बेटा केॅ वहां फंसाय देलकी। कब तलक हमरा ई पागल कनयाय केॅ दोही लेॅ लागतै। बिमली केॅ आरो कोय मुड़ै लेॅ नै मिललै तेॅ अपने भाइये मिललै। बहिन होय केॅ डायनपनो उतारलेॅ छै अपनोॅ भाय पर। है बीहा थोड़े करबैलेॅ छै।"

बसंत के माय के आवाज जोर पकड़लोॅ जाय छै, एत्तेॅ जोर की गुलाबो अपनोॅ कपसबोॅ छोड़ी केॅ अपनोॅ सासोॅ के बात सुनेॅ लागै छै। घंटा आध घंटा झनकला के बाद बसंत माय चुप होय जाय छै। बाहर के सबटा हल्ला-गदालो शांत होय जाय छै। सब लोग जाय चुकलोॅ छै। आरो सौंसे घरोॅ में चुप्पी पसरी गेलोॅ छै। गुलबिया अपनोॅ आँख मुंदी लै छै। आरो आँख मुंदतै ऊ कहीं लौटी जाय छै अपनोॅ अतीत में। अतीत के सबटा बात सिनेमा रील नांखी ओकरोॅ दिमाग पर उतरेॅ लगै छै।

[१०]

ऊ दिन जबें वें खेत जाय लेली तैयार होलों छेलै, भाय नें खेत जाय सें मना करै छेलै। भाय के बात उठाय देनें छेलै आरो जाय लें निकलै छै, ई देखी कें जोगबनी गुस्साय गेलों छेलै। ओकरों हाथ पकड़ी लेलें छेलै आरो गाल पर एक थप्पड़ जड़ी देलें छेलै। ओकरों बादो वें केन्हों हाथ छोड़ाय कें भागै रों कोशिश करलें छेलै। ऊ गिरी पड़लों छेलै। तखनिये भौजायो बिमली आबी गेलों छेलै। ओकरा भर पांजा पकड़ी कें घर भीतरी लें गेलों छेलै। तखनी की रं बाघिन बनी कें वें अपनों भौजाय कें बिछौना पर गिराय देलें छेलै आरो पता नै वें अपनों भौजाय कें की करी देलें रहतियै जों तखनिये भैया नै आबी गेलों रहतियै। भाइयो ओकरों रूप देखी कें डरी गेलों छेलै। हमरों ऊ रूप-बिंडोवो वाला आंधी-तूफान वाला बडका-बड़का गाछी कें जड़ों सें उखाड़ी दै वाला अंधड़ बताश। तहियो गोस्साय कें दांत पीसतें भैया बोलै छै, ''आय सें तोरों खेत जैवों बंद।'' हम्में गोस्साय कें पूछलें छेलियै, ''कैन्हें ?''

भाय पूछनें छेलै, ''कैन्हें, हौ की तोरों आपनों खेत छौ कि तों वहाँ जैबे करबे ? ऊ के होय छौ तोरों ?''

'के होय छौ तोरों', ऊ ई बात सुनथैं तखनी की रं के होय गेलों छेलै। ओकरा लागलों छेलै की जीवन के आखरी बेला में ओकरा सें कोय एक सत्य बात पूछलें रहै। आरो तब झूठ की बोलना छेलै। वहू मुंह फाड़ी कें साफ-साफ कही देलें छेलै, ''सुनै लें चाहै छौ तें सुनों, बलेसर के होय छै हमरों ? बलेसर हमरों होय वाला पति छेकै, हमरों सुहाग। आरो सुनी लें। हाँ, हाँ, ऊ हमरों खेत छै। एत्ता दिन हम्में ऊ खेत सें अपने नै, तोरो दोनों के पेट भरलों छेलियै। तखनी कैन्हे नै रोकलें छेलौ, जे आय हमरा कैन्हे ऊ खेत जाय सें रोकी रहलों छौ।

आय दोनों के अंतड़ी भरै वाला कोय दूसरों घरों में आबी गेलों छै की ? याकि हमरा घरों में बांधी कें अब हमरों देहों के कमाय

खाय ले॑ चाही छौ''।

हमरो॑ बात सुनथैं भैया केत्ता बाघ-चीता होय गेलो॑ छेलै। आरो ठीक बाघे नांखी ओकरो॑ गल्लो॑ पकड़ी लेलै॑ छेलै, जेना कि कोय बाघ अपनो॑ पंजा के॑ अपनो॑ शिकार पर राखी देले॑ रहै। आरो केन्हो॑ दहाड़तें हुवे॑ कहले॑ छेलै, ''हरमजादी, औरत जात होय के॑ मरदाना के॑ पोसै के बात करैं छैं। तोरो॑ हेनो॑ पचास औरत ई घरो॑ में होतै तें॑ हम्में असकेल्ला ओकरा खिलाबे॑ पारौं, ओकरा में तोरो॑ देह के कमाय हम्में खैबै''। पता नै भैया की करी देतियै। ऊ तें॑ संजोग रहै कि तखनियै कोय दरवाजा पर कुंडी खटखटैले॑ रहै।

पटेल सिंह नें आबी के॑ हांक पारलको॑ छेलै। हांक सुनथैं भैया द्वारी दिस हड़बड़ैलो॑ भागलो॑ छेलै। भैया आरो पटेल सिंह के बीच होय वाला सबटा बात हम्में ठीक-ठीक सुनले॑ छेलियै। पटेल सिंह कही रहलो॑ छेलै, ''देख रे जोगबनिया, तों अपनो॑ बहिन के॑ बांधी के॑ रख, कोय तरह के हंगामा खड़ा नै करैं। आरो जेत्ता जल्दी होय छौ ऐकरो॑ बीहा करी के॑ ई गाँव सें बाहर कर। ई बात हम्में तोरा कल्हो कही देले॑ छेलियौ।'' तें॑ भैया के आवाज सुनाय देले॑ छेलै। वें पूछी रहलो॑ छेलै, ''मतरकि मालिक, एत्ता जल्दी हम्में एकरो॑ बीहा कहाँ करबै।'' पटेल सिंह नें गल्लो॑ आरो टांस करी बोलले॑ छेलै, ''जेना भी हुवे॑, बीहा तें॑ करै ले॑ पड़तौ, नै कोय मिलै छौ तें॑ तोंही बीहा करी लैं अपनो॑ बहिन सें''। भैया के मुंह के बोली जेना छिनाय गेलो॑ रहै। पर मरदानगी झाड़ै वाला भैया पटेल सिंह के सामना में मौगी नांखी गुड़मुड़ाय गेलो॑ छेलै।

तखनी भैया केत्ता घिघियैलो॑ आवाज में पटेल सिंह सें कहनै छेलै, ''है की कहै छो॑ मालिक, कोय हिन्दू कि अपनो॑ बहिन सें भी बीहा करै छै। हेनो॑ पाप बोली कैन्हे बोलै छियै।'' वैं एकदम चुपचाप होय गेलो॑ छेलै।

आरो नै जानौं तखनी भैया के बदला पटेल सिंह पर हम्में की रंग खंखूआय उठलो॑ छेलियै। कहले॑ छेलियै, ''ई विष के गाछ जंगलो॑ सें उखाड़ी देना चाहियो॑, सौंसे जंगल माहूर-माहूर करी रहलो॑ छै।''

हमरोॅ बात पटेल सिंह पर ठीक-ठाक लगलोॅ छेलै। मतरकि नै जानौं की सोची केॅ ऊ कुछु शांत बनलोॅ रहलोॅ छेलै। आरो जखनी भैया द्वारी सें ऐंगना दिस ऐलोॅ छेलै, ओकरोॅ अंटी में कुछु छेलै । जरूरे ऊ टका के गड्डी होतै। हमरा बेची दै वास्तेॅ पटेल सिंह नें ऊ टका हमरोॅ भाय केॅ थमैलेॅ होतै।

"अरे, तों सिनी आदमी थोड़े छौ। आदमी के नाम पर एकटा कलंक छौ। पैसा आगू में सब ईमान-धरम बेची आबै छौ। तोरोॅ सिनी रोॅ तेॅ कुत्ता रंग जी लपलप करै छौं-जेना कुत्ता केॅ हड्डी कहीं नजर आबै छै, ओकरोॅ सौंसे बदन ओकरा पर लपकी पड़ै छै। तों सिनी पैसा आगू में कुत्ता नाँखी होय जाय छौ। जे टका वास्तें बहिन केॅ बेची दै, ऊ भाय की, मनुखो नै। कुत्ता हड्डी केॅ चबैतें अपनोॅ जबड़ा के खून चाटेॅ लगै छै। तोहों वहै रं छौ, अब पैसा लेली अपने बहिन केॅ बेची रहलोॅ छौ।"

भाय हमरोॅ ई सब बात सुनी केॅ आरो गोस्साय उठलोॅ छेलै । आरो गाल पर खींची केॅ दनादन केत्ता थप्पड़ मारलकोॅ छेलै । तखनी हम्मूं एकदम नागिन नांखी फुंफकारतें खाड़ी होय गेलोॅ छेलियै । आरो कहलेॅ छेलियै, "मरदानगी झाड़ै छौ, हम्मू अपनोॅ बलेसर केॅ बुलाय केॅ लानै छियौं, फैसला करी लियौ की केत्तोॅ बड़ोॅ मरद ? जनानी पर जोर दिखाय केॅ कोय मरद बनै छै।" आरो ई कही केॅ हम्में द्वारी दिस भागलोॅ छेलियै कि भाय नें झपटा दै केॅ हमरा पकड़ी ले लेॅ छेले।

.......गुलबिया केॅ अनचोके अपनोॅ माथा के कोकड़ी में खूब दरद बुझाबै लागै छै......., भाय नें की रं हमरोॅ बाल खींची वाहीं पर मोटोॅ-मोटोॅ रस्सी सें कस्सी केॅ बांधी देलेॅ छेलै। हम्में कसमसैतें रही गेलोॅ छेलियै। मतरकि टस सें मस नै हुवेॅ पारलोॅ छेलियै। आखिर मरद जात के बल के आगू जर-जनानी के ताकते की रही जाय छै। आरो हम्में विवश होय केॅ रही गेलोॅ छेलियै।

.......ओकरा फिनू याद आबै छै बलेसर के। वें जरूर अपनोॅ खेत पर हमरोॅ आसरा देखतेॅ होतै, मतरकि कभीयो नै मिलेॅ पारलियै

हम्में। ऊ दिन जे संझकी घर ऐलों छेलियै, तखनियै बलेसर सें मिललों छेलियै। केत्ता खुश छेलै। हमरा अपनों बांही में बांधी कें कहलें छेलै, ''देखौ, गुलाबो, अब हमरों तोरों जिनगी के सबसें बड़ा सुख के दिन भी नगीच आबी रहलों छै। जोंन दिन ई खेत के सबटा केला बिकी जैतै, हम्में तोरों घर पर आबी कें तोरों भाय-भौजाय सें जिनगी भर वास्तें तोरों हाथ मांगी लेबौं। हाँ, ऊ दिन बहुत जल्दिये ऐतै। जब हम्में अपनों यही हाथों सें तोरों ई दुधिया सीती में फलाशे हेनों सिनूर के रंग भरी देबौं।''.......ई बात याद ऐतैं गुलाबो के हाथ अपनों मांगों पर चललों जाय छै। ओकरा लागै छै अभियो ओकरों मांग दूधिये बनलों छै। एकदम सुन्नों-सुन्नों। केकरो हाथ सें सिनूर पिन्है के आकांक्षा में बेचैन।

.......बलेसर कें केत्ता व्याकुल होय कें कहलें छेलै, ''हम्में तोरों पास जलदिये ऐभौं।'' केत्ता गद्‌गद होय गेलों रहै हमरों मन । मतरकि भगवान हमरे वाम होय गेलों रहै। ऊ दिन सें घर ऐतैं कहीं सुख के पहिया एकाएक पलटी गेलों छेलै आरो सुख कहीं उल्टी कें गिरी गेलों छेलै। ऊ दिन सें आय दिन तांय खाली दुखे-दुख तें देखलें छेलै गुलबिया नें। एक्को दिन नै बढ़िया सें खैलकों छेलै, नै बढ़िया सें सुतलें छेलै। की हठाते ओकरा फेनू बलेसर के ख्याल आबी जाय छै-की होलों होतै बलेसर के। ओकरों खेत बिकलों होतै की नै। जरूरे भूमि बाबू ओकरों खेत बिकबाय देलें होतै। चाहै भूमि बाबू रहै या पटेल सिंह— एक राक्षस के दू आंख। जरूर बलेसर के सुख शांति घर-द्वार, सब संपत निगली गेलों होतै।

बलेसर के तें घरों-द्वार रूक्का पर लिखबाय लेलें छेलै। अब वें घर-द्वार सें लैकें केला खेत तांय सब कुछ हारी गेलों होतै। नै जानौं, कहाँ रहतें होतै, की खैतें होतै, हमरों बिना तें ऊ आरो टूटी कें रही गेलों होतै।

हमरों बिना एक्को दिन खाना नै खाय छेलै ऊ। जब तलक कौरी सें खिलाय नै छेलियै, खाय नै छेलै। केत्ता मनाय-मनाय कें

खिलाय लें पड़ै छेलै। मरद के मन भी एत्ता जनानी रं होय छै, ई तें हम्में पहली बार जानलें छेलियै बलेसर के संग रही कें। सचमुच में मरद अर्धनारीश्वर होय छै, आधा मरद आरो आधा जनानी। अब ओकरा के खिलैतै होतै। खैते होतै की नै खैतें होतै। घर-द्वार सें टूटलों आदमी कें के पूछै छै। हमरों याद में तें आरो पगलाय गेलों होतै। कोय एकटा पंछियो नै मिललै, जेकरा सें ओकरों हाल-चाल जानतियै।

ऊ जतना बलेसर के बारे में सोचै छै, ऊ उत्ते ओकरों नेहों में भींजलों बनलों जाय छै, जेना की पानी में मिसरी घुलतें हुवें, नोंन घुलतें हुवें कि हठाते ओकरा लागै छै कि द्वारी पर बलेसर आबी कें खाड़ा होय गेलों छै। हांक पारी रहलों छै, "गुलाबो, हम्में आबी गेलियौ। कै रोज सें हम्में तोरों बिना खाना नै खैलों छियै। एक्को कौर खैले नै जाय छै गुलाबो, हम्में आबी गेलियौं।"…….गुलाबो है सोचै नै पारै कि ई इक सपना छेकै, ई सच नै छेकै, तहियो ऊ धड़फड़ाय कें उठै छै आरो द्वारी दिस भागै छै। मतरकि कोठरी के किबाड़ तें बंद छै। वें माथों पटकी-पटकी चीखना शुरू करै छै, "किबाड़ खोलौ। हमरों बलेसर आबी गेलों छै, द्वारी पर खाड़ों हमरा हांक दै रहलों छै। हम्में बलेसर बिना नै रहै पारौं…….।"

गुलाबो घंटा भरी आपनों कपार किबाड़ पर पटकतें रही छै बलेसर के नाम लै-लै कें। पहलके नाँखी द्वारी पर कुछु जर-जनानी जुटी गेलों छै। बच्चो-बुतरू खेल-तमाश बुझी कें आबी गेलों छै। बसंत आपनों कोठरी में गुस्सा में साँपें नाँखी फंफकारी रहलों छै, आपनों सारा विष ओकरा पर उतारी कें ओकरा आय मारियै देतै। बसंत के माय अपनों बेटा कें कसी कें पकड़लें होलों छै। कही रहलों छै, "बेटा है नै करैं। मरी हेराय गेलौ तें जिनगी भर वास्तें कोर्ट-कचहरी आरो जेल देखै लें पड़तै। आरो हुन्ने केबाड़ी पर गुलाबों के माथों पटकबों, चिचियैबों जारी छै पहिलके नांखी। कै दिनकों नांखी।

ई बात के खबर समूचा गांमों में फैली जाय छै। बसंत आपनों कनियांय कें पागल करी देनें छै। हां, पागल करार करी देला के बादो

बसंत गुलाबो के॑ रोजे-रोज मारबो॑-पीटबो॑ भी नै छोड़ै छै। आरो गुलाबीयो जेना ई बातो॑ के अभ्यस्त होय गेलो॑ छै। ई देखी-जानी के॑ टोला-पड़ोस के जोर-जनानी बसंत माय के॑ समझैतें रहै छै, ''हेना नै करवाबो॑ बसंत माय, बसंत के॑ कुकर्म करै सें रोको॑। जल्लादो है रङ जीव-जंतु के॑ नै काटै छै जेना कि बसंत आपनो॑ कनियैनी के॑ पीटै छै। अबे॑ ते॑ ऊ तोरो॑ घरो॑ के इज्जत छेकौं। हेनो॑ जुलूम नै करौ, आखिर ते॑ ऊ एक जित्तो॑ इंसान छै। ई रङ गरजबो॑ अच्छा नै होय छै।'' खाली टोला-पड़ोसे के जौर-जनानीये नैं जे आबै छै, है बात समझाबै छै, जवान-जुहान सें लै के॑ बड़ो॑-बूढ़ो॑ तांय। आखिर में बसंत कुछू शांत भै जाय छै।

आरो जेना-जेना बसंत नरम पड़लो॑ जाय छै, होना-होना गुलबिया आरो उग्र होलो॑ जाय छै, जेना बिना कुछू फैसला के ऊ चुप नै बैठतै। ऊ सांझे जबे॑ तेतरी के दादी बसंत माय सें जोरन मांगै लें॑ ऐलो॑ छेलै तें॑ बाते-बात में पंचायतो के बाद खुली गेलै। बात शुरू करलें॑ छेलै बसंते माय नें, मतरकि अंत होलो॑ छेलै तेतरी दादी सें।

तेतरी दादी नें फुसफुसाय के॑ नै, मतरकि टनको॑ गल्लो॑ सें कहलें॑ छेलै, ''हेकरा में सोचै-विचारै के की जरूरत, देहो॑ पर है रङ गुरो॑ पालै के जगह फोड़ी के॑ बहाय देबौ ही अच्छा। पंच बैठाय लें॑ आरो जेकरो॑ पक्षो॑ में फैसला होतै, होकरे जीत।''

तेतरी दादी के बात सुनी के॑ बसंत माय कहनें छेलै, ''धीरें बोलो॑ माजी, संपिनिया सब्भे सुनतें होथौं, सुतै के ढोंग करतें रहै छै, आरो जागले-जागले सब सुनतें रहै छै।''

मतरकि तेतरी दादी होने टनको॑ गल्लो॑ सें कहनें छेलै, ''अरे यै में सुनै, नै सुनै के की बात छै, पंच जे फैसला देतै, ऊ ते॑ सब्भे के॑ मानै लें॑ लगतै। आरो हमरा ते॑ लागै छौं पछियारी वाली कि फैसला तोरो॑ पुतैहिये के पक्षो॑ में होतौं। सौंसे गांव में हल्ला छौं कि बसंत रोजे आपनो॑ कनियैनी के॑ गाय-बैल नांखी डंगाबै छै। आरो फेनू तोरे बेटा यहू हल्ला करी देनें छै कि ओकरो॑ कनियांय पगलिया छै। आबें॑

पछियारी वाली तोहीं कहौ कि पगलिया केॅ घरोॅ में राखै सें की फायदा, हमरा तेॅ लागै छै कि पंच यही कहतौं कि गुलाबो केॅ ओकरोॅ नैहर जाय लेॅ देना चाहियौ, ओकरोॅ दिमाग ठीक होतै की खराबे रहतै, ओकरोॅ नैहरा वाला जानै।

तेतरी दादी जोरन लै केॅ चल्लोॅ गेलै, आरो आपनोॅ कोठरी में ठिक्के सुतै के बहाना करतें गुलाबो नें कान तेज करनें सब्भे सुनी लेनें छेलै, आरो ओकरोॅ चेहरा पर एक बारगिये ढेरे चमक उतरी गेलोॅ छेलै, जेना कै माघ महीना के कुहासा फाड़ी केॅ सुरूज के किरण गाछोॅ पर खिली गेलोॅ रहै। मतरकि गुलाबो नें आपनोॅ ई रूप आरो भाव एकदम छुपाय लेनें रहै आरो वै दिनोॅ के बादे सें ओकरोॅ पगलपंथी आरो बढ़ी गेलै।

अनचोके ई परिवर्तन सें बसंत माय आरो घबराय गेलोॅ छेलै । जे बातोॅ वास्तें ओकरोॅ मोॅन तैयार नै होय रहलोॅ छेलै, ओकरोॅ वास्तें ऊ एकदम तैयार छै—अच्छे होतै पंचा बैठाय लेबै। पंच पुतैहिया के पक्षो में फैसला नहियो देतै तेॅ कही सुनी केॅ दिलवाय देलोॅ जैतै । अबेॅ एकरोॅ है घरोॅ सें निकलिये जाना अच्छा होतै, जेत्तेॅ जल्दी हुवेॅ ।

आरो सप्ताह भरी के बादे गांव के पछीयारी टोला के बरगद गाछी नीचें पंचायत बैठलोॅ छेलै। ठीक सांझ के पांच बजे पंच सिनी गाछी तरी जुटी गेलोॅ छै। पंच आबै के पहिनें टोला के सब्भे जोर-जनानीयो के भीड़ पहनें सें जुटी केॅ तैयार छै। सब्भे केॅ एक्के उत्सुकता छै कि आय पंचायत की फैसला करतै। फैसला गुलबिया के पक्ष में होतै की बसंतोॅ के पक्षोॅ में। यही उत्सकुता केॅ शांत करै लेली गांव के बड़ोॅ-बूढ़ोॅ सें लैकेॅ जवान-जुहान तक जुटी गेलोॅ छै।

पंचायत में तेतरी दादी सें लैकेॅ मुखिया शमशेर सिंह तांय आबी गेलोॅ छै। सब पंच सिनी गाछी के नीचू बनलोॅ पिंडा पर पालथी मारी केॅ बैठी जाय छै।

एक तरफ जनानी सिनी बड़का-बड़का घुंघटा डाली केॅ अंचरा मुँहोॅ में दबाय केॅ कनखी सें पंच के मुँह दिस ताकै छै, आरो दोसरोॅ

तरफ मरादाना सीनी पंचोॅ तरफ मुंह करी केॅ बैठलोॅ छै। मतरकि भितरिया बात यही रहै कि सब कोय आधे मनोॅ सें पंचोॅ दिस देखी रहलोॅ छै आरो आधोॅ मोॅन तेॅ सबके बस गुलबिये पर गड़लोॅ होलोॅ छै।

गुलबिया जे बड़ी निसंकोच होय केॅ एक दिस आगू में बैठलोॅ होलोॅ छै—ठीक पंचोॅ के आमना-सामनी। ओकरोॅ मरद ओकरा सें थोड़ा हटी केॅ वाहीं पर बैठलोॅ छै। मतरकि गुलबिया के चेहरा पर तनियो टा ई भाव नै छै ऊ आपनोॅ सोसरारी के कुल-परिवारोॅ के बीचोॅ में बैठली छै। ओकरोॅ चेहरा पर अनदिना सें कुछू ज्यादे चमक छै। ओकरोॅ चेहरा है बताय रहलोॅ छै, जेना ऊ बहुते कुछ जल्दीबाजी में कहना चाहै छै। गुलबिया के आंख कही रहलोॅ छै कि ओकरोॅ विश्वास छै, जीत ओकरे होतै, पंच ओकरे पक्षोॅ में बोलतै। आरो तबेॅ की छै। गुलबिया तेॅ मैना बगरो नांखी स्वतंत्र होय जैतै। एकदम सुग्गे नाखीं टांय-टांय करनें ऊ पिंजरा सें उड़ी जैतै आरो पहुँची जैतै आपनोॅ वही जंगल, जहाँ ओकरोॅ खोता छै। खोता में ओकरोॅ मरद कि रं जवान होय गेलोॅ होतै ओकरोॅ आसरा ताकतें-ताकतें। जखनी ऊ जंगल पहुँचतै, सौंसे जंगल ओकरोॅ टिटकारी सें गूंजी जैतै। ई सब बात सोचथैं गुलबिया तन-फन करेॅ लागलेॅ छेलै। आरो जखनी एक पंचे गुलबिया सें है पूछलेॅ छेलै कि तोंहे है बर्ताव कैन्हें करै छौ, बसंत केॅ तोहें आपनोॅ पति मानै छौ कि नै, आरो नै मानै छौ तेॅ कैन्हें ?

यै पर गुलबिया खाड़ी होय केॅ जे बोलना शुरू करनें छेलै एक्के सुरोॅ में बोल्ले चल्लोॅ गेलोॅ छेलै, ''सुनोॅ पंचसिनी, ई मरद जे हमरोॅ बगलोॅ में बैठलोॅ छै, ई आपनोॅ बहिन के मरद होतै, हमरोॅ नै। हेकरोॅ बहिन आरू यै नें मिली केॅ हमरोॅ जीवन के साथें खिलवाड़ करनें छै। कौन जनम के बदला निकाली रहलोॅ छै ई हमरा सें। हम्में तेॅ एकरा कभियो नै आपनोॅ मरद जानलियै कैन्हें कि ई हमरोॅ बिहोशी में हमरोॅ मांगोॅ में सिनूर भरनें छै। आबेॅ है बीहा केॅ कौन बीहा कहलोॅ जैतै, जेकरा में एक पक्ष एकदम्मे शांत आरो मौन छै। पंच साहब, चुटकी भरी

सिनूर जों कोय मरद कोय औरत के मांगो॓ में भरी दै आरो जनानी ओकरो॓ जिनगी भर लेली गुलाम होय जाय, जोरू होय जाय, तबे॓ ते॓ भै गेलै। तोहों सिनी एक-एक मुट्ठी सिनूर लै ले॓ आरो ई गांव भरी के जनानी सिनी के मांगो॓ में जाय के॓ पोती आबो॓ ते॓ सब जनानी तोरो॓ सिनी रो॓ जोरू होय जैतौं।''

गुलबिया के है रङ बरताव आरो बेपरद बात करतें देखी के॓ पंच सिनी ते॓ दंग छेबे करलै, सौंसे टोला-पड़ोस के आदमियों सिनी मूख बनी गेलो॓ छेलै। केकरो मुहो॓ सें बोल नै फूटी रहलो॓ छै। बोल फूटी रहलो॓ छै ते॓ बस गुलबिया के, ऊ बोलतें जाय रहलो॓ छै, ''सुनो॓ पंच सिनी, तोरा सिनी ते॓ हमरो॓ बाप-दादा नांखी छौ आरो धरती पर न्याय-अन्याय के॓ देखै वास्तें देवता नांखी। जों तोहेंसिनी हमरो॓ न्याय नै करभौ, सत्य के पक्ष नै लेभौ ते॓ धरती पर विश्वास करै वास्तें बचिये की जैतै, जों तोरा सिनी आरो कुछू जानै ले॓ चाहै छौ ते॓ है जानी ले॓ कि बसंत हमरो॓ पति, हमरो॓ मरद कभीयो नै हुवे॓ पारै। ऊ अगर कोय होतै ते॓ वही होतै, जेकरा हम्में आपनो॓ मनो॓ सें मानी चुकलो॓ छियै आरो जे हमरा आपनो॓ मनो॓ सें आपनी कनियांय मानले॓ छै। आरो कल हमरो॓ मांगो॓ में सही सिनूर पड़तै ते॓ ओकरे पड़तै।'' गुलाबो के है सब बात सुनी के॓ सबनें आपनो॓ कानो॓ पर औंगरी राखी लेलकै। पंचो आपनो॓ मुंह फेरतें हुवे॓ कहलकै, ''हद होय गेलै, ई कुलच्छन ते॓ पाप बोली रहलो॓ छै आरो ई पाप जहां जैतै, वहीं गांव-घर के॓ खैतै। यै लेली है जरूरी छै कि हेकरा यही गामो॓ में राखलो॓ जाय ई पागल नै छै, पागल होय के ढोंग करै छै, ई छै ते॓ कुलच्छन वाली औरत आरो हेनो॓ औरत लेली पंचो॓ दिस सें एक्के फैसला हुवे॓ पारै कि बसंत, जे है जनानी के मरद छेकै, वें हेकरा घर लै जाव आरो साम, दाम, दंड, भेद—जेना भी हुवे॓ हेकरा, आपनो॓ बस में करै। हेनो॓ औरत के॓ रास्ता में लावै वास्तें जों होकरो॓ जानो चल्लो॓ जाय छै ते॓ पंच ई फैसला दै छै कि गामो॓ के मान-मर्यादा के॓ देखतें हुवे॓ बसंत पर कोय मुकदमा नै होतै।''

पंच के फैसला होय चुकलो॓ छेलै। सब्भे आपनो॓ घो॓र लौटी

रहलो ँ छै आरो सब्भे रो ँ पीछू-पीछू बसंत गुलबिया के बांही धरनें, लगभग घसीटने-घसीटने घो ँर दिस लै चल्लो ँ जाय रहलो ँ छै। कुछू देर पहनें जे गुलबिया टन-टन करी के ँ बोली रहलो ँ छेलै पंचो ँ के बीच, जेना कोर्ट-कचहरी में कोय वकील बहस करतें रहै, वही गुलबिया अनचोके एकदम कुम्हलाय गेलो ँ छेलै। ओकरा ई जरियो टा विश्वास नै छेलै कि पंच के पक्ष ओकरो ँ विपक्ष में होतै, आबे ँ ते ँ जिनगी भर वास्तें सड़ी-गली के ँ यहे ँ गैर मरदो ँ के गोड़ो ँ नीचें रहना छै, बचै के बस एक्के रस्ता छै कि आपनो ँ देह-हाथ आपनो ँ दांतो ँ सें नोची-नोची के ँ मरी जाय याकि फेनू कहीं कोय नदी-पोखर में धौस दै जिनगी खतम करी लै। गुलबिया घसीटलो ँ-घसीटलो ँ चल्लो ँ जाय रहलो ँ छै, जेना कोय बकरी के ँ कोय कसाय रस्सी डाली के ँ खीचै छै आरो बकरी ओकरो ँ पीछू जाय ले ँ नै चाहै छै, ई दृश्य के देखवैयो कम नै छै, मतरकि बचवैया कोय नै। गांव टोला में औरत के साथें हेनो ँ व्यवहार, शायद हेकरा सें बढ़ी के ँ आरो तमाशा की हुवे ँ पारे ँ वहांकरो ँ लोगो ँ वास्तें।

जे भी हुवे ँ ऊ दिन के पंचो ँ के फैसला नें गुलाबो के ँ एकदम सें हिलाय के ँ राखी देनें छेलै। जखनी ऊ आपनो ँ घो ँर गेलो ँ छेलै, ठीक वही रातो ँ सें होकरो ँ स्वभाव में एक अजीबे परिवर्त्तन होय गेलो ँ छेलै। गुलाबो बोलै छै कुछू नै, मतरकि जेना-जेना ऊ पगलीया रङ पहनें करै छेलै, अबे ँ नै करै छै। ई सब देखी के ँ होकरो ँ सासे नै, बसंतो भीतरो ँ सें बड़ी खुश नजर आवै छै।

बसंत के माय ते ँ शीतला माय के थानो ँ सें लैके ँ जख थानो ँ में कबूलती कबूली ऐलो ँ छै, ''हे शीतला माय, जों हमरो ँ पुतोहू के पागलपन दूर करी दौ ते ँ जोड़ी कबूतर तोरा देबौं, हे जख बाबा जों हमरो ँ पुतोहू ठीक होय गेलै ते ँ जोड़ा पाठा के बली देबौ।'' कौन-कौन देवता के सामने मनौती नै राखले ँ होतै बसंत माय। ई देवी-देवता के असर रहै या जेकरो ँ भी, गुलाबो में बदलाव ते ँ जरूरे आबी रहलो ँ छै। यही बदलाव देखी के ँ एक दिन सास ओकरो ँ नगीच आबी के ँ

कहलकै, ''कनयांय, आबें जे होलै से होलै, पहाड़ हेनों जिनगी सामना में पड़लों छौन, हेने कें गुमशुम बनी कें नै काटलौ जाबें सकै। कोय नै काटें पारै छै। जहिया हम्मू बीहा करी कें यै ऐंगना में ऐलों छेलियै, हमरो मनों में ढेरे बात छेलै, बात यहू सही छेलै कि ई घरों में आबै के मने नै रहै, मतरकि जबें यहीं हमरों सुहाग बांधी देलों गेलै तें यही घरों के पुरूख कें आपनों सुहाग मानी कें जिनगी खपाय के बात सोची लेलियै। आरो वही संकल्प के है परिणाम छेकै कि है घर भरलों-पुरलों देखौ छौ। अबें हमरों जिनगी के की, दू बेटी छेलै दोनो बिहाय कें आपनों-आपनों जग्घों पर छै। घरों में एक्के वही बसंत बेटा, अबें तें एकरे सें वंश बढ़तै । आरो तोरों बिना वंश कैन्हों ?

[११]

सौंसे गाँव में कुकवारों मची गेलै कि बसन्ता माय के पत रही गेलै। दादी बनैवाली छै बसन्ता माय। जत्तें भी बड़ों-बूढ़ी छेलै गाँव में—सब्भे के जुआनी पर एक्के बात।

हिन्ने बसन्त माय के गोड़ों में तें जेना पंख लागी गेलों रहें । पुरानों मांस में जेना नया खून बहें लागलो छेलै। बूलै तें जेना जुआन छौड़ी कें मात करी देतै।

—की बसन्ता माय, अबकी तें सौंसे गाँव के लुलुआ डुबौन करबैबौ। अंगना में सुरुज उतरै वाला छौं।

—यहू में की दू बात छै। सब बाकी बकाया अबकिये बार।

सचमुचे में ई अजीब बात छेलै कि जे गुलबिया गुमसुमे बनलों रहै छेलै, वहू आबें बोलबों-चालबों शुरू करी देलें छेलै। घरे-ऐंगन के लोगों सें नै, द्वारी-बहारी के जोंन जनानी सें। बसन्ता माय के तें जेना

भागे लौटी ऐलो॑ रहे॑।

मजकि एक बात पर घर-बाहर के जनानी के॑ बड़ा आचरज लागै कि जखनी गुलबिया के॑ कोय ओकरो॑ कोखी के बच्चा लेली बोलै, ते॑ ओकरा कोय खुशी आकि दुख नै हुऐ॑। चेहरा पर कोय भाव जेना उतरबे नै करै।

जो॑र-जनानी सोचै, शाअत, ढेर दिना के बाद गुलबिया के गोद भरै ले॑ जाय रहलो॑ छै, आरो कहीं बातो॑ के नजर-गुजर नै लागी जाय, यही लेली ई संबंध में केकरो सें बातचीत नै करै ले॑ चाहै छै।

समय बीतलो॑ जाय छेलै। तीन महीना, चार महीना, पाँच छो॑, सात आठ आरो नौंवा महीना पूरा होय पर आबी गेलै। बसन्त के खुशी के ठिकानो॑ नै रही गेलो॑ छेलै।

घर-द्वार के सजावट में घो॑र भरी परेशान छेलै, मजकि गुलाबो जेना ई सब बातो॑ सें एकदम कहीं दूर छेलै, कुछ होन्है के॑ जेना ओकरा मालूमो नै रहे॑ कि ऊ गुलबियो छेकै। माय बनी रहलो॑ छेली, ऊ मजकि मनो॑ में कोय ममता नै।

ई बात के॑ लै के॑ बसन्त कभी-कभी परेशान भी होय जाय ।

यहू बात नै छेलै कि गुलाबो ओकरा सें बात व्यवहार नै करै। सब कुछ होवै—हँसी-मजाक, सब्भे कुछ। लेकिन जबे॑ भी बसन्त आपना के॑ बाप आरो ओकरो॑ माय होय के याद ओकरा दिलावै ते॑ ऊ कहीं दूर खोय जाय, जेना बसन्त के बाते नै सुनले॑ रहै।

[१२]

आखिर वहू दिन आबी गेलै कि बसन्त बाप बनी गेलै।

बसन्त माय के ऐंगन ते॑ गीत नाद सें गनगन करे॑ लागलै।

झुनकी माय ऐंगना में ढोल पर ताल दै रहलोॅ छेलै आरो मधुरिया माय के कंठ सें शहद फूटी पड़लोॅ छेलै।

धन्य-धन्य राज अयोध्या कि धन्य राजा दशरथ हे
ललना रे, धन्य रे कौशिल्या जी के भाग कि रामजी
जनम लेल हे
ऐला जे पंडित पुरहित बैठला पलंग चढ़ी हे
ललना रे गुनि दियौ नुनुआ के दिन कि कोन तिथि
जनमल हे

अभी एक गीत खतम होवो नै करलोॅ छेलै कि सुरेखा माय दूसरोॅ गीत शुरू करलकै,

नवमी तिथि नुनुआ जनम लेल चैत मास बीतै हे
ललना रे बारहे बरष जब होयतै वनहि चलि जायत हे
एतना वचन जब सुनलनि अहो राजा दशरथ हे
ललना रे धरती खसल मुरूछाइ कि अब केना जीवत हे
सोइरी सें बोलली कौशल्या रानी सुनु राजा दशरथ हे
ललना रे, कहौं जिए मोरा बेटा बांझी पन छूटल हे

''अगे माय, खाली गीते नाद चलतै कि आरो कुछू ?''

''आरो कुछू की होतै, की चाहै छैं तोरासिनी—बसन्ता घोॅर-द्वार बेची केॅ सोना-जेवर लुटावै ?''

''ई कहाँ कहै छियै, मजकि तोरासिनी भाँड़-भाड़िन के काम पूरा करी देभौ तेॅ भाँड़-भाड़िन की करतै ?''

खूब हँसी ठिठोली होलै ऊ दिन।

[१३]

मजकि आबे ई बात डगरिन सें लै के घो र-दुआरी के लोग तक के अनटेटलो बुझावें लागलो छै कि गुलाबो के आपनो गुलाब हेनो बच्चा के खुशी कैन्हें नी होय रहलो छै ?

हेनो बेरूखी तें कोय जनानी के दुसरो बच्चा लेली भी नै होय छै, ई तें आपनो बच्चा छेकै। आपने कोखी के लाल।

फेनू ई बेरूखी कैन्हें ? आखिर की बात छै एकरो पीछू ?

की मधुरिया माय के रहलो नै गेलै। आखिर की बात हुएँ सकें एकरो पीछू।

कोय आन बात सोचलो नै जाबे सकै छै। बच्चा के मूठौन एकदम बसन्ते पर गेलो छै। जबे काहीं कोय शंका नै छै तें गुलाबो के मो न-मिजाज आखिर हेनो कैन्हें ?

नै रहलो गेलै तें मधुरिमा एकदम देर दिन तक गुलबिये के पास बैठलो रहलै आरो बाते बात में पूछी बैठलकै, ‘‘हे कनियैन, एकठो बात बतावो कि तोरा माय बनला के बादो बच्चा के प्रति कोय ममता नै देखै छियौं, से कैन्हें ?’’

मधुरिया माय के बातो के गुलबिया पहिलें तें गौर सें सुनैलकै, फेनू खिलखिलाय के हाँसी पड़लै आरो हाँसतें-हाँसतें कहलकै, ‘‘यै में ममता-खुशी के की बात छै काकी माय। खेत में फसल होय छै तें खेत के मालिक के खुशी होय छै—खेत के की होतै ?’’

आरो एकरो कुच्छू देर बाद गुलाबो जे बात मधुरिया माय कें सुनलकै—ऊ बात सें तें एकदम सिहरी उठलै।

‘‘हे कनियैन, हेनो हुऐ छै कि ? हे कनियैन, हेनो कुलच्छन बात केकरा सें तोहें सुनलो छौ। फेनू हेनो बात बोली के मूँ नै खराब करियो ।’’

मधुरिया माय के हालत देखी के गुलाबो के हाँसी आबी गेलै । हँसी रुकलै तें कहलकै, ‘‘नै पतियाबो काकी, मजकि है सब

छेकै एकदम सही बात।''

''जों सहिये छेकै कनियैन तें तोरा है सब सुनावै के की जरूरत। जेकरों साथें ई बात होलै, तें होलै।''

आरो फेनू ऊ सब बात वांही पर रुकी गेलै।

[१४]

मधुरिया मांय सें नै रहलों गेलै तें एक दिन आपनों मरद कें सब बात एक-एक करी कें सुनाय देलकै, ''सुनै छों, बसन्ता कनियैनी हमरा सें की कहलकै, कहलकै कि बड़ों-बड़ों शहरों में जनानी किराया पर कोख दै छै। कोय्यो जनानी तीस हजार, पचास हजार, लाखो टका में कोय मरद के साथ रहै छै आरो दू जीवियों बनी जाय छै आरो जबें सोरी घरों के काम पूरा होय जाय छै, तबें ऊ जनानी ऊ मरद कें छोड़ी कें आपनों मरद लुग चल्लों जाय।'' कहतें-कहतें ऊ रुकली आरो पूछलकी, ''तोहीं बतावों—हेनों भी होय छै की ?''

''तिरिया चरित्त देवो नै जानै, हम्में की बतैयौं।'' मधुरिया बापें कही कें पिण्ड छुड़ैलकै।

मजकि आभी मधुरिया माय के बात कहाँ खतम होलों छेलै । लगें कहैलकै, ''एतने बात नै नी छै। जानै छौ, बसन्ता कनियैन की कहैलकै ? कहैलकै—हम्मू तें वहा रँ ई मरद के बच्चा पेटों में पाललें छियै। हमरा की लेना-देना ई बच्चा सें, आरो हमरा की मोह। जेकरों बच्चा छेकै, वें जानौक। हमरों मरद तें परदेश में रहै छै—मजूरी करै लें गेलों छेलै। हमरा मालूम होलै कि दस महीना बाद घों र लौटतियै । आबें हम्में दस महीना कहाँ जैतियै। पेट तें पालनै छेलै, से ई मरद बसन्त के बच्चा कें पेटों में पालना शुरू करी देलियै। आरो दुसरों

चार्है की छेलै। हम्में तेॅ जल्दिये आपनोॅ मरद के नगीच चल्लोॅ जैबै। वहीं जेना राखतै, रहबै। आखिर ऊ हमरोॅ मरद छेकै ।''

कहतें-कहतें मधुरिया पत्थल नाँखी कुछ क्षण लेली बनी गेलै। होश ऐलै तेॅ पूछलकै, ''की लागै छौं, ई ठिक्के भागी-उगी जैतै की ?''

''यहू कहीं होय छै। कोय जनानी कोय्यो मरदोॅ संगें कुँआरा में कत्तोॅ नगीची रहेॅ, बीहा होला के बाद सब सरोकार खतम होय जाय छै। ओकरोॅ वास्तें तेॅ बस ओकरोॅ पतिये परमेश्वर होय छै। बसन्ता कनियैनी जे भी तोरा बोललकौ, है केकरो सें नै कहियौ।''

मधुरिया माय तेॅ केकरौ सें नै कहलकै, मजकि दसमे दिन गाँव भरी में जे कुकहारोॅ मचलै, ओकरोॅ तेॅ कोय्यो थाहे पता नै रहलै ।

रात केॅ दिशा-मैदान के नामोॅ पर गुलाबो जे बहियार गेलै तेॅ घुमी केॅ नै ऐलै।

एक घंटा, दू घंटा, आखिर की भेलै। कांही सांपे-बिच्छे तेॅ नै काटी लेलकै। बसन्ता के करेजोॅ धड़की उठलै। माय केॅ जाय केॅ कहलकै।

माय धड़फड़ैली सीधे बहियार दिश झटकली। ''अगे माय, बहियारी में तेॅ कांही नै छै।'' एक-एक झाड़-पतार खोजी लेलकी बसन्ता माय, तेॅ थक्की केॅ घोॅर आवी गेलै।

घोॅर भरी में सन्नाटा। मजकि कहिया तांय बात दबलोॅ रहेॅ पारै छेलै। गाँव के सब जोॅर-जनानी जुटेॅ लागलै। मरद के उप-सुप अलगे।

ऐंगन में सौ-पचास जनानी के झुण्ड। सबके चेहरा पर एक्के सवाल—आखिर की होलै बसन्ता कनियैनी के ? कहाँ जाबेॅ पारेॅ ?

तखनिये मधुरिया माय खाड़ी होय केॅ मुखिया नाँखी फैसला सुनैलकी, ''सुनोॅ बसन्ता माय, आबेॅ तोहें आपनी कनियैनी के मोह छोड़ी दा। ऊ तोरोॅ कनियैन छेवो नै करलौं, नै बसन्ता के जनानी। ऊ तेॅ आरो के जनानी छेलै, जेकरोॅ पास ऊ रातो-रात पहुँची गेलोॅ छै। ओकरोॅ खोज-खबर लेवोॅ भारी बदनामी के सिवा आरो कुछ नै । आबेॅ

ई बच्चा के पालन-पोषण लेली यहेॅ अच्छा होतौं कि बसन्ता के बीहा करी दौ।''

बसन्ता आरो बसन्ता माय के मुँहोॅ पर तेॅ जेना ताला जड़ी गेलै आरो दुसरोॅ जनानी सिनी काना-फूसी करतें ऐंगनोॅ सें बाहर निकली गेलै।

■■

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.

जन्म स्थान : भागलपुर

माता का नाम : जीवनलता पूर्वे

पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे

शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी

प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित

संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित

सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर) ५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ६. केकरों चाँद केन्हों चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), ३. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ४. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ५. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), ६. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ७. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ८. शिशिर की धूप (कविता संग्रह), ९. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), १०. ताँका शतक, ११. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास)

सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)